



MATS
UNIVERSITY

NAAC
GRADE **A+**
ACCREDITED UNIVERSITY

MATS CENTRE FOR DISTANCE & ONLINE EDUCATION

संचार एवं इलेक्ट्रानिक प्रौद्योगिकी

मास्टर ऑफ़ आर्ट्स - हिन्दी
द्वितीय सेमेस्टर



SELF LEARNING MATERIAL

COURSE DEVELOPMENT EXPERT COMMITTEE

1. Prof. (Dr.) Reshma Ansari, HOD, School of Arts and Humanities, Hindi Department, MATS University, Raipur, Chhattisgarh.
 2. Dr. Sudhir Sharma, Subject Expert, HOD Hindi Department, Kalyan College, Bhilai, Chhattisgarh.
 3. Dr. Kamlesh Gogia, Associate Professor, School of Arts and Humanities, Hindi Department, MATS University, Raipur, Chhattisgarh.
 4. Dr. Sunita Shashikant Tiwari, Associate Professor, School of Arts and Humanities, Hindi Department, MATS University, Raipur, Chhattisgarh.
 5. Dr. Rajesh Kumar Dubey, Subject Expert, principal Shahid Rajiv Pndey Govt. College, Bhatagouan, Raipur Chhattisgarh.
-

COURSE COORDINATOR

Prof. (Dr.) Reshma Ansari, HOD, School of Arts and Humanities, Hindi Department, MATS University, Raipur, Chhattisgarh.

COURSE /BLOCK PREPARATION

Dr. Dr. Reshma Ansari
HOD, School of Arts and
Humanities, Hindi
Department, MATS
University, Raipur,
Chhattisgarh.

March, 2025

@MATS Centre for Distance and Online Education, MATS University, Village- Gullu, Aarang, Raipur- (Chhattisgarh)

All rights reserved. No part of this work may be reproduced, transmitted or utilized or stored in any form by mimeograph or any other means without permission in writing from MATS University, Village- Gullu, Aarang, Raipur-(Chhattisgarh)

Printed & published on behalf of MATS University, Village-Gullu, Aarang, Raipur by Mr. Meghanadhu Katabathuni, Facilities & Operations, MATS University, Raipur (C.G.)

Disclaimer: The publisher of this printing material is not responsible for any error or dispute from the contents of this course material, this completely depends on the AUTHOR'S MANUSCRIPT.
Printed at: The Digital Press, Krishna Complex, Raipur-492001(Chhattisgarh)

Acknowledgement

The material (pictures and passages) we have used is purely for educational purposes. Every effort has been made to trace the copyright holders of material reproduced in this book. Should any infringement have occurred, the publishers and editors apologize and will be pleased to make the necessary corrections in future editions of thisbook.



संचार एवं इलेक्ट्रानिक प्रौद्योगिकी

MODULE NAME		PAGE NUMBER
	मॉड्यूल – 1 संचार का स्वरूप	
इकाई: 1.1	संचार: अर्थ, परिभाषाएँ और महत्व	1-15
इकाई: 1.2	संचार की प्रक्रिया और मॉडल	16-22
इकाई: 1.3	संचार के प्रकार: व्यक्तिपरक, समूह, संगठनात्मक और जनसंचार	23-28
इकाई: 1.4	संचार बाधाएँ एवं माध्यम	29-43
	मॉड्यूल 2 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया	
इकाई: 2.1	इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की परिभाषा और स्वरूप	44-49
इकाई: 2.2	पत्रकारिता और समाज में इसकी भूमिका	50-66
इकाई: 2.3	इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की संभावनाएँ और चुनौतियाँ	67-78
	मॉड्यूल 3 आकाशवाणी	
इकाई: 3.1	आकाशवाणी का उद्भव और ऐतिहासिक विकास	79-83
इकाई: 3.2	समाचार, नाटक, वार्ता और कार्यक्रमों की शैली	84-103
इकाई: 3.3	आदिकालीन साहित्यिक परंपराएँ	104-110
इकाई: 3.4	प्रमुख रासो काव्य और उनकी प्रमाणिकता	110-113
	मॉड्यूल 4 दूरदर्शन	
इकाई: 4.1	दूरदर्शन का उद्भव और विकास	114-118
इकाई: 4.2	समाचार और मनोरंजन कार्यक्रमों की प्रस्तुति	119-122
इकाई: 4.3	दूरदर्शन का लोकतंत्र और शिक्षा में योगदान	123-139
	मॉड्यूल 5 विविध इलेक्ट्रॉनिक माध्यम	
इकाई: 5.1	एफ.एम. रेडियो: उद्भव, स्वरूप और महत्व	140-154
इकाई: 5.2	सामुदायिक रेडियो: विशेषताएँ और भूमिका	155-172
इकाई: 5.3	फिल्म और डॉक्यूमेंट्री: पत्रकारिता में स्थान और उपयोग	173-191
इकाई: 5.4	नवीन तकनीक: डिजिटल मीडिया, इंटरनेट और मोबाइल पत्रकारिता का समावेश	192-203

मॉड्यूल - 1

संचार का स्वरूप

संरचना

इकाई - 1.1: संचार: अर्थ, परिभाषाएँ और महत्व

इकाई - 1.2: संचार की प्रक्रिया और मॉडल

इकाई - 1.3: संचार के प्रकार: व्यक्तिपरक, समूह, संगठनात्मक और जनसंचार

इकाई - 1.4: संचार बाधाएँ एवं माध्यम

1.0 उद्देश्य:

- संचार की मूल अवधारणा, अर्थ, परिभाषा और इसके विकासशील स्वरूप का व्यवस्थित अध्ययन करना।
- संचार प्रक्रिया, तत्वों और प्रमुख मॉडलों की संरचना एवं उपयोगिता को स्पष्ट रूप से समझना।
- व्यक्तिपरक, अंतर्व्यक्तिक, समूह, संगठनात्मक और जनसंचार जैसे विभिन्न प्रकारों का तुलनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना।
- भौतिक, भाषाई, मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक बाधाओं की पहचान तथा समाधान की रणनीतियाँ स्पष्ट करना।
- प्रभावी संचार कौशल के व्यावहारिक प्रयोग को सामाजिक, शैक्षिक और व्यावसायिक परिप्रेक्ष्य से जोड़ना।

इकाई - 1.1: संचार: अर्थ, परिभाषाएँ और महत्व

1.1.1 संचार का अर्थ और स्वरूप

संचार मानव सभ्यता की आधारशिला है और इसे मानव व्यवहार का सबसे आवश्यक तत्व माना जाता है। यह सिर्फ सूचनाओं का आदान-प्रदान नहीं है, बल्कि विचारों, भावनाओं, अनुभवों और अर्थों को साझा करने की एक जटिल, गतिशील और सार्वभौमिक प्रक्रिया है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

संचार की अवधारणा

'संचार' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के शब्द '**Communicare**' से हुई है, जिसका अर्थ है 'साझा करना' (To Share) या 'सामान्य बनाना' (To make common)। यह व्युत्पत्ति स्वयं यह इंगित करती है कि संचार का केंद्रीय विचार सूचना या विचार को दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच 'सामान्य' बनाना है, ताकि वे एक ही अर्थ को समझ सकें। संचार एक ऐसी प्रक्रिया है जहाँ एक व्यक्ति (या समूह) दूसरे व्यक्ति (या समूह) को प्रतीक, संकेत या भाषा के माध्यम से एक विचार या अर्थ हस्तांतरित करता है। यह प्रक्रिया एकतरफा न होकर द्विदिशात्मक (Two-way) और चक्रीय (Cyclical) होती है। इसका लक्ष्य केवल संदेश भेजना नहीं, बल्कि प्राप्तकर्ता द्वारा संदेश को उसी अर्थ में समझना भी है, जिस अर्थ में प्रेषक ने उसे भेजा था।

संचार का मौलिक स्वरूप:

1. **गत्यात्मकता (Dynamism):** संचार स्थिर नहीं होता; यह लगातार बदलता रहता है। प्रेषक और प्राप्तकर्ता की मनोदशा, संदर्भ (Context) और वातावरण हर पल संचार की गुणवत्ता को प्रभावित करते हैं।
2. **सर्वव्यापकता (Pervasiveness):** संचार हर जगह मौजूद है। यह व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक और व्यावसायिक—जीवन के हर क्षेत्र का एक अनिवार्य हिस्सा है।
3. **निरंतरता (Continuity):** मनुष्य जन्म से लेकर मृत्यु तक लगातार संचार करता है। निष्क्रिय रहना भी एक प्रकार का संचार माना जाता है (जैसे, मौन रहना, जो अस्वीकृति या सहमति का संकेत दे सकता है)।
4. **प्रतीकात्मकता (Symbolism):** संचार भाषा (शब्द), शारीरिक हावभाव (गैर-मौखिक), चित्र, या ध्वनि जैसे प्रतीकों का उपयोग करके होता है। ये प्रतीक ही विचारों को मूर्त रूप देते हैं।
5. **उद्देश्यपूर्णता (Purposiveness):** प्रत्येक संचार के पीछे एक विशिष्ट उद्देश्य होता है—चाहे वह सूचित करना हो, प्रभावित करना हो, मनोरंजन करना हो, या संबंध स्थापित करना हो।

2. संचार प्रक्रिया के अनिवार्य तत्व और उनका विस्तृत विश्लेषण

प्रभावी संचार एक व्यवस्थित प्रक्रिया के माध्यम से होता है जिसमें कई अनिवार्य तत्व (Elements) एक-दूसरे पर निर्भर करते हुए कार्य करते हैं। ये तत्व एक चक्रीय मॉडल का निर्माण करते हैं, जो हमें यह समझने में मदद करता है कि संदेश कैसे प्रसारित, संसाधित और समझा जाता है।

तत्व	विवरण
प्रेषक	वह व्यक्ति जो संचार प्रक्रिया शुरू करता है। यह विचार, भावना, या सूचना का मूल स्रोत होता है।
विचार/संदेश	वह सामग्री से प्रेषक प्राप्तकर्ता तक पहुँचाना चाहता है। यह शाब्दिक या अशाब्दिक हो सकता है।
एन्कोडिंग	प्रेषक द्वारा अपने विचार को प्रतीकों, शब्दों, संकेतों या हावभाव (भाषा) में बदलने की प्रक्रिया, ताकि इसे प्रसारित किया जा सके।
माध्यम/चैनल	वह मार्ग या साधन जिसके माध्यम से संदेश प्रेषक से प्राप्तकर्ता तक यात्रा करता है (जैसे: बोलना, लिखना, ईमेल, फ़ोन, वीडियो)।
डिकोडिंग	प्राप्तकर्ता द्वारा संदेश में निहित प्रतीकों और संकेतों की व्याख्या करने और उनके अर्थ को समझने की प्रक्रिया। यह एन्कोडिंग की विपरीत प्रक्रिया है।
प्राप्तकर्ता	वह व्यक्ति या समूह जिसके लिए संदेश भेजा गया है। इसका मुख्य कार्य संदेश को डिकोड करना और उसका अर्थ समझना है।
फीडबैक/प्रतिपुष्टि	प्राप्तकर्ता द्वारा प्रेषक को भेजा गया उत्तर या प्रतिक्रिया, जो यह दर्शाता है कि संदेश को किस हद तक समझा गया है। यह संचार चक्र को पूरा करता है।
शोर/बाधाएँ	कोई भी तत्व जो संचार प्रक्रिया में व्यवधान डालता है या संदेश की सटीकता को विकृत करता है (जैसे: भौतिक शोर, अस्पष्ट भाषा, ध्यान भंग होना)।
संदर्भ	वह वातावरण, परिस्थिति या पृष्ठभूमि जिसमें संचार होता है। इसमें सांस्कृतिक, सामाजिक, और ऐतिहासिक कारक शामिल होते हैं।

प्रमुख संचार सिद्धांतकारों द्वारा प्रतिपादित परिभाषाओं का समालोचनात्मक अध्ययन



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

विभिन्न विद्वानों और सिद्धांतकारों ने संचार की जटिल प्रक्रिया को अपने-अपने दृष्टिकोण से परिभाषित किया है। इन परिभाषाओं का अध्ययन संचार के विभिन्न आयामों को समझने में मदद करता है।

महत्वपूर्ण परिभाषाओं का विश्लेषण

1. विलबर श्रेम (Wilbur Schramm, 1954):

- **परिभाषा:** "संचार अनिवार्य रूप से सूचना, विचार और दृष्टिकोण को साझा करने की प्रक्रिया है।"
- **समालोचना:** श्रेम ने संचार को 'साझाकरण' पर केंद्रित किया, जिसमें प्रेषक और प्राप्तकर्ता दोनों की सक्रिय भागीदारी आवश्यक है। उन्होंने 'अर्थ के साझा क्षेत्र' (Field of Shared Experience) की अवधारणा दी, जो बताती है कि प्रभावी संचार के लिए प्रेषक और प्राप्तकर्ता के अनुभव और पृष्ठभूमि का एक-दूसरे से मेल खाना आवश्यक है। यह परिभाषा संचार को एक सामाजिक प्रक्रिया के रूप में स्थापित करती है।

2. चार्ल्स एच. कूले (Charles H. Cooley):

- **परिभाषा:** "संचार वह तंत्र है जिसके माध्यम से मानवीय संबंध अस्तित्व में आते हैं और विकसित होते हैं। इसमें मन के प्रतीक और साधनों को शामिल किया जाता है, जिन्हें स्थान पर फैलाया जाता है और समय पर सुरक्षित रखा जाता है।"
- **समालोचना:** कूले की परिभाषा संचार को सामाजिक और व्यक्तिगत विकास के लिए एक आवश्यक 'तंत्र' मानती है। यह स्पष्ट करती है कि संचार केवल तात्कालिक लेनदेन नहीं है, बल्कि यह वह नींव है जिस पर समाज और संस्कृति का निर्माण होता है।

3. एफ.जी. मेयर (F.G. Meyer):

- **परिभाषा:** "संचार एक ऐसा कार्य है जिसके द्वारा किसी व्यक्ति के मन में एक विचार इस प्रकार से स्थानांतरित किया जाता है कि वह दूसरे व्यक्ति के मन में उसी विचार को उत्पन्न कर दे।"
- **समालोचना:** यह परिभाषा **अर्थ की सटीकता (Fidelity of Meaning)** पर जोर देती है। यह एक उच्च आदर्श है, क्योंकि शोर और व्यक्तिगत व्याख्या के कारण 'उसी विचार' को उत्पन्न करना हमेशा संभव नहीं होता। हालांकि, यह प्रभावी संचार के अंतिम लक्ष्य को स्पष्ट रूप से स्थापित करती है।

4. **सी.आर. बर्लसन और जी.ए. स्टीनर (Berelson and Steiner, 1964):**
 - **परिभाषा:** "संचार सूचनाओं, विचारों, भावनाओं और कौशल के हस्तांतरण की प्रक्रिया है, जो प्रतीकों, शब्दों, चित्रों, आंकड़ों और हावभावों का उपयोग करती है।"
 - **समालोचना:** यह परिभाषा संचार की विषय-वस्तु (सूचना, विचार, भावनाएँ, कौशल) के दायरे को विस्तृत करती है और उपयोग किए जाने वाले माध्यमों (शाब्दिक और अशाब्दिक) की विविधता को भी स्वीकार करती है। यह व्यावहारिक और शैक्षणिक दोनों दृष्टिकोण से व्यापक मानी जाती है।
5. **हेराल्ड डी. लासवेल (Harold D. Lasswell, 1948):**
 - **परिभाषा:** लासवेल ने संचार को एक प्रश्न-आधारित मॉडल के रूप में संक्षेपित किया: **"कौन (Who) क्या (Says What) किस चैनल में (In Which Channel) किसे (To Whom) क्या प्रभाव (With What Effect) डालता है?"**
 - **समालोचना:** लासवेल का मॉडल (Lasswell's Model) संचार अनुसंधान के लिए एक आधारशिला है। यह सरल होते हुए भी संचार के मुख्य तत्वों (प्रेषक, संदेश, माध्यम, प्राप्तकर्ता, प्रभाव) को स्पष्ट करता है और इस बात पर जोर देता है कि संचार का अध्ययन उसके प्रभाव को समझे बिना अधूरा है।

निष्कर्ष: इन परिभाषाओं का समालोचनात्मक अध्ययन यह दर्शाता है कि संचार एक उद्देश्यपूर्ण, प्रतीकात्मक और द्विदिशात्मक प्रक्रिया है जिसका अंतिम लक्ष्य 'अर्थ को साझा करना' (Sharing of Meaning) और सामाजिक या व्यावसायिक संबंध स्थापित करना है।

संचार के विविध प्रकार: औपचारिक, अनौपचारिक और दिशा-आधारित वर्गीकरण

संचार को विभिन्न आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है, जो इस बात पर निर्भर करता है कि संदेश कैसे प्रसारित होता है, किस माध्यम का उपयोग किया जाता है, और संगठन के भीतर उसकी दिशा क्या है।



संबंध के आधार पर वर्गीकरण

1. औपचारिक संचार:

औपचारिक संचार वह प्रक्रिया है जो संगठन के पदानुक्रम और नियमों के अनुसार स्थापित आधिकारिक चैनलों के माध्यम से होती है। यह संचार प्रणाली संरचित और नियंत्रित होती है, जिससे सूचना का प्रवाह स्पष्ट और व्यवस्थित रहता है। औपचारिक संचार में अक्सर लिखित माध्यमों का उपयोग अधिक होता है, जैसे कि ईमेल, ज्ञापन, रिपोर्ट, नोटिस और सर्कुलर। इसके माध्यम से सूचना का रिकॉर्ड रखा जा सकता है और जरूरत पड़ने पर इसे प्रमाण के रूप में प्रस्तुत किया जा सकता है। यह संचार धीमा हो सकता है क्योंकि इसे तय प्रक्रिया और अनुमोदन के चरणों से गुजरना पड़ता है, लेकिन इसके बावजूद यह विश्वसनीय और आधिकारिक माना जाता है। उदाहरण के लिए, किसी संगठन में सीईओ द्वारा कर्मचारियों को जारी किया गया सर्कुलर, या विभाग प्रमुख द्वारा अधीनस्थ कर्मचारियों को दिए गए निर्देश औपचारिक संचार के अंतर्गत आते हैं। औपचारिक संचार संगठन में स्पष्ट भूमिकाओं और जिम्मेदारियों को स्थापित करने में मदद करता है और यह सुनिश्चित करता है कि सभी कर्मचारियों तक महत्वपूर्ण सूचना सही और समय पर पहुँचे।

2. अनौपचारिक संचार:

अनौपचारिक संचार, जिसे 'ग्रेपवाइन' संचार भी कहा जाता है, मुख्यतः व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों पर आधारित होता है। यह संगठन की औपचारिक संरचना या पदानुक्रम से स्वतंत्र होता है। अनौपचारिक संचार की सबसे बड़ी विशेषता इसकी तीव्र गति और लचीलापन है। यह अक्सर मौखिक माध्यमों द्वारा होता है और इसमें अफवाहें, विचार-विमर्श और व्यक्तिगत बातचीत शामिल हो सकती हैं। इसकी विश्वसनीयता औपचारिक संचार की तुलना में कम हो सकती है, लेकिन यह कर्मचारियों के बीच सामाजिक संबंधों को मजबूत करने और संगठन में सूचनाओं के त्वरित प्रवाह में सहायक होता है। उदाहरण के लिए, लंच ब्रेक या कॉफी ब्रेक के

दौरान सहकर्मियों के बीच होने वाली बातचीत, ऑफिस की गपशप या विचार साझा करना अनौपचारिक संचार के उदाहरण हैं। औपचारिक और अनौपचारिक संचार दोनों ही संगठन के सुचारू संचालन और कर्मचारियों के बीच संपर्क बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं। जबकि औपचारिक संचार संरचना और नियंत्रण पर आधारित है, अनौपचारिक संचार संगठन में सहजता और सामाजिक समन्वय को बढ़ावा देता है।

दिशा के आधार पर वर्गीकरण

1. ऊर्ध्वगामी संचार:

- यह अधीनस्थों से वरिष्ठों तक जाता है (नीचे से ऊपर)।
- **उद्देश्य:** फीडबैक, शिकायतें, सुझाव, प्रगति रिपोर्ट, या समस्याओं की जानकारी देना।

2. अधोगामी संचार:

- यह वरिष्ठों से अधीनस्थों तक जाता है (ऊपर से नीचे)।
- **उद्देश्य:** निर्देश देना, नीतियाँ समझाना, लक्ष्य निर्धारित करना, या काम सौंपना।

3. क्षैतिज संचार:

- यह समान स्तर या पद पर कार्यरत व्यक्तियों या विभागों के बीच होता है।
- **उद्देश्य:** समन्वय, जानकारी साझा करना और समस्याओं को सुलझाना।

4. विकर्णीय संचार:

- यह विभिन्न स्तरों और विभिन्न विभागों के कर्मचारियों के बीच होता है।
- **उद्देश्य:** क्रॉस-फंक्शनल टीमों में तालमेल बिठाना, जैसे कि मार्केटिंग टीम का कोई जूनियर सदस्य प्रोडक्शन मैनेजर से सीधे संपर्क करे।

प्रभावी संचार की विशेषताएँ (7 C's) और इसके मुख्य उद्देश्य

संचार केवल संदेश भेजने की क्रिया नहीं है; इसे प्रभावी होना चाहिए। प्रभावी संचार तब होता है जब प्राप्तकर्ता उसी अर्थ को समझता है जो प्रेषक का इरादा था। इसकी गुणवत्ता सुनिश्चित करने के लिए '7 C's' के रूप में जाने जाने वाले सिद्धांतों का पालन किया जाता है।

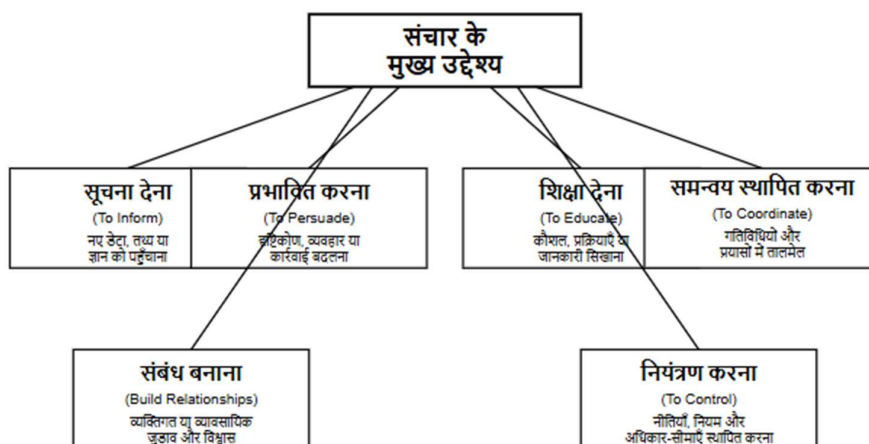


प्रभावी संचार के 7 C's

1. **पूर्णता:** संदेश में सभी आवश्यक जानकारी शामिल होनी चाहिए। अधूरा संदेश प्राप्तकर्ता को भ्रमित कर सकता है या उसे अनुमान लगाने के लिए मजबूर कर सकता है।
2. **संक्षिप्तता:** संदेश संक्षिप्त और सारगर्भित होना चाहिए। अनावश्यक शब्दों और वाक्यों से बचना चाहिए, ताकि समय की बचत हो सके और ध्यान केंद्रित रहे।
3. **स्पष्टता:** संदेश को सरल, स्पष्ट भाषा और विशिष्ट शब्दों का उपयोग करना चाहिए। प्रेषक को पता होना चाहिए कि वह क्या कहना चाहता है। अस्पष्टता से बचें।
4. **सत्यता/शुद्धता:** संदेश व्याकरण, वर्तनी और तथ्यात्मक रूप से सही होना चाहिए। गलतियाँ विश्वसनीयता को कम करती हैं।
5. **ठोसता:** संदेश अस्पष्ट विचारों के बजाय ठोस तथ्यों और आंकड़ों पर आधारित होना चाहिए। यह प्राप्तकर्ता को एक स्पष्ट और विश्वसनीय छवि प्रदान करता है।
6. **शिष्टता:** संदेश विनम्र, सम्मानजनक और विचारशील होना चाहिए। 'आप' दृष्टिकोण का उपयोग करें और नकारात्मक शब्दों से बचें।
7. **विचारशीलता:** संदेश को प्राप्तकर्ता की पृष्ठभूमि, शिक्षा स्तर, भावनात्मक स्थिति और ज्ञान को ध्यान में रखकर तैयार किया जाना चाहिए।

संचार के मुख्य उद्देश्य

- **सूचना देना:** मुख्य उद्देश्य नए डेटा, तथ्य या ज्ञान को किसी अन्य व्यक्ति या समूह तक पहुँचाना होता है।
- **प्रभावित करना/प्रेरित करना:** प्राप्तकर्ता के दृष्टिकोण, व्यवहार या कार्यवाही को बदलना। विज्ञापन, मार्केटिंग और नेतृत्व संचार का यही उद्देश्य होता है।
- **शिक्षा देना:** कौशल, प्रक्रियाएँ, या जटिल जानकारी व्यवस्थित तरीके से सिखाना।
- **समन्वय स्थापित करना:** विभिन्न व्यक्तियों, टीमों या विभागों के बीच गतिविधियों और प्रयासों में तालमेल बिठाना।
- **संबंध बनाना:** व्यक्तिगत या व्यावसायिक जुड़ाव और विश्वास विकसित करना।



संचार के मुख्य उद्देश्य

व्यक्तिगत जीवन में संचार का गहन मनोवैज्ञानिक और भावनात्मक महत्व

व्यक्तिगत जीवन में संचार केवल जरूरतों को पूरा करने का माध्यम नहीं है, बल्कि यह मानव के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य, भावनात्मक स्थिरता और आत्म-पहचान के निर्माण के लिए अपरिहार्य है।

मनोवैज्ञानिक आवश्यकता की पूर्ति

मानव एक सामाजिक प्राणी है, और मनोवैज्ञानिक रूप से वह जुड़ने और संबंधित होने की इच्छा रखता है। संचार इस आवश्यकता को पूरा करता है:

- **भावनात्मक अभिव्यक्ति:** संचार भावनाओं, डर, खुशी और तनाव को व्यक्त करने का प्राथमिक साधन है। विचारों और भावनाओं को व्यक्त करने से तनाव कम होता है और मानसिक स्वास्थ्य बेहतर होता है।
- **आत्म-पुष्टि और आत्म-पहचान:** हम दूसरों के साथ बातचीत के माध्यम से खुद को समझते हैं। जब कोई व्यक्ति हमारी बात सुनता है और प्रतिक्रिया देता है, तो हमारी आत्म-धारणा मजबूत होती है। संचार एक दर्पण के रूप में कार्य करता है।
- **संघर्ष समाधान:** व्यक्तिगत संबंधों में, संचार ही वह उपकरण है जिसके द्वारा गलतफहमियों को दूर किया जाता है और मतभेदों को सौहार्दपूर्ण ढंग से सुलझाया जाता है। मौन या अपर्याप्त संचार संघर्षों को बढ़ाता है।



संबंधों का निर्माण और रखरखाव

- **विश्वास की नींव:** खुले और ईमानदार संचार के माध्यम से ही व्यक्तिगत संबंधों (परिवार, दोस्ती, रोमांटिक संबंध) में विश्वास पैदा होता है। संवाद की गुणवत्ता ही संबंध की गुणवत्ता निर्धारित करती है।
- **सहानुभूति और समझ:** प्रभावी व्यक्तिगत संचार में केवल बोलना ही नहीं, बल्कि सक्रिय श्रवण भी शामिल है। यह हमें दूसरे व्यक्ति के दृष्टिकोण को समझने और उनके प्रति सहानुभूति विकसित करने में मदद करता है।
- **सामाजिक कौशल विकास:** बचपन से ही, संचार हमें सामाजिक मानदंडों और व्यवहार के तरीके सिखाता है। यह सामाजिक बुद्धिमत्ता का आधार है।

सामाजिक सद्भाव और सामुदायिक विकास में संचार की भूमिका

एक स्वस्थ समाज और विकसित समुदाय के लिए संचार एक जीवन रेखा के रूप में कार्य करता है। यह सामाजिक (सामंजस्य) को बढ़ावा देता है, नागरिकों को सशक्त बनाता है और लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं को मजबूत करता है।

सामाजिक समरूपता और सांस्कृतिक प्रसारण

- **एकजुटता:** साझा भाषा, मीडिया और कहानियों के माध्यम से संचार एक समाज के सदस्यों को एक साझा पहचान और सामूहिक चेतना प्रदान करता है, जिससे सामाजिक सद्भाव बना रहता है।
- **मूल्यों का हस्तांतरण:** संचार के माध्यम से ही एक पीढ़ी अपने सांस्कृतिक मूल्यों, परंपराओं और इतिहास को अगली पीढ़ी तक पहुँचाती है। यह संस्कृति को बनाए रखने का प्राथमिक साधन है।
- **जनमत निर्माण:** मीडिया, सोशल मीडिया और सार्वजनिक चर्चाएँ जनमत को आकार देती हैं। प्रभावी सार्वजनिक संचार ही नागरिकों को सूचित निर्णय लेने और लोकतांत्रिक प्रक्रिया में भाग लेने में सक्षम बनाता है।

सामुदायिक सशक्तिकरण और विकास

- **सामुदायिक भागीदारी:** सामुदायिक संचार चैनल (जैसे ग्राम सभाएँ, स्थानीय समाचार पत्र, सामुदायिक रेडियो) लोगों को स्थानीय समस्याओं पर चर्चा करने और समाधान विकसित करने के लिए एक मंच प्रदान करते हैं। यह भागीदारी विकास परियोजनाओं की सफलता के लिए महत्वपूर्ण है।
- **ज्ञान का प्रसार:** स्वास्थ्य, शिक्षा, कृषि और आपदा प्रबंधन से संबंधित महत्वपूर्ण जानकारी का प्रसार संचार के माध्यम से होता है। यह समुदायों को चुनौतियों का सामना करने के लिए तैयार करता है।
- **सामाजिक परिवर्तन:** सामाजिक आंदोलनों और सुधारों की शुरुआत हमेशा एक विचार के संचार से होती है। चाहे वह साक्षरता अभियान हो या पर्यावरण संरक्षण, संचार ही लोगों को प्रेरित करता है और बड़े पैमाने पर परिवर्तन लाता है।

व्यावसायिक और संगठनात्मक सफलता हेतु संचार की अपरिहार्यता

आधुनिक व्यावसायिक वातावरण में, संचार को केवल एक 'सॉफ्ट स्किल' के रूप में नहीं, बल्कि रणनीतिक सफलता के लिए एक 'क्रिटिकल स्किल' के रूप में देखा जाता है। किसी भी संगठन की उत्पादकता, कार्यबल का मनोबल और बाजार में उसकी स्थिति सीधे तौर पर उसके आंतरिक और बाहरी संचार की गुणवत्ता पर निर्भर करती है।

संगठनात्मक प्रदर्शन और उत्पादकता में महत्व

1. **सफल निर्णय-निर्माण:** किसी भी अच्छे निर्णय को लेने के लिए सही समय पर, सही जानकारी की आवश्यकता होती है। प्रभावी संचार यह सुनिश्चित करता है कि सभी प्रासंगिक डेटा (मार्केट रिसर्च, वित्तीय रिपोर्ट, कर्मचारी फीडबैक) निर्णय निर्माताओं तक समय पर पहुँचे।
2. **प्रेरणा और मनोबल:** जब कर्मचारियों को पता होता है कि संगठन में उनके काम का महत्व है और उन्हें उनके प्रदर्शन के बारे में स्पष्ट फीडबैक मिलता है, तो उनका मनोबल ऊँचा रहता है। पारदर्शी संचार कर्मचारियों को प्रेरित करता है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

3. **समस्या समाधान:** समस्याओं की पहचान, उनके कारणों का विश्लेषण और समाधानों के मूल्यांकन के लिए विभिन्न हितधारकों के बीच खुले संवाद की आवश्यकता होती है। संचार एक साझा समस्या-समाधान मंच प्रदान करता है।
4. **प्रबंधन नियंत्रण:** संचार प्रबंधन को लक्ष्यों को निर्धारित करने, मानकों को संप्रेषित करने और प्रदर्शन को मापने की अनुमति देता है, जिससे संगठन अपने लक्ष्यों की ओर अग्रसर रहता है।

बाहरी हितधारकों के साथ संबंध

- **ग्राहक संबंध:** प्रभावी संचार ग्राहकों की जरूरतों को समझने, उनकी शिकायतों का समाधान करने और उन्हें कंपनी के उत्पादों और सेवाओं के बारे में सूचित करने के लिए आवश्यक है। यह ग्राहकों की वफादारी बनाता है।
- **निवेशक संबंध:** वित्तीय रिपोर्ट, वार्षिक बैठकें और प्रेस विज्ञप्तियाँ निवेशकों के विश्वास को बनाए रखने और संगठन की वित्तीय स्थिरता के बारे में सूचित करने के लिए महत्वपूर्ण हैं।
- **सार्वजनिक छवि:** संकट के समय या सामान्य तौर पर ब्रांडिंग के दौरान, एक सुसंगत और सकारात्मक संदेश कंपनी की प्रतिष्ठा को बढ़ाता है और बाजार में एक मजबूत छवि बनाता है।

संचार की बाधाएँ और उन्हें दूर करने के उपाय

संचार प्रक्रिया में कोई भी व्यवधान या विकृति जो संदेश के मूल अर्थ को बदलने या उसे समझने में कठिनाई पैदा करने का कारण बनती है, उसे बाधा या 'शोर' (Noise) कहा जाता है। इन बाधाओं को पहचानना और उन्हें दूर करना प्रभावी संचार के लिए अत्यंत आवश्यक है।

संचार की प्रमुख बाधाएँ

1. **भौतिक या पर्यावरणीय बाधाएँ:**
 - **उदाहरण:** तेज़ आवाज़ (मशीनरी का शोर), खराब टेलीफोन कनेक्शन, लंबी दूरी, खराब प्रकाश व्यवस्था या अत्यधिक गर्मी/ठंड।

- **प्रभाव:** संदेश को सुनना या देखना असंभव हो जाता है।
- 2. **शब्दार्थ या भाषा संबंधी बाधाएँ:**
 - **उदाहरण:** अस्पष्ट या तकनीकी शब्दावली, शब्दों के एकाधिक अर्थ, अनुवाद की गलतियाँ, प्रेषक और प्राप्तकर्ता के बीच भाषा की समझ का अंतर।
 - **प्रभाव:** संदेश का अर्थ गलत समझा जाता है।
- 3. **मनोवैज्ञानिक या भावनात्मक बाधाएँ:**
 - **उदाहरण:** पूर्वग्रह, बंद दिमाग, डर, गुस्सा, संदेश के प्रति अपर्याप्त ध्यान, सक्रिय रूप से सुनने की कमी।
 - **प्रभाव:** प्राप्तकर्ता संदेश को अपनी भावनाओं और विश्वासों के माध्यम से फ़िल्टर करता है।
- 4. **संगठनात्मक बाधाएँ:**
 - **उदाहरण:** अत्यधिक पदानुक्रम, अस्पष्ट अधिकार-क्षेत्र, सख्त नियम और नीतियाँ जो फीडबैक को रोकते हैं।
 - **प्रभाव:** संचार धीमा हो जाता है, विकृत हो जाता है, या महत्वपूर्ण जानकारी उच्च अधिकारियों तक नहीं पहुँच पाती।
- 5. **सांस्कृतिक बाधाएँ:**
 - **उदाहरण:** विभिन्न संस्कृतियों में हावभाव, आँखों से संपर्क, समय और रंग प्रतीकों का अलग-अलग अर्थ होना।
 - **प्रभाव:** एक संस्कृति में सामान्य व्यवहार दूसरे में आक्रामक या अपमानजनक माना जा सकता है।

बाधाओं को दूर करने के उपाय

- **फीडबैक को प्रोत्साहित करना:** प्राप्तकर्ता को प्रश्न पूछने और प्रतिक्रिया देने के लिए प्रोत्साहित करें।
- **सरल भाषा का प्रयोग:** ऐसी भाषा का उपयोग करें जो प्राप्तकर्ता के लिए आसान हो। तकनीकी शब्दों से बचें या उन्हें समझाएँ।
- **सक्रिय श्रवण का अभ्यास:** प्रेषक के संदेश पर पूरा ध्यान दें, बीच में न काटें, और समझने के लिए प्रश्न पूछें।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

- **माध्यम का उचित चयन:** संदेश की प्रकृति के अनुसार सही चैनल चुनें (जैसे, संवेदनशील जानकारी के लिए ईमेल के बजाय आमने-सामने की बैठक)।
- **शोर को कम करना:** भौतिक वातावरण को शांत और आरामदायक बनाएँ।

समकालीन परिदृश्य में संचार की बदलती प्रवृत्तियाँ और भविष्य की दिशा

पिछले दो दशकों में डिजिटल क्रांति ने संचार के तरीके और स्वरूप को मौलिक रूप से बदल दिया है। संचार अब केवल इंटरपर्सनल या मास मीडिया तक सीमित नहीं है, बल्कि एक जटिल, बहुआयामी नेटवर्क बन गया है।

डिजिटल संचार की प्रवृत्तियाँ

1. **सोशल मीडिया का उदय:** फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म ने संचार को तत्काल और वैश्विक बना दिया है। प्रत्येक व्यक्ति अब एक संदेश का प्रेषक भी बन सकता है, जिससे 'गेटकीपिंग' की पारंपरिक अवधारणा कमजोर हुई है।
2. **अति-व्यक्तिगतीकरण:** डेटा एनालिटिक्स और एआई (AI) के कारण संचार को व्यक्तिगत रुचियों और व्यवहार के अनुरूप ढाला जा रहा है, जिससे लक्षित विज्ञापन और सामग्री का वितरण संभव हो पाया है।
3. **अशाब्दिक प्रतीकों का प्रभुत्व:** इमोजी, जीआईएफ और मीम्स अब डिजिटल संचार में भावनाओं और विचारों को व्यक्त करने के लिए आवश्यक अशाब्दिक प्रतीकों के रूप में उभरे हैं।
4. **वास्तविक समय और अतुल्यकालिक संचार:** वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग (ज़ूम/मीट) वास्तविक समय में जुड़ने की अनुमति देती है, जबकि ईमेल और मैसेजिंग अतुल्यकालिक (जब प्रेषक और प्राप्तकर्ता एक ही समय में उपस्थित न हों) संचार को आसान बनाते हैं।
5. **इंटरैक्टिविटी:** पारंपरिक मास मीडिया एकतरफा था, लेकिन डिजिटल संचार द्विदिशात्मक और अत्यधिक इंटरैक्टिव है, जहाँ फीडबैक तत्काल और सार्वजनिक होता है।

भविष्य की दिशा

- **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का प्रभाव:** एआई लेखन सहायकों, चैटबॉट्स, और एआई-जनरेटेड सामग्री के कारण भविष्य में संचार की सटीकता और गति बढ़ेगी, लेकिन मानव संपर्क की प्रामाणिकता को लेकर चिंताएँ भी बढ़ेंगी।
- **मीटावर्स और इमर्सिव संचार:** वर्चुअल और ऑगमेंटेड रियलिटी (VR/AR) के माध्यम से संचार अधिक त्रि-आयामी (3D) और अनुभव-आधारित हो जाएगा, जहाँ भौतिक दूरी कम महत्वपूर्ण होगी।
- **डेटा सुरक्षा और गोपनीयता:** जैसे-जैसे संचार अधिक डिजिटल होता जाएगा, डेटा की सुरक्षा और गोपनीयता बनाए रखना एक प्रमुख चुनौती और प्राथमिकता बनी रहेगी।
- **संचार नैतिकता:** 'डीपफेक', गलत सूचना और हेट स्पीच के प्रसार के कारण भविष्य में संचार की नैतिक और कानूनी सीमाओं पर अधिक ध्यान केंद्रित किया जाएगा।

संचार का स्वरूप गतिशील है। यह हमेशा विकसित होता रहता है, लेकिन इसका मूल लक्ष्य अर्थ को साझा करना और मानव संबंध स्थापित करना अपरिवर्तित रहेगा।



इकाई - 1.2: संचार की प्रक्रिया और मॉडल

संचार मानव समाज की आधारशिला है। यह वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से हम अपने विचारों, भावनाओं और सूचनाओं को दूसरों के साथ साझा करते हैं। संचार के बिना न तो व्यक्तिगत संबंध संभव हैं और न ही सामाजिक संरचनाएं। लेकिन संचार केवल शब्दों का आदान-प्रदान नहीं है - यह एक जटिल प्रक्रिया है जिसमें कई चरण और घटक शामिल होते हैं। इस लेख में हम संचार की प्रक्रिया और तीन महत्वपूर्ण संचार मॉडलों का गहन अध्ययन करेंगे।

1.2.1 संचार की प्रक्रिया

संचार को समझने के लिए हमें पहले यह जानना होगा कि यह प्रक्रिया कैसे काम करती है। जब हम किसी से बात करते हैं, तो हमारे मस्तिष्क में एक विचार उत्पन्न होता है। यह विचार शब्दों, संकेतों या अन्य प्रतीकों में बदलता है, फिर किसी माध्यम से यात्रा करता है, और अंत में सुनने वाले के मस्तिष्क में पहुंचकर अर्थ में परिवर्तित हो जाता है। यह पूरी यात्रा ही संचार की प्रक्रिया है।

संचार के चरण

संचार प्रक्रिया को कई चरणों में विभाजित किया जा सकता है। पहला चरण है विचार का निर्माण, जहां प्रेषक के मन में कोई संदेश या भावना उत्पन्न होती है। यह चरण बेहद महत्वपूर्ण है क्योंकि यहीं से संचार की यात्रा शुरू होती है। प्रेषक को स्पष्ट रूप से यह समझना होता है कि वह क्या संप्रेषित करना चाहता है। दूसरा चरण है एन्कोडिंग का, जहां मानसिक विचार को संकेतों में बदला जाता है। ये संकेत शब्द, इशारे, चित्र या कोई अन्य प्रतीक हो सकते हैं। यह प्रक्रिया प्रेषक की भाषा, संस्कृति और अभिव्यक्ति की क्षमता पर निर्भर करती है। एक अच्छा वक्ता वही होता है जो अपने विचारों को प्रभावी ढंग से एन्कोड कर सके। तीसरा चरण है संदेश का प्रसारण। इस चरण में एन्कोड किया गया संदेश किसी माध्यम के द्वारा प्रेषित किया जाता है। यह माध्यम हवा में तैरती ध्वनि तरंगें हो सकती हैं, कागज पर लिखे शब्द हो सकते हैं, या इंटरनेट के डिजिटल संकेत हो सकते हैं। माध्यम का चुनाव संदेश की प्रकृति और परिस्थितियों पर निर्भर करता है।

चौथा चरण है डिकोडिंग का, जहां प्राप्तकर्ता संकेतों को पुनः अर्थ में परिवर्तित करता है। यह प्रक्रिया प्राप्तकर्ता की समझ, पृष्ठभूमि और अनुभव पर निर्भर करती है। यहां यह ध्यान देना महत्वपूर्ण है कि डिकोडिंग के दौरान अर्थ में परिवर्तन हो सकता है, जो संचार में बाधा उत्पन्न कर सकता है। पांचवां और अंतिम चरण है प्रतिक्रिया का। प्राप्तकर्ता संदेश को समझने के बाद कुछ प्रतिक्रिया देता है, जो प्रेषक को यह बताती है कि संदेश कितनी प्रभावी ढंग से पहुंचा। यह प्रतिक्रिया मौखिक, अमौखिक या व्यावहारिक हो सकती है। प्रतिक्रिया संचार को द्विमार्गी बनाती है और इसे एक सतत प्रक्रिया में बदल देती है।

संचार के घटक

संचार प्रक्रिया में कई महत्वपूर्ण घटक होते हैं जो इसे संभव बनाते हैं। सबसे पहला घटक है प्रेषक, जो संदेश की शुरुआत करता है। प्रेषक वह व्यक्ति या संस्था होती है जिसके पास कोई जानकारी, विचार या भावना होती है जिसे वह दूसरों के साथ साझा करना चाहता है। प्रेषक की जिम्मेदारी है कि वह अपने संदेश को स्पष्ट और प्रभावी ढंग से तैयार करे। दूसरा महत्वपूर्ण घटक है संदेश स्वयं। संदेश वह सूचना या विचार है जो प्रेषित किया जा रहा है। संदेश में तथ्य, भावनाएं, विचार या निर्देश शामिल हो सकते हैं। एक प्रभावी संदेश वह होता है जो स्पष्ट, संक्षिप्त और उद्देश्यपूर्ण हो। संदेश की गुणवत्ता संचार की सफलता को सीधे प्रभावित करती है। तीसरा घटक है माध्यम या चैनल। यह वह साधन है जिसके द्वारा संदेश प्रेषक से प्राप्तकर्ता तक पहुंचता है। माध्यम कई प्रकार के हो सकते हैं - मौखिक संचार में ध्वनि तरंगें, लिखित संचार में कागज या डिजिटल स्क्रीन, या दृश्य संचार में चित्र और वीडियो। प्रत्येक माध्यम की अपनी विशेषताएं और सीमाएं होती हैं।

चौथा घटक है प्राप्तकर्ता, जो संदेश को प्राप्त करता और समझता है। प्राप्तकर्ता संचार प्रक्रिया में उतना ही महत्वपूर्ण है जितना प्रेषक। प्राप्तकर्ता की समझ, ध्यान और रुचि संचार की प्रभावशीलता को निर्धारित करती है। एक सक्रिय श्रोता या पाठक संचार को सफल बनाता है। पांचवां घटक है शोर या बाधा। यह कोई भी ऐसा तत्व है जो संदेश के सही प्रसारण या समझ में बाधा उत्पन्न करता है। शोर भौतिक हो सकता है जैसे



शोरगुल, या मनोवैज्ञानिक हो सकता है जैसे पूर्वाग्रह या विचलन। शोर को कम करना प्रभावी संचार के लिए आवश्यक है।

छठा और अंतिम घटक है प्रतिक्रिया या फीडबैक। यह प्राप्तकर्ता की प्रतिक्रिया है जो प्रेषक को बताती है कि संदेश कैसा प्राप्त हुआ। प्रतिक्रिया के बिना संचार अधूरा रहता है क्योंकि प्रेषक को यह पता नहीं चल पाता कि उसका संदेश सही ढंग से समझा गया या नहीं।

1.2.2 लैसवेल का मॉडल

संचार के अध्ययन में हेरोल्ड डी. लैसवेल का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। 1948 में, लैसवेल ने एक सरल लेकिन शक्तिशाली संचार मॉडल प्रस्तुत किया जो आज भी व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है। लैसवेल का मॉडल मास कम्युनिकेशन या जनसंचार के संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है। लैसवेल ने संचार को समझाने के लिए पांच सरल प्रश्न पूछे। ये प्रश्न संचार की पूरी प्रक्रिया को व्यापक रूप से कवर करते हैं और किसी भी संचार स्थिति का विश्लेषण करने में मदद करते हैं। इस मॉडल की सबसे बड़ी खूबी यह है कि यह सरल है और फिर भी संचार के सभी आवश्यक पहलुओं को छूता है।

लैसवेल का मॉडल पांच प्रश्नों पर आधारित है जो संचार प्रक्रिया के विभिन्न पहलुओं को उजागर करते हैं। पहला प्रश्न है "Who" यानी कौन। यह प्रश्न संचारक या प्रेषक की पहचान करता है। जनसंचार में यह प्रश्न विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि संदेश का स्रोत उसकी विश्वसनीयता और प्रभाव को प्रभावित करता है। एक प्रतिष्ठित समाचार संगठन द्वारा प्रसारित समाचार और एक अज्ञात ब्लॉगर द्वारा साझा की गई जानकारी में श्रोता अलग-अलग स्तर का विश्वास रखते हैं। दूसरा प्रश्न है "Says What" यानी क्या कहता है। यह संदेश की सामग्री से संबंधित है। यह प्रश्न हमें यह विश्लेषण करने में मदद करता है कि संदेश में क्या जानकारी है, यह कैसे प्रस्तुत की गई है, और इसका क्या अर्थ है। संदेश का विश्लेषण संचार अध्ययन का केंद्रीय पहलू है। संदेश में प्रयुक्त भाषा, शैली, स्वर और संरचना सभी महत्वपूर्ण हैं। तीसरा प्रश्न है "In Which Channel" यानी किस माध्यम में। यह प्रश्न संचार के माध्यम की जांच करता है। क्या संदेश टेलीविजन पर प्रसारित किया गया, रेडियो पर सुनाया गया, अखबार में छपा, या

सोशल मीडिया पर साझा किया गया। प्रत्येक माध्यम की अपनी विशेषताएं होती हैं जो संदेश को अलग तरीके से प्रभावित करती हैं। उदाहरण के लिए, टेलीविजन दृश्य और ध्वनि दोनों का उपयोग करता है जबकि रेडियो केवल ध्वनि पर निर्भर करता है। चौथा प्रश्न है "To Whom" यानी किसको। यह प्रश्न दर्शकों या प्राप्तकर्ताओं की पहचान करता है। संचार हमेशा किसी लक्षित समूह के लिए होता है। दर्शकों की विशेषताओं को समझना प्रभावी संचार के लिए आवश्यक है। उम्र, शिक्षा, संस्कृति, रुचियां और पृष्ठभूमि जैसे कारक प्रभावित करते हैं कि दर्शक संदेश को कैसे प्राप्त करेंगे और समझेंगे। पांचवां और अंतिम प्रश्न है "With What Effect" यानी किस प्रभाव के साथ। यह प्रश्न संचार के परिणामों और प्रभावों से संबंधित है। क्या संदेश ने दर्शकों के विचारों, भावनाओं या व्यवहार को बदला। यह प्रश्न संचार की प्रभावशीलता का मूल्यांकन करने में मदद करता है। संचार का अंतिम उद्देश्य कुछ प्रभाव उत्पन्न करना होता है, चाहे वह जागरूकता बढ़ाना हो, मनोरंजन करना हो, या व्यवहार परिवर्तन लाना हो।

लैसवेल का मॉडल रैखिक है, अर्थात् यह संचार को एक सीधी रेखा में चलने वाली प्रक्रिया के रूप में देखता है। यह मॉडल विशेष रूप से जनसंचार के विश्लेषण में उपयोगी है जहां एक स्रोत बड़े दर्शकों को संदेश प्रेषित करता है। हालांकि, इस मॉडल की एक सीमा यह है कि यह प्रतिक्रिया या फीडबैक की अवधारणा को शामिल नहीं करता, जो वास्तविक संचार का एक महत्वपूर्ण पहलू है।

1.2.3 शैनन-वीवर मॉडल

1949 में क्लाउड शैनन और वारेन वीवर ने एक संचार मॉडल प्रस्तुत किया जो मूल रूप से तकनीकी संचार के लिए विकसित किया गया था, लेकिन बाद में सभी प्रकार के संचार को समझने के लिए लागू किया गया। यह मॉडल बेल टेलीफोन लेबोरेटरीज में टेलीफोन संचार की दक्षता में सुधार के लिए विकसित किया गया था।

गणितीय मॉडल

शैनन-वीवर मॉडल को गणितीय मॉडल भी कहा जाता है क्योंकि शैनन एक गणितज्ञ और इंजीनियर थे जिन्होंने संचार को गणितीय समस्या के रूप में देखा। उनका मुख्य



उद्देश्य यह समझना था कि कैसे सूचना को सटीकता से एक स्थान से दूसरे स्थान तक प्रेषित किया जा सकता है। शैनन ने सूचना सिद्धांत की नींव रखी, जो आज डिजिटल संचार और कंप्यूटर विज्ञान का आधार है। गणितीय दृष्टिकोण से, शैनन ने संचार को एक प्रक्रिया के रूप में देखा जहां संदेश को बिट्स में मापा जा सकता है। उन्होंने यह भी अध्ययन किया कि कैसे चैनल की क्षमता और शोर संदेश के प्रसारण को प्रभावित करते हैं। यद्यपि यह मॉडल तकनीकी था, लेकिन वीवर ने इसे मानव संचार के संदर्भ में व्याख्यायित किया और इसके व्यापक अनुप्रयोगों को समझाया। इस मॉडल की एक महत्वपूर्ण अवधारणा है एंट्रॉपी, जो संदेश में अनिश्चितता या अव्यवस्था को मापती है। उच्च एंट्रॉपी का अर्थ है अधिक सूचना सामग्री और अधिक अनिश्चितता। शैनन ने यह भी दिखाया कि कैसे रिडंडेंसी या अतिरिक्त, जो जानकारी की पुनरावृत्ति है, शोर के खिलाफ सुरक्षा प्रदान कर सकती है।

प्रेषक, एनकोडर, चैनल, डिकोडर, रिसीवर

शैनन-वीवर मॉडल में संचार प्रक्रिया को पांच मुख्य घटकों में विभाजित किया गया है। पहला घटक है सेंडर या सूचना स्रोत। यह वह व्यक्ति या उपकरण है जो संदेश उत्पन्न करता है। मानव संचार में यह बोलने वाला व्यक्ति होता है, जबकि तकनीकी संचार में यह कोई डिवाइस हो सकता है जो सिग्नल उत्पन्न करता है। दूसरा घटक है एनकोडर या ट्रांसमीटर। यह संदेश को संकेतों में बदलता है जो चैनल के माध्यम से प्रेषित किए जा सकते हैं। मानव संचार में हमारी वाक् इंद्रियां एनकोडर का काम करती हैं जो विचारों को ध्वनि तरंगों में बदल देती हैं। टेलीफोन में माइक्रोफोन एनकोडर होता है जो आवाज को विद्युत संकेतों में बदलता है। तीसरा घटक है चैनल, जो संकेतों को ले जाने वाला माध्यम है। यह हवा हो सकती है जो ध्वनि तरंगों को ले जाती है, तार जो विद्युत संकेत ले जाते हैं, या ऑप्टिकल फाइबर जो प्रकाश संकेत ले जाते हैं। चैनल की विशेषताएं, जैसे उसकी क्षमता और बैंडविड्थ, यह निर्धारित करती हैं कि कितनी सूचना कितनी तेजी से प्रेषित की जा सकती है। चौथा घटक है डिकोडर या रिसीवर। यह संकेतों को वापस संदेश में बदलता है। मानव संचार में हमारे कान डिकोडर होते हैं जो ध्वनि तरंगों को तंत्रिका संकेतों में बदलते हैं जिन्हें मस्तिष्क समझ सकता है। टेलीफोन में स्पीकर डिकोडर होता है जो विद्युत संकेतों को वापस ध्वनि में बदलता है।

पांचवां घटक है डेस्टिनेशन या गंतव्य, जो अंतिम प्राप्तकर्ता है जिसके लिए संदेश इच्छित था। यह वह व्यक्ति या उपकरण है जो संदेश को प्राप्त करता और समझता है। शैनन-वीवर मॉडल की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता शोर की अवधारणा है। मॉडल में शोर को एक अलग घटक के रूप में चिह्नित किया गया है जो प्रसारण के दौरान संदेश में हस्तक्षेप कर सकता है। शोर भौतिक हो सकता है जैसे टेलीफोन लाइन में स्थैतिक, या अर्थ संबंधी हो सकता है जैसे शब्दों की गलत व्याख्या। शोर की पहचान और उसे कम करना प्रभावी संचार के लिए आवश्यक है। यह मॉडल भी मूलतः रैखिक है और प्रतिक्रिया को शामिल नहीं करता। हालांकि, इसने संचार अध्ययन में शोर की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचाना और बाद के कई मॉडलों की नींव रखी। आज के डिजिटल युग में, जहां हम लगातार सूचना प्रेषित और प्राप्त करते हैं, शैनन-वीवर मॉडल की अवधारणाएं अत्यंत प्रासंगिक हैं।

1.2.4 बर्लो का मॉडल

1960 में डेविड बर्लो ने अपना संचार मॉडल प्रस्तुत किया जिसे SMCR मॉडल के नाम से जाना जाता है। यह मॉडल संचार के चार मुख्य घटकों पर केंद्रित है और पिछले मॉडलों की तुलना में अधिक विस्तृत और व्यावहारिक है। बर्लो ने प्रत्येक घटक की विभिन्न विशेषताओं को चिह्नित किया जो संचार को प्रभावित करती हैं।

स्रोत, संदेश, चैनल, प्राप्तकर्ता

बर्लो के मॉडल का पहला घटक है स्रोत या सोर्स। यह संदेश का उद्गम स्थल है। बर्लो ने पहचाना कि स्रोत केवल एक बिंदु नहीं है, बल्कि इसकी कई विशेषताएं हैं जो संचार को प्रभावित करती हैं। स्रोत की संचार कौशल महत्वपूर्ण हैं - कोई व्यक्ति कितनी अच्छी तरह बोल, लिख, सुन या पढ़ सकता है। ये कौशल सीधे प्रभावित करते हैं कि संदेश कितनी प्रभावी ढंग से बनाया और प्रेषित किया जाएगा। स्रोत का दृष्टिकोण या एटीट्यूड भी महत्वपूर्ण है। यदि स्रोत किसी विषय या प्राप्तकर्ता के प्रति नकारात्मक दृष्टिकोण रखता है, तो यह संदेश में प्रकट होगा। इसी तरह, स्रोत का ज्ञान स्तर संदेश की गुणवत्ता को निर्धारित करता है। एक विशेषज्ञ अधिक विस्तृत और सटीक जानकारी प्रदान कर सकता है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

स्रोत की सामाजिक-सांस्कृतिक प्रणाली भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। व्यक्ति की संस्कृति, मूल्य, विश्वास और सामाजिक स्थिति प्रभावित करते हैं कि वे कैसे संवाद करते हैं। एक समाज में स्वीकार्य संचार शैली दूसरे समाज में अनुपयुक्त हो सकती है। दूसरा घटक है संदेश या मैसेज। बर्लों ने संदेश को कई पहलुओं में विश्लेषित किया। संदेश की सामग्री वह जानकारी है जो प्रेषित की जा रही है। यह तथ्यात्मक, भावनात्मक या प्रेरक हो सकती है। सामग्री का चयन और संगठन संदेश की प्रभावशीलता को प्रभावित करता है। संदेश के तत्व वे घटक हैं जो इसे बनाते हैं - शब्द, वाक्य, पैराग्राफ आदि। प्रत्येक तत्व का अपना अर्थ होता है और साथ मिलकर वे संपूर्ण संदेश बनाते हैं। संदेश की संरचना इन तत्वों को व्यवस्थित करने का तरीका है। एक अच्छी तरह से संरचित संदेश समझने में आसान होता है।

संदेश का कोड वह भाषा या प्रतीक प्रणाली है जिसमें संदेश व्यक्त किया गया है। यह मौखिक भाषा, लिखित भाषा, या अमौखिक संकेत हो सकते हैं। कोड का चयन प्राप्तकर्ता की समझ क्षमता के आधार पर किया जाना चाहिए। संदेश का उपचार या ट्रीटमेंट वह तरीका है जिसमें सामग्री प्रस्तुत की जाती है - गंभीर, हास्यपूर्ण, औपचारिक या अनौपचारिक। तीसरा घटक है चैनल। बर्लों ने चैनल को हमारी पांच इंद्रियों के संदर्भ में देखा - देखना, सुनना, छूना, चखना और सूंघना। मानव संचार में हम मुख्य रूप से देखने और सुनने की इंद्रियों का उपयोग करते हैं। एक प्रभावी संचारक जानता है कि किस स्थिति में किस चैनल का उपयोग करना है।

इकाई - 1.3: संचार के प्रकार: व्यक्तिपरक, समूह, संगठनात्मक और जनसंचार

1.3.1 व्यक्तिपरक संचार

व्यक्तिपरक संचार वह प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति स्वयं से संवाद करता है। यह एक आंतरिक विचार प्रक्रिया होती है जिसमें व्यक्ति अपने मन, भावनाओं, और निर्णयों से संवाद करता है। यह संचार बाहरी दुनिया से नहीं बल्कि व्यक्ति के भीतर होता है। उदाहरण के लिए, जब कोई व्यक्ति किसी समस्या पर विचार करता है, निर्णय लेता है या आत्ममंथन करता है, तो वह व्यक्तिपरक संचार में संलग्न होता है। यह संचार व्यक्ति की चेतना, अनुभव, विश्वास, और भावनाओं पर आधारित होता है। इसमें भाषा का प्रयोग भी मानसिक रूप में होता है, जैसे मन ही मन बोलना, कल्पना करना, या आत्मसंवाद करना।

विशेषताएँ:

1. यह व्यक्ति के भीतर होने वाला संवाद है।
2. इसमें विचार, भावनाएँ, और आत्मविश्लेषण प्रमुख भूमिका निभाते हैं।
3. यह संचार आत्म-ज्ञान और आत्म-समझ को बढ़ाता है।
4. इसमें कोई बाहरी श्रोता नहीं होता।
5. यह व्यक्ति की निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करता है।
6. यह संचार लेखन, चिंतन, और आत्ममूल्यांकन में सहायक होता है।
7. व्यक्तिपरक संचार आत्म-विकास और आत्म-नियंत्रण का आधार है।

1.3.2 अंतर्व्यक्ति संचार

अंतर्व्यक्ति संचार दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच होने वाला सीधा संवाद है। इसमें भावनाओं, विचारों और सूचनाओं का आदान-प्रदान होता है। यह संचार व्यक्तिगत, सामाजिक, या व्यावसायिक संदर्भों में हो सकता है। आमतौर पर यह मौखिक या अमौखिक रूप में होता है। व्यक्ति अपनी भाषा, भाव-भंगिमा, और



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

शारीरिक संकेतों के माध्यम से संदेश देता है और दूसरे व्यक्ति से प्रतिक्रिया प्राप्त करता है।

आमने-सामने का संचार:

आमने-सामने संचार अंतर्व्यक्तिक संचार का सबसे प्रभावी रूप है। इसमें प्रेषक और प्राप्तकर्ता एक-दूसरे के हाव-भाव, चेहरे के भाव, और आवाज़ के स्वर को समझ सकते हैं। यह संचार न केवल शब्दों के माध्यम से बल्कि शरीर की भाषा और नेत्र संपर्क के माध्यम से भी होता है। आमने-सामने संवाद में विश्वास, समझ और सहानुभूति की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। उदाहरण के लिए, शिक्षक और छात्र के बीच संवाद, मित्रों की बातचीत, या किसी संगठन में बैठक के दौरान चर्चा।

विशेषताएँ:

1. यह प्रत्यक्ष संचार का रूप है।
2. इसमें तत्काल प्रतिक्रिया संभव होती है।
3. यह विश्वास और सहयोग की भावना को बढ़ाता है।
4. यह मानवीय संबंधों को सुदृढ़ करता है।
5. यह संचार व्यक्तिगत विकास और सामाजिक संबंधों के निर्माण में सहायक होता है।

1.3.3 समूह संचार

समूह संचार वह प्रक्रिया है जिसमें तीन या उससे अधिक व्यक्ति किसी साझा उद्देश्य या कार्य के लिए संवाद करते हैं। समूह संचार विचारों के आदान-प्रदान, निर्णय लेने, और समस्याओं के समाधान के लिए आवश्यक होता है। इसमें समूह के सदस्य आपसी सहभागिता के माध्यम से किसी लक्ष्य की प्राप्ति करते हैं। समूह संचार शिक्षा, राजनीति, व्यवसाय, और समाजसेवा जैसे अनेक क्षेत्रों में देखा जा सकता है।

छोटे और बड़े समूह में संचार:

छोटे समूह संचार में सदस्यों की संख्या सीमित होती है, जैसे किसी समिति, टीम या प्रोजेक्ट समूह में। इसमें संवाद व्यक्तिगत और सक्रिय होता है। प्रत्येक सदस्य को अपनी राय प्रस्तुत करने का अवसर मिलता है। इसके विपरीत, बड़े समूह संचार में सदस्यों की संख्या अधिक होती है, जैसे सेमिनार, सम्मेलन या सार्वजनिक सभा में। यहाँ संचार अपेक्षाकृत औपचारिक होता है और प्रतिक्रिया अप्रत्यक्ष रूप में प्राप्त होती है।

विशेषताएँ:

1. समूह के सदस्यों का साझा उद्देश्य होता है।
2. संवाद द्विपक्षीय या बहुपक्षीय हो सकता है।
3. नेतृत्व और सहभागिता दोनों आवश्यक घटक हैं।
4. निर्णय सामूहिक रूप से लिए जाते हैं।
5. समूह संचार में एकता, सहयोग और समन्वय आवश्यक है।

1.4.4 संगठनात्मक संचार

संगठनात्मक संचार किसी संस्था या संगठन के भीतर सूचनाओं के आदान-प्रदान की प्रक्रिया है। इसमें कर्मचारियों, प्रबंधकों, और अन्य हितधारकों के बीच संवाद होता है। यह संचार संगठन के उद्देश्यों की पूर्ति, कार्य-संयोजन, और नीति-निर्धारण में सहायक होता है।

औपचारिक और अनौपचारिक संचार:

औपचारिक संचार संगठन की निर्धारित संरचना और नियमों के अनुसार होता है। यह ऊपर से नीचे, नीचे से ऊपर, और क्षैतिज दिशाओं में प्रवाहित हो सकता है। उदाहरण के लिए, प्रबंधक द्वारा कर्मचारियों को दिए गए निर्देश। दूसरी ओर, अनौपचारिक संचार संगठन के कर्मचारियों के बीच स्वाभाविक रूप से विकसित होता है, जिसे अक्सर 'ग्रेपवाइन' संचार कहा जाता है। यह सहकर्मियों के बीच विश्वास और पारस्परिक संबंधों को मजबूत करता है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

विशेषताएँ:

1. यह संगठन की कार्यकुशलता को बढ़ाता है।
2. यह औपचारिक और अनौपचारिक दोनों रूपों में होता है।
3. यह सूचना प्रवाह को संगठित और स्पष्ट बनाता है।
4. यह टीमवर्क और नेतृत्व के विकास में सहायक है।
5. संगठनात्मक संचार पारदर्शिता और उत्तरदायित्व को प्रोत्साहित करता है।

1.4.5 जनसंचार

जनसंचार वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से सूचना, विचार, और संदेश एक साथ बड़ी संख्या में लोगों तक पहुँचाए जाते हैं। यह आधुनिक समाज की प्रमुख संचार प्रणाली है जो जनमत निर्माण, शिक्षा, और मनोरंजन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जनसंचार का उद्देश्य व्यापक जनसमूह को प्रभावित करना और सूचनाओं का त्वरित प्रसार करना है। यह संचार एकतरफा या द्विपक्षीय दोनों हो सकता है, जैसे टेलीविज़न कार्यक्रम, समाचार पत्र, रेडियो प्रसारण, या सोशल मीडिया संवाद।

विशेषताएँ:

1. इसका लक्ष्य व्यापक जनसमूह होता है।
2. इसमें तकनीकी माध्यमों का उपयोग होता है।
3. संदेश एक साथ लाखों लोगों तक पहुँचता है।
4. प्रतिक्रिया (Feedback) प्रायः विलंबित या अप्रत्यक्ष होती है।
5. यह सामाजिक, राजनीतिक, और सांस्कृतिक चेतना को प्रभावित करता है।
6. यह सूचना, शिक्षा और मनोरंजन का प्रमुख साधन है।

जनसंचार माध्यम:

जनसंचार के प्रमुख माध्यम हैं – प्रिंट मीडिया (अखबार, पत्रिकाएँ, जर्नल), इलेक्ट्रॉनिक मीडिया (रेडियो, टेलीविज़न), और डिजिटल मीडिया (इंटरनेट, सोशल मीडिया, वेबसाइट)। प्रिंट मीडिया सूचना और विश्लेषण प्रदान करता है; इलेक्ट्रॉनिक मीडिया त्वरित संचार का माध्यम है; जबकि डिजिटल मीडिया सहभागिता और रचनात्मकता

को प्रोत्साहित करता है। आज सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे फेसबुक, एक्स (ट्विटर), इंस्टाग्राम, और यूट्यूब जनसंचार को लोकतांत्रिक बना रहे हैं।

महत्व:

जनसंचार लोकतंत्र की आत्मा है। यह नागरिकों को जागरूक करता है, नीति-निर्माण को प्रभावित करता है, और समाज में परिवर्तन का माध्यम बनता है। यह न केवल सूचनाएँ प्रदान करता है बल्कि समाज की आवाज़ को भी स्वर देता है। आधुनिक युग में जनसंचार का दायरा शिक्षा, व्यापार, पर्यावरण, स्वास्थ्य और राजनीति तक फैला हुआ है।

संचार की मनोवैज्ञानिक भूमिका

संचार व्यक्ति की मानसिक स्थिति, व्यवहार, और दृष्टिकोण पर गहरा प्रभाव डालता है। व्यक्तिपरक संचार आत्म-ज्ञान को विकसित करता है, जबकि अंतर्व्यक्तिक और समूह संचार सामाजिक संबंधों को सुदृढ़ बनाते हैं। मनोविज्ञान के अनुसार, प्रभावी संचार व्यक्ति के आत्मविश्वास, सहानुभूति, और समस्या-समाधान क्षमता को बढ़ाता है। संगठनात्मक संचार व्यक्ति की भूमिका को स्पष्ट करता है, जिससे कार्यस्थल पर तनाव और भ्रम कम होता है। जनसंचार के माध्यम से सामूहिक मानसिकता, विश्वास और सामाजिक धारणा बनती है।

संचार में प्रौद्योगिकी की भूमिका

वर्तमान युग में प्रौद्योगिकी ने संचार के स्वरूप को पूरी तरह बदल दिया है। इंटरनेट, मोबाइल फोन, और सोशल मीडिया ने संचार को वैश्विक, त्वरित, और सुलभ बना दिया है। व्यक्तिपरक स्तर पर, लोग डिजिटल डायरी या ब्लॉग के माध्यम से आत्म-अभिव्यक्ति करते हैं। अंतर्व्यक्तिक संचार व्हाट्सएप, वीडियो कॉल, और ईमेल के माध्यम से आसान हुआ है। समूह और संगठनात्मक संचार अब ऑनलाइन मीटिंग, वेबिनार, और डिजिटल प्लेटफॉर्म पर संभव है। जनसंचार में डिजिटल मीडिया ने क्रांति ला दी है, जिससे हर व्यक्ति अब सूचना का उपभोक्ता ही नहीं बल्कि उत्पादक भी बन गया है।



संचार में नैतिकता और उत्तरदायित्व

प्रत्येक संचार का नैतिक पक्ष होता है। चाहे वह व्यक्तिपरक हो या जनसंचार, प्रत्येक स्तर पर सत्यता, सम्मान और गोपनीयता का पालन आवश्यक है। संगठनात्मक और जनसंचार में विशेष रूप से यह ध्यान रखना चाहिए कि जानकारी सत्य और प्रमाणिक हो। सोशल मीडिया के दौर में फेक न्यूज, अफवाह, और गलत सूचना से बचना हर संचारक का कर्तव्य है। नैतिक संचार समाज में विश्वास, पारदर्शिता और सामाजिक न्याय को सुदृढ़ करता है।

संचार के अवरोध

संचार प्रक्रिया में अनेक बाधाएँ उत्पन्न होती हैं जिन्हें अवरोध कहा जाता है। इनमें भाषागत, मानसिक, सामाजिक, भौतिक, और तकनीकी अवरोध प्रमुख हैं। उदाहरण के लिए, भाषा की भिन्नता, पूर्वाग्रह, ध्यान की कमी, तकनीकी खराबी या सूचना का गलत संप्रेषण संचार की प्रभावशीलता को घटाता है। संगठनात्मक स्तर पर पदानुक्रम और सूचना का विकृतिकरण भी एक प्रमुख अवरोध है। इन अवरोधों को दूर करने के लिए स्पष्ट भाषा, सक्रिय सुनना, सहानुभूति, और तकनीकी दक्षता आवश्यक है। संचार मानव जीवन का मूल आधार है। व्यक्तिपरक संचार आत्म-चिंतन और आत्म-समझ का माध्यम है; अंतर्व्यक्ति संचार मानवीय संबंधों को सुदृढ़ करता है; समूह संचार सहयोग और निर्णय निर्माण में सहायक होता है; संगठनात्मक संचार संस्थाओं की सफलता की रीढ़ है; और जनसंचार समाज को जागरूक और संगठित करता है। आधुनिक युग में तकनीकी प्रगति ने संचार को अधिक गतिशील, प्रभावी और लोकतांत्रिक बना दिया है। संचार केवल सूचना का आदान-प्रदान नहीं बल्कि विचार, भावना, और संस्कृति का संवाहक है, जो समाज की निरंतर प्रगति और विकास का आधार बनता है।

इकाई - 1.4: संचार बाधाएँ एवं माध्यम

1.4.1 संचार बाधाएँ

प्रभावी संचार: बाधाएँ, माध्यम और समाधान पर एक विस्तृत रिपोर्ट

संचार मानव सभ्यता का आधार है। यह केवल सूचनाओं के आदान-प्रदान तक सीमित नहीं है, बल्कि यह साझा समझ, संबंध निर्माण और संगठनात्मक लक्ष्यों की प्राप्ति का भी एक साधन है। चाहे वह व्यक्तिगत जीवन हो, कॉर्पोरेट परिवेश हो, या अंतर्राष्ट्रीय कूटनीति, प्रभावी संचार की अनुपस्थिति से गलतफहमी, संघर्ष और अक्षमता उत्पन्न होती है। यह रिपोर्ट प्रभावी संचार के तीन मुख्य आयामों पर केंद्रित है: वे **बाधाएँ** जो संदेश को विकृत करती हैं; वे **माध्यम** जिनके द्वारा संदेश प्रसारित किए जाते हैं; और उन बाधाओं को दूर करने के **समाधान** जो संचार को उद्देश्यपूर्ण और सफल बनाते हैं। हम यहाँ संचार की जटिलताओं को विस्तार से समझने का प्रयास करेंगे।

1 संचार बाधाएँ: एक अवलोकन

संचार बाधाएँ वे रुकावटें या कारक हैं जो प्रेषक द्वारा भेजे गए संदेश को प्राप्तकर्ता तक उसके मूल अर्थ में पहुँचने से रोकते हैं। ये बाधाएँ संदेश के एन्कोडिंग, ट्रांसमिशन, या डिकोडिंग के चरण में उत्पन्न हो सकती हैं, जिससे गलतफहमी पैदा होती है और वांछित प्रतिक्रिया नहीं मिल पाती है। संचार बाधाओं को मुख्य रूप से भौतिक, मनोवैज्ञानिक, भाषाई और सांस्कृतिक श्रेणियों में विभाजित किया गया है।

भौतिक बाधाएँ

भौतिक बाधाएँ वातावरण और दूरी से संबंधित होती हैं जो संदेश के संचरण में व्यवधान डालती हैं। ये सबसे स्पष्ट और पहचानने में आसान बाधाएँ होती हैं, लेकिन ये प्रभावी ढंग से संवाद करने की क्षमता पर गंभीर रूप से प्रभाव डाल सकती हैं।

1. शोर

'शोर' शब्द का तात्पर्य केवल ध्वनिक शोर से नहीं है, बल्कि किसी भी तरह के व्यवधान से है जो संदेश को बाधित करता है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

- **बाहरी शोर:** मशीनरी की आवाज़, ट्रैफ़िक, या आस-पास के लोगों की बातें।
- **सिमेंटिक शोर:** प्रेषक के संदेश में अनावश्यक तकनीकी शब्दावली या जटिलता, जो प्राप्तकर्ता को भ्रमित करती है।
- **चैनल शोर:** खराब टेलीफ़ोन कनेक्शन, इंटरनेट कनेक्टिविटी की समस्या, या अस्पष्ट हैंडराइटिंग।

2. समय और दूरी

- **भौगोलिक दूरी:** जब प्रेषक और प्राप्तकर्ता अलग-अलग स्थानों पर होते हैं, तो संदेश भेजने और तुरंत प्रतिक्रिया प्राप्त करने में देरी होती है।
- **समय का अंतर:** अंतर्राष्ट्रीय संगठनों में, समय क्षेत्र के अंतर के कारण तत्काल बातचीत और सहयोग मुश्किल हो जाता है।

3. खराब वातावरण और लेआउट

- असुविधाजनक बैठक कक्ष, बहुत गर्म या ठंडा कमरा, या खराब रोशनी वाला स्थान ध्यान केंद्रित करने और प्रभावी ढंग से सुनने में बाधा उत्पन्न करता है।
- एक बंद दरवाज़ा या विभाजक अनौपचारिक संचार को हतोत्साहित कर सकते हैं।

मनोवैज्ञानिक बाधाएँ

मनोवैज्ञानिक बाधाएँ प्राप्तकर्ता या प्रेषक की भावनाओं, विचारों, दृष्टिकोणों और मानसिक स्थिति से संबंधित होती हैं। ये बाधाएँ संदेश को वस्तुनिष्ठ रूप से समझने के बजाय व्यक्तिगत रूप से व्याख्या करने का कारण बनती हैं।

1. चयनात्मक बोध

यह बाधा तब उत्पन्न होती है जब प्राप्तकर्ता केवल वही जानकारी सुनता या देखता है जो उसके पूर्व के विश्वासों, अनुभवों और मूल्यों के अनुरूप होती है। प्राप्तकर्ता संदेश के बाकी हिस्सों को अनदेखा कर देता है या विकृत कर देता है। उदाहरण के लिए, एक कर्मचारी केवल वेतन वृद्धि से संबंधित खबरों को ध्यान से सुनता है और कार्य की चुनौतियों पर चर्चा को नज़रअंदाज़ कर देता है।

2. भावनात्मक स्थिति

जब प्रेषक या प्राप्तकर्ता तनाव, क्रोध, दुःख, या अत्यधिक खुशी जैसी मजबूत भावनाओं के अधीन होता है, तो उनकी संदेश को एन्कोड करने या डिकोड करने की क्षमता कम हो जाती है।

- **डर और चिंता:** भय के कारण प्राप्तकर्ता संदेश को रक्षात्मक तरीके से सुन सकता है।
- **क्रोध:** क्रोधित अवस्था में व्यक्ति आक्रामक भाषा का उपयोग कर सकता है या तथ्यों को विकृत कर सकता है।

3. फिल्टरिंग

फिल्टरिंग तब होती है जब प्रेषक जानबूझकर संदेश के कुछ हिस्सों को छिपाता या हेरफेर करता है ताकि वह प्राप्तकर्ता के लिए अधिक अनुकूल लगे। यह विशेष रूप से पदानुक्रमित संगठनों में आम है, जहां निचले स्तर के कर्मचारी अपने उच्च अधिकारियों को केवल अच्छी खबरें बताते हैं।

4. अविश्वास और पूर्वाग्रह

यदि प्राप्तकर्ता प्रेषक पर भरोसा नहीं करता है, तो वह संदेश की विश्वसनीयता पर संदेह करेगा, भले ही वह तथ्यात्मक रूप से सही हो। पूर्वाग्रह व्यक्ति को खुले दिमाग से सुनने से रोकता है, जिससे वह पूर्व-कल्पित विचारों के आधार पर संदेश का मूल्यांकन करता है।

भाषाई बाधाएँ

पयोग, शब्दावली और अर्थ के अंतर से उत्पन्न होती हैं।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

1. अस्पष्ट अर्थ

एक ही शब्द के अलग-अलग संदर्भों में अलग-अलग अर्थ हो सकते हैं (जैसे हिंदी में 'कल')। यदि प्रेषक संदर्भ को स्पष्ट नहीं करता है, तो प्राप्तकर्ता गलत अर्थ निकाल सकता है।

2. जटिल और अस्पष्ट भाषा

संदेश में अनावश्यक रूप से जटिल वाक्य संरचना, लंबे पैराग्राफ, या अत्यधिक तकनीकी शब्दावली का उपयोग प्राप्तकर्ता को संदेश को समझने से रोकता है।

3. उच्चारण और लहजा

एक ही भाषा के भीतर, उच्चारण या बोली में अंतर के कारण संदेश को समझना मुश्किल हो सकता है। मौखिक संचार में, संदेश का लहजा - जैसे व्यंग्यात्मक या विनम्र - भी अर्थ को बदल सकता है।

सांस्कृतिक बाधाएँ

सांस्कृतिक बाधाएँ संचार में सबसे सूक्ष्म लेकिन शक्तिशाली रुकावटें हैं, जो सामाजिक मानदंडों, मूल्यों और परंपराओं से उत्पन्न होती हैं।

1. गैर-मौखिक संकेतों की व्याख्या

शरीर की भाषा, हावभाव, आँख से संपर्क, और व्यक्तिगत दूरी संस्कृति के अनुसार अलग-अलग होती है। उदाहरण के लिए:

- जापान में सीधे आँख से संपर्क को सम्मानजनक नहीं माना जा सकता है, जबकि पश्चिमी संस्कृति में यह ईमानदारी का प्रतीक है।
- हाथ मिलाना या गले लगाना कुछ संस्कृतियों में सामान्य है, जबकि अन्य में यह अनुचित माना जाता है।

2. पदानुक्रम और सम्मान

कुछ संस्कृतियों में, पदानुक्रम को बहुत महत्व दिया जाता है, और निचले स्तर के व्यक्ति उच्च अधिकारियों के साथ खुलकर संवाद करने या असहमति व्यक्त करने में संकोच करते हैं। इससे **ऊर्ध्वाधर संचार** बाधित होता है।

3. समय के प्रति दृष्टिकोण

संस्कृतियों को मोनोक्रोनिक या पॉलीक्रोनिक के रूप में वर्गीकृत किया जा सकता है। मोनोक्रोनिक संस्कृतियाँ (जैसे जर्मनी, अमेरिका) समयबद्धता और अनुसूची का सख्ती से पालन करती हैं, जबकि पॉलीक्रोनिक संस्कृतियाँ (जैसे मध्य पूर्व, लैटिन अमेरिका) मानवीय संबंधों को समय सीमा से अधिक महत्व देती हैं। संचार की उम्मीदें इस दृष्टिकोण से प्रभावित होती हैं।

1.4.2 संचार माध्यम: प्रकार और चयन

संचार माध्यम वह चैनल है जिसके माध्यम से प्रेषक संदेश को प्राप्तकर्ता तक पहुँचाता है। माध्यम का सही चुनाव संचार की प्रभावशीलता के लिए महत्वपूर्ण है। संचार माध्यमों को उनकी प्रकृति के आधार पर मुख्य रूप से मौखिक, लिखित और दृश्य-श्रव्य में वर्गीकृत किया जाता है।

मौखिक और लिखित माध्यम

मौखिक माध्यम

मौखिक संचार में शब्दों का उपयोग किया जाता है। इसमें आमने-सामने की बातचीत, टेलीफोन कॉल, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग, भाषण, प्रस्तुतिकरण और बैठकों जैसी विधियाँ शामिल हैं।

लाभ:

- **त्वरित प्रतिक्रिया:** प्राप्तकर्ता तुरंत प्रतिक्रिया दे सकता है, जिससे गलतफहमियाँ तुरंत दूर हो जाती हैं।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

- **व्यक्तिगत स्पर्श:** यह अधिक व्यक्तिगत और आकर्षक होता है, जिससे विश्वास और तालमेल बनता है।
- **अतिरिक्त संकेत:** लहजा, पिच, हावभाव जैसे गैर-मौखिक संकेतों का उपयोग करके अर्थ को बढ़ाया जा सकता है।
- **समय की बचत:** आमतौर पर अनौपचारिक संचार के लिए यह सबसे तेज़ तरीका है।

सीमाएँ:

- **रिकॉर्ड का अभाव:** भविष्य के संदर्भ के लिए कोई स्थायी रिकॉर्ड नहीं होता है।
- **दूरी:** लंबी दूरी के लिए कम प्रभावी, और विकृत होने की संभावना अधिक होती है।
- **जवाबदेही की कमी:** चूंकि कोई लिखित साक्ष्य नहीं है, इसलिए बाद में जवाबदेही तय करना मुश्किल हो सकता है।

लिखित माध्यम

लिखित संचार में पत्र, ईमेल, रिपोर्ट, मेमो, मैनुअल, एस.एम.एस. और दस्तावेज़ शामिल हैं।

लाभ:

- **स्थायी रिकॉर्ड:** यह एक स्थायी रिकॉर्ड बनाता है जिसे भविष्य में संदर्भित किया जा सकता है और कानूनी प्रमाण के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।
- **सटीकता:** संदेश को भेजने से पहले सावधानीपूर्वक तैयार, संपादित और संशोधित किया जा सकता है।
- **व्यापक पहुंच:** यह भौगोलिक रूप से बिखरे हुए बड़े दर्शकों तक एक ही संदेश को कुशलता से पहुँचा सकता है।
- **जवाबदेही:** यह स्पष्ट रूप से जवाबदेही स्थापित करता है।

सीमाएँ:

- **विलंबित प्रतिक्रिया:** प्रतिक्रिया प्राप्त होने में समय लग सकता है।
- **व्यक्तिगत स्पर्श का अभाव:** यह अवैयक्तिक हो सकता है और संदेश के साथ भावनाओं को व्यक्त करना कठिन होता है।
- **समय लेने वाला:** एक विस्तृत रिपोर्ट या दस्तावेज़ तैयार करने में समय और प्रयास लगता है।

दृश्य-श्रव्य माध्यम

दृश्य-श्रव्य माध्यम संचार के सबसे शक्तिशाली साधनों में से एक है क्योंकि यह दो इंद्रियों देखने और सुनने को संलग्न करता है। इसमें वीडियो, प्रेजेंटेशन स्लाइड्स, फ़िल्में, इन्फोग्राफ़िक्स, डेमो और सिमुलेशन शामिल हैं।

लाभ:

- **उच्च प्रभाव और जुड़ाव:** यह दर्शकों को अत्यधिक संलग्न करता है, जिससे वे लंबे समय तक संदेश को याद रख पाते हैं।
- **जटिल जानकारी का सरलीकरण:** अमूर्त या जटिल प्रक्रियाओं को दृश्यों और एनीमेशन के माध्यम से आसानी से समझाया जा सकता है।
- **मानकीकरण:** एक ही वीडियो या प्रेजेंटेशन को बार-बार बिना किसी बदलाव के उपयोग किया जा सकता है।

सीमाएँ:

- **उच्च लागत और समय:** सामग्री के निर्माण (उत्पादन, संपादन) में बहुत अधिक समय और पैसा लगता है।
- **तकनीकी निर्भरता:** संदेश को चलाने के लिए विशेष उपकरणों (प्रोजेक्टर, इंटरनेट, स्पीकर) की आवश्यकता होती है।



1.4.3 प्रभावी संचार के सिद्धांत

प्रभावी संचार केवल संदेश भेजने तक सीमित नहीं है; यह सुनिश्चित करने के बारे में है कि प्राप्तकर्ता को वही अर्थ प्राप्त हो जो प्रेषक का इरादा था। इसे प्राप्त करने के लिए कुछ स्थापित सिद्धांत हैं, जिन्हें "7 Cs संचार की" के रूप में भी जाना जाता है।

1. स्पष्टता

संदेश स्पष्ट, सीधा और समझने में आसान होना चाहिए। एक बार में एक ही विचार व्यक्त करें और अस्पष्ट शब्दों और वाक्यों के प्रयोग से बचें।

2. संक्षिप्तता

संदेश को आवश्यक शब्दों तक सीमित रखें। अनावश्यक विस्तार से बचें, क्योंकि यह ध्यान भटका सकता है और प्राप्तकर्ता का समय बर्बाद कर सकता है।

3. पूर्णता

संदेश में प्राप्तकर्ता की जरूरत की सभी जानकारी होनी चाहिए ताकि वह कोई कार्रवाई कर सके या उचित प्रतिक्रिया दे सके। अपूर्ण संदेश से भ्रम और अनावश्यक प्रश्न उत्पन्न होते हैं।

4. विश्वसनीयता

संदेश तथ्यात्मक रूप से सही होना चाहिए। व्याकरण, वर्तनी और विराम चिह्नों की त्रुटियों से बचना चाहिए, क्योंकि ये प्रेषक की विश्वसनीयता को कम कर सकते हैं।

5. शिष्टाचार

संदेश सम्मानजनक, विचारशील, और निष्पक्ष होना चाहिए। प्रेषक के इरादे विनम्र होने चाहिए, चाहे वह मौखिक हो या लिखित।

6. सुसंगतता

संदेश तार्किक रूप से व्यवस्थित होना चाहिए। विचारों को इस तरह से क्रमबद्ध किया जाना चाहिए कि वे आसानी से एक-दूसरे से जुड़े हुए लगें।

7. ठोसपन

संदेश विशिष्ट, तथ्यात्मक और ठोस होना चाहिए। अस्पष्ट या सामान्य बयानबाजी से बचें। सटीक डेटा और तथ्य का उपयोग करें।

बाधाओं को दूर करने के उपाय

प्रभावी संचार को बढ़ावा देने के लिए सभी प्रकार की बाधाओं को व्यवस्थित रूप से दूर करना आवश्यक है।

1. प्रतिक्रिया तंत्र का विकास

प्रतिक्रिया प्रभावी संचार की आधारशिला है।

- **खुले प्रश्न पूछना:** प्राप्तकर्ता से "क्या आप समझ गए?" के बजाय "आप इसे अपनी टीम में कैसे लागू करेंगे?" जैसे खुले प्रश्न पूछें।
- **सक्रिय श्रवण:** प्राप्तकर्ता को बिना व्यवधान किए ध्यान से सुनें और समझ की पुष्टि करने के लिए उनके संदेश को अपने शब्दों में दोहराएँ।

2. भाषा का सरलीकरण

- **सामान्य शब्दावली का प्रयोग:** तकनीकी शब्दावली या जार्गन का प्रयोग तभी करें जब आपको पता हो कि प्राप्तकर्ता उससे परिचित है। अन्यथा, जटिल विचारों को सरल, आम भाषा में समझाएँ।
- **सार्थक एन्कोडिंग:** प्रेषक को प्राप्तकर्ता की शिक्षा, अनुभव और संस्कृति को ध्यान में रखते हुए संदेश को एन्कोड करना चाहिए।



3. भावनात्मक बुद्धिमत्ता का उपयोग

- **सहानुभूति:** संचार शुरू करने से पहले प्राप्तकर्ता की भावनात्मक स्थिति को समझें। यदि कोई व्यक्ति तनाव में है, तो संचार को स्थगित कर दें या सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण अपनाएँ।
- **अनाक्रामक भाषा:** व्यक्तिगत हमलों या दोषारोपण से बचें। "आप" के बजाय "मैं" वाले वाक्यों का उपयोग करें (जैसे, "मुझे लगता है..." "महसूस करता हूँ..."), ताकि संदेश को रक्षात्मक रूप से न लिया जाए।

4. सही माध्यम का चयन

- **माध्यम की समृद्धि:** माध्यम की समृद्धि यह निर्धारित करती है कि यह कितनी कुशलता से जानकारी को संप्रेषित कर सकता है। जटिल, अस्पष्ट, या भावनात्मक रूप से संवेदनशील संदेशों के लिए अधिक समृद्ध माध्यम (जैसे आमने-सामने की बातचीत या वीडियो कॉल) चुनें, जबकि सरल और तथ्यात्मक जानकारी के लिए कम समृद्ध माध्यम (जैसे ईमेल या मेमो) पर्याप्त हैं।

5. संगठनात्मक और भौतिक सुधार

- **सुनिश्चित करें कि शोर कम हो:** बैठकें एक शांत, अच्छी रोशनी वाले कमरे में आयोजित की जानी चाहिए।
- **औपचारिक संचार चैनलों को स्पष्ट करना:** पदानुक्रमित संरचनाओं में, सूचना के प्रवाह को सुविधाजनक बनाने के लिए औपचारिक चैनलों को स्पष्ट रूप से परिभाषित करें।
- **संवादात्मक प्रशिक्षण:** कर्मचारियों को सक्रिय श्रवण, गैर-मौखिक संकेतों की पहचान, और पार-सांस्कृतिक संचार में प्रशिक्षित करें।

प्रभावी संचार एक कला भी है और विज्ञान भी। संचार प्रक्रिया में बाधाएँ स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होती हैं, चाहे वे भौतिक हों, मनोवैज्ञानिक हों, या भाषाई-सांस्कृतिक। एक कुशल संचारक वह होता है जो इन बाधाओं की पहचान करता है, संदेश के प्रकार के आधार पर सबसे उपयुक्त माध्यम (मौखिक, लिखित, या दृश्य-श्रव्य) का

चयन करता है, और सक्रिय रूप से ऐसे उपायों को लागू करता है जो गलतफहमी की संभावना को कम करते हैं। स्पष्टता, संक्षिप्तता, और सहानुभूति के सिद्धांतों का पालन करके, व्यक्ति और संगठन दोनों ही अपने लक्ष्यों को अधिक प्रभावी ढंग से प्राप्त कर सकते हैं और मजबूत, स्थायी संबंध बना सकते हैं। प्रभावी संचार की यात्रा एक सतत सुधार की प्रक्रिया है।

संचार का
स्वरूप





संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

1.5 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

1.5.1 बहुविकल्पीय प्रश्न

1. संचार शब्द की उत्पत्ति किस भाषा से हुई है?

- a) ग्रीक
- b) लैटिन
- c) संस्कृत
- d) अरबी

2. "कौन क्या कहता है, किस चैनल में, किससे, किस प्रभाव से" किसका मॉडल है?

- a) शैनन-वीवर
- b) लैसवेल
- c) बर्लो
- d) श्रैम

3. SMCR मॉडल किसने दिया?

- a) लैसवेल
- b) शैनन और वीवर
- c) बर्लो
- d) मार्शल मैक्लुहान

4. जनसंचार की सबसे बड़ी विशेषता है:

- a) व्यक्तिगत संचार
- b) बड़े और विषम दर्शकों तक पहुँच
- c) दो व्यक्तियों के बीच संचार
- d) छोटे समूह में संचार

5. संचार प्रक्रिया का पहला चरण है:

- a) प्रापक
- b) प्रेषक
- c) माध्यम
- d) प्रतिक्रिया

6. संगठनात्मक संचार के कितने प्रकार हैं?

- a) एक
- b) दो (औपचारिक और अनौपचारिक)
- c) तीन
- d) चार

7. संचार में 'नॉइज़' का अर्थ है:

- a) केवल ध्वनि प्रदूषण
- b) संचार में बाधा या विकृति



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

- c) संगीत
- d) उच्च आवाज़

8. Feedback का हिंदी अर्थ है:

- a) प्रतिक्रिया
- b) माध्यम
- c) संदेश
- d) बाधा

9. व्यक्तिपरक संचार होता है:

- a) दो व्यक्तियों के बीच
- b) समूह में
- c) स्वयं से
- d) जनसमूह में

10. संचार का सबसे प्राचीन माध्यम है:

- a) रेडियो
- b) टेलीविजन
- c) मौखिक संचार
- d) इंटरनेट

1.5.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. संचार का अर्थ और महत्व संक्षेप में लिखिए।
2. लैसवेल के संचार मॉडल को समझाइए।
3. जनसंचार और अंतर्व्यक्तिक संचार में अंतर बताइए।
4. संचार की प्रक्रिया के प्रमुख तत्व कौन-कौन से हैं?
5. संचार बाधाओं के कोई तीन प्रकार बताइए।

1.5.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. संचार की परिभाषा देते हुए इसके महत्व की विस्तृत व्याख्या कीजिए।
2. शैनन-वीवर और बर्लो के संचार मॉडल का वर्णन कीजिए। दोनों में क्या समानताएँ और अंतर हैं?
3. संचार के विभिन्न प्रकारों (व्यक्तिपरक, समूह, संगठनात्मक और जनसंचार) का विस्तार से वर्णन कीजिए।
4. संचार प्रक्रिया को विस्तार से समझाइए। संचार के विभिन्न तत्वों की व्याख्या कीजिए।
5. संचार बाधाओं का वर्णन कीजिए। प्रभावी संचार के लिए इन बाधाओं को कैसे दूर किया जा सकता है?



मॉड्यूल 2

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया

संरचना

इकाई: 2.1 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की परिभाषा और स्वरूप

इकाई: 2.2 पत्रकारिता और समाज में इसकी भूमिका

इकाई: 2.3 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की संभावनाएँ और चुनौतियाँ

2.0 उद्देश्य

- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का अर्थ समझना
- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के स्वरूप को जानना
- प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के अंतर को समझना
- पत्रकारिता का अर्थ और स्वरूप समझना
- समाज में पत्रकारिता की भूमिका को जानना
- पत्रकारिता के उत्तरदायित्वों को समझना
- इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की संभावनाओं को समझना
- प्रमुख चुनौतियों को जानना
- भविष्य की दिशाओं का अध्ययन करना

इकाई - 2.1: इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की परिभाषा और स्वरूप

2.1.1 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की परिभाषा

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आधुनिक संचार माध्यमों का वह रूप है जिसमें सूचना, समाचार, मनोरंजन, शिक्षा और विचारों का प्रसारण इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों और डिजिटल तकनीकों के माध्यम से किया जाता है। इसे 'इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम' भी कहा जाता है क्योंकि यह विद्युत संकेतों, रेडियो तरंगों, केबल, उपग्रह, और इंटरनेट तकनीकों पर आधारित होता है। पारंपरिक संचार माध्यमों जैसे समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, या पुस्तकें जहाँ मुद्रण और कागज पर निर्भर होती हैं, वहीं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया डिजिटल संकेतों और ऑडियो-विजुअल तत्वों पर आधारित होता है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का सबसे प्रारंभिक रूप रेडियो था, जिसने बीसवीं सदी के आरंभ में सूचना के प्रसार में क्रांति ला दी। इसके बाद टेलीविज़न आया, जिसने दृश्य और

श्रव्य दोनों माध्यमों का उपयोग कर संचार को और अधिक प्रभावी बनाया। आज के समय में इंटरनेट, सोशल मीडिया, डिजिटल न्यूज़ पोर्टल, पॉडकास्ट, और स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म जैसे यूट्यूब और नेटफ्लिक्स इस श्रेणी में आते हैं। इस प्रकार, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का दायरा अत्यंत व्यापक है, जो केवल समाचार प्रसारण तक सीमित नहीं बल्कि शिक्षा, विज्ञापन, मनोरंजन, व्यापार और जनसंपर्क तक फैला हुआ है।

अर्थ और अवधारणा

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का अर्थ केवल तकनीकी संचार से नहीं बल्कि उस समग्र व्यवस्था से है जो संदेश, सूचना और विचारों के आदान-प्रदान को तेज, प्रभावी और सुलभ बनाती है। इसकी अवधारणा इस बात पर आधारित है कि सूचना का प्रसारण तत्काल किया जा सके और वह दृश्य एवं श्रव्य दोनों माध्यमों से प्रभावशाली ढंग से दर्शकों तक पहुँचे। यह पारंपरिक मीडिया की तुलना में अधिक इंटरैक्टिव है, जिसमें दर्शक या श्रोता सीधे प्रतिक्रिया दे सकते हैं। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की अवधारणा तकनीकी प्रगति से गहराई से जुड़ी हुई है। कंप्यूटर, स्मार्टफोन, डिजिटल कैमरा, सैटेलाइट तकनीक, और इंटरनेट ने इस माध्यम को नया आयाम दिया है। यह न केवल सूचना के आदान-प्रदान का साधन है, बल्कि समाज में जनमत निर्माण, नीति निर्धारण, और लोकतांत्रिक विमर्श का प्रमुख मंच भी बन चुका है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आज जनसंवाद का सबसे तीव्र और प्रभावी माध्यम बन चुका है, जो एक क्लिक में पूरी दुनिया से जोड़ देता है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रकार

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के प्रकार अनेक हैं, जिन्हें उनके स्वरूप, प्रसारण तकनीक और प्रयोजन के आधार पर विभाजित किया जा सकता है:

1. **रेडियो** – यह इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का सबसे पुराना और सुलभ रूप है। रेडियो आज भी ग्रामीण भारत में सूचना और मनोरंजन का प्रमुख स्रोत है।
2. **टेलीविज़न** – दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यमों का समन्वय करते हुए यह सबसे प्रभावी जनसंचार माध्यम है। समाचार, धारावाहिक, विज्ञापन, शैक्षिक कार्यक्रम आदि इसके प्रमुख घटक हैं।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

3. **फिल्में और डॉक्यूमेंट्री** – सिनेमा भी एक प्रकार का इलेक्ट्रॉनिक माध्यम है जो समाज की भावनाओं, संस्कृति और मुद्दों को दृश्य रूप में प्रस्तुत करता है।
4. **इंटरनेट और सोशल मीडिया** – आधुनिक इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का सबसे शक्तिशाली रूप। फेसबुक, ट्विटर, यूट्यूब, इंस्टाग्राम और न्यूज वेबसाइटें आज सूचना का प्रमुख स्रोत हैं।
5. **मोबाइल संचार** – मोबाइल फोन और ऐप्स ने सूचना और मनोरंजन को हर व्यक्ति की जेब में ला दिया है।

इन सभी माध्यमों ने मिलकर एक वैश्विक संचार प्रणाली का निर्माण किया है जो भौगोलिक सीमाओं से परे जाकर विचारों और सूचनाओं का मुक्त प्रवाह सुनिश्चित करती है।

2.1.2 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का स्वरूप

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का स्वरूप अत्यंत गतिशील और परिवर्तनशील है। यह तकनीकी विकास और उपभोक्ता की अपेक्षाओं के साथ निरंतर विकसित हो रहा है। इसका स्वरूप बहुआयामी है जिसमें दृश्य, श्रव्य, और पाठ्य तीनों रूपों का संयोजन देखने को मिलता है। प्रारंभ में इसका स्वरूप केवल प्रसारण आधारित था जैसे रेडियो और टेलीविज़न। परंतु डिजिटल युग में यह इंटरएक्टिव बन गया है। अब दर्शक केवल सूचना के उपभोक्ता नहीं बल्कि सक्रिय भागीदार भी हैं। उदाहरण के लिए, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म दर्शकों को प्रतिक्रिया देने, टिप्पणी करने और अपनी राय साझा करने का अवसर प्रदान करते हैं। इसके अलावा, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का स्वरूप बहुभाषीय और बहुसांस्कृतिक हो चुका है। वैश्वीकरण ने इसकी पहुँच को विश्वव्यापी बना दिया है। अब एक देश में बनी सामग्री दूसरे देश में तुरंत देखी या सुनी जा सकती है। यह वैश्विक संवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का सेतु बन चुका है।

तकनीकी आधार

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की नींव तकनीकी उन्नति पर आधारित है। रेडियो तरंगें, सैटेलाइट ट्रांसमिशन, डिजिटल कोडिंग, इंटरनेट प्रोटोकॉल, और क्लाउड स्टोरेज इसके प्रमुख तकनीकी घटक हैं।

प्रारंभिक चरण में यह एनालॉग तकनीक पर आधारित था, जहाँ संकेत विद्युत रूप में प्रसारित होते थे। लेकिन आज इसका अधिकांश हिस्सा डिजिटल तकनीक में परिवर्तित हो गया है। डिजिटल तकनीक के कारण डेटा का संपीड़न, भंडारण, संपादन और प्रसारण अधिक तेज और सटीक हो गया है।

तकनीकी आधार के प्रमुख तत्व:

1. **सैटेलाइट संचार:** दूरस्थ क्षेत्रों तक प्रसारण पहुँचाने के लिए।
2. **फाइबर ऑप्टिक नेटवर्क:** उच्च गति के डेटा ट्रांसमिशन के लिए।
3. **इंटरनेट प्रोटोकॉल:** डिजिटल सामग्री के साझा और वितरण के लिए।
4. **डिजिटल एडिटिंग सॉफ्टवेयर:** समाचार, वीडियो और ऑडियो सामग्री के संपादन के लिए।

इस प्रकार, तकनीकी प्रगति ने इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को न केवल तेज बल्कि अधिक विश्वसनीय और प्रभावी बना दिया है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की विशेषताएँ

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की कुछ प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:

1. **तात्कालिकता:** सूचना का प्रसारण तत्काल किया जा सकता है। समाचार लाइव देखे या सुने जा सकते हैं।
2. **दृश्य और श्रव्य प्रभाव:** चित्र, ध्वनि और वीडियो के माध्यम से संदेश अधिक प्रभावी ढंग से पहुँचता है।
3. **इंटरएक्टिविटी:** दर्शक या श्रोता सीधे प्रतिक्रिया दे सकते हैं।
4. **विस्तृत पहुँच:** वैश्विक स्तर पर एक ही समय में करोड़ों लोग सूचना प्राप्त कर सकते हैं।
5. **विविधता:** इसमें समाचार, शिक्षा, मनोरंजन, विज्ञापन, और सामाजिक अभियान जैसे विभिन्न प्रकार की सामग्री सम्मिलित होती है।
6. **लागत प्रभावशीलता:** डिजिटल माध्यमों ने सामग्री के उत्पादन और वितरण की लागत को कम किया है।



इन्हीं विशेषताओं के कारण इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आज समाज में सूचना और जनमत निर्माण का सबसे शक्तिशाली माध्यम बन चुका है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की सामाजिक भूमिका

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया समाज में केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं है बल्कि सामाजिक चेतना और जनजागरण का महत्वपूर्ण साधन भी है। यह सामाजिक मुद्दों को उजागर करता है, लोकतांत्रिक मूल्यों को सशक्त करता है और नागरिकों को अपने अधिकारों के प्रति जागरूक बनाता है। वर्तमान समय में यह माध्यम शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण, महिला सशक्तिकरण और मानवाधिकार जैसे विषयों पर व्यापक चर्चा करता है। जनहित कार्यक्रमों, समाचार वाद-विवादों और सामाजिक अभियानों के माध्यम से यह नागरिकों में जागरूकता फैलाने का कार्य करता है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का यह सामाजिक स्वरूप इसे केवल सूचना का साधन नहीं बल्कि परिवर्तन का उत्प्रेरक बनाता है।

2.1.3 प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में अंतर

प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया दोनों ही सूचना प्रसार के प्रमुख साधन हैं, परंतु इनमें अनेक मौलिक अंतर हैं:

क्रमांक	तत्व	प्रिंट मीडिया	इलेक्ट्रॉनिक मीडिया
1	माध्यम	कागज आधारित	डिजिटल और इलेक्ट्रॉनिक आधारित
2	पहुँच	सीमित, स्थानीय	वैश्विक, तुरंत प्रसार योग्य
3	प्रतिक्रिया	धीमी, पत्र या ईमेल द्वारा	तत्काल, लाइव चैट या कमेंट द्वारा
4	स्वरूप	पाठ आधारित	दृश्य, श्रव्य और ऑडियो-विजुअल
5	अद्यतनता	स्थिर सामग्री	निरंतर अपडेट होने वाली सामग्री
6	लागत	मुद्रण व वितरण लागत अधिक	डिजिटल प्रसारण में कम लागत
7	प्रभाव	बौद्धिक प्रभाव अधिक	भावनात्मक और दृश्य प्रभाव अधिक

इस प्रकार, दोनों माध्यमों की अपनी-अपनी विशेषताएँ हैं, परंतु आधुनिक समय में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का प्रभाव और पहुँच कहीं अधिक व्यापक हो गया है।

प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का तुलनात्मक अध्ययन

यदि तुलनात्मक रूप से देखा जाए तो प्रिंट मीडिया जहाँ गहराई और स्थायित्व प्रदान करता है, वहीं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया गति और व्यापकता का प्रतीक है। उदाहरण के लिए, अखबार में प्रकाशित समाचार को पढ़ने में समय लगता है, जबकि वही समाचार टीवी या इंटरनेट पर तुरंत देखा जा सकता है। इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का दृश्य और श्रव्य स्वरूप इसे अधिक आकर्षक और प्रभावशाली बनाता है। दूसरी ओर, प्रिंट मीडिया में गहन विश्लेषण और अध्ययन की गुंजाइश होती है। दोनों माध्यमों का समन्वित उपयोग आज के सूचना युग की आवश्यकता बन चुका है, जहाँ 'मल्टीमीडिया जर्नलिज्म' की अवधारणा तेजी से उभर रही है।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया आधुनिक संचार युग की आत्मा है। इसने न केवल सूचना के प्रसार को सरल और त्वरित बनाया है, बल्कि सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में क्रांति ला दी है। इसका स्वरूप तकनीकी विकास के साथ निरंतर बदल रहा है और भविष्य में कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), वर्चुअल रियलिटी (VR), और ऑगमेंटेड रियलिटी (AR) जैसी तकनीकें इसे और भी शक्तिशाली बना देंगी। प्रिंट मीडिया जहाँ विचार की गहराई का प्रतीक है, वहीं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया विचारों के प्रसार की गति का प्रतीक है। दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं और मिलकर एक सशक्त सूचना तंत्र का निर्माण करते हैं। अतः इलेक्ट्रॉनिक मीडिया केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि आधुनिक समाज की धड़कन है जो विश्व को एक वैश्विक गाँव में परिवर्तित कर रही है।



इकाई 2.2: पत्रकारिता और समाज में इसकी भूमिका

2.2.1 पत्रकारिता का अर्थ और स्वरूप

परिभाषा

पत्रकारिता को समझने के लिए हमें सबसे पहले इसकी मूल अवधारणा को गहराई से समझना होगा। पत्रकारिता केवल समाचारों का संकलन और प्रस्तुतीकरण नहीं है, बल्कि यह एक व्यापक सामाजिक प्रक्रिया है जो समाज के विभिन्न पहलुओं को जोड़ने और जनता तक सूचना पहुंचाने का महत्वपूर्ण कार्य करती है। पत्रकारिता शब्द की व्युत्पत्ति 'पत्र' और 'कारिता' से हुई है। 'पत्र' का अर्थ है समाचार पत्र या संवाद माध्यम, जबकि 'कारिता' का अर्थ है किसी कार्य को करने की कला या व्यवसाय। इस प्रकार पत्रकारिता का शाब्दिक अर्थ है समाचार पत्रों या संचार माध्यमों के लिए सामग्री एकत्रित करना, संपादित करना और प्रस्तुत करना।

विद्वानों ने पत्रकारिता की विभिन्न परिभाषाएं प्रस्तुत की हैं। प्रसिद्ध पत्रकार और विचारक जोसेफ पुलित्जर के अनुसार, पत्रकारिता एक सार्वजनिक सेवा है जिसका उद्देश्य समाज को सूचित करना, शिक्षित करना और मनोरंजन करना है। उनका मानना था कि पत्रकारिता का प्राथमिक कर्तव्य जनता के प्रति होता है, न कि किसी विशेष समूह या सत्ता के प्रति। भारतीय संदर्भ में पत्रकारिता की परिभाषा को और अधिक व्यापक रूप से देखा जा सकता है। महात्मा गांधी ने पत्रकारिता को जनसेवा का माध्यम माना था। उनके अनुसार, पत्रकारिता का उद्देश्य समाज में व्याप्त बुराइयों को उजागर करना और सामाजिक परिवर्तन लाना है। उन्होंने अपने समाचार पत्रों 'यंग इंडिया' और 'हरिजन' के माध्यम से स्वतंत्रता आंदोलन को गति दी और सामाजिक सुधार के लिए जनमत तैयार किया।

आधुनिक परिभाषा के अनुसार, पत्रकारिता एक व्यवस्थित और नियमित प्रक्रिया है जिसमें सूचनाओं का संकलन, सत्यापन, विश्लेषण और प्रसारण शामिल है। यह एक पेशेवर गतिविधि है जो निश्चित नैतिक मानकों और सिद्धांतों का पालन करती है। पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य समाज को प्रासंगिक, सटीक और निष्पक्ष जानकारी प्रदान करना है ताकि नागरिक सूचित निर्णय ले सकें। पत्रकारिता की परिभाषा को पूर्ण रूप से समझने के लिए हमें इसके कुछ मूलभूत तत्वों को समझना आवश्यक है।

पहला तत्व है सत्यता और तथ्यात्मकता। पत्रकारिता में प्रस्तुत की जाने वाली प्रत्येक सूचना सत्य और तथ्यों पर आधारित होनी चाहिए। दूसरा महत्वपूर्ण तत्व है निष्पक्षता। एक पत्रकार को अपनी व्यक्तिगत राय या पूर्वाग्रह को समाचार प्रस्तुति में हस्तक्षेप नहीं करने देना चाहिए। तीसरा तत्व है समयबद्धता। पत्रकारिता में समाचार की प्रासंगिकता और समयबद्धता अत्यंत महत्वपूर्ण है। पत्रकारिता का स्वरूप समय के साथ विकसित हुआ है। प्रारंभ में पत्रकारिता मुख्य रूप से मुद्रित माध्यम तक सीमित थी, लेकिन आज यह रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट और सोशल मीडिया सहित विभिन्न माध्यमों में विस्तारित हो गई है। डिजिटल युग में पत्रकारिता का स्वरूप और भी गतिशील और बहुआयामी हो गया है।

पत्रकारिता



चित्र 2.1: पत्रकारिता

पत्रकारिता के प्रकार

पत्रकारिता एक विविधतापूर्ण क्षेत्र है और इसे विभिन्न आधारों पर वर्गीकृत किया जा सकता है। माध्यम के आधार पर, विषयवस्तु के आधार पर, और प्रस्तुति की शैली के आधार पर पत्रकारिता के अनेक प्रकार हैं। आइए इन विभिन्न प्रकारों को विस्तार से समझें।



चित्र 2.2: पत्रकारिता के प्रकार

माध्यम के आधार पर पत्रकारिता के प्रकार:

प्रिंट पत्रकारिता सबसे पुराना और परंपरागत रूप है। इसमें समाचार पत्र, पत्रिकाएं, साप्ताहिक और पाक्षिक प्रकाशन शामिल हैं। प्रिंट पत्रकारिता की अपनी विशेष शक्ति है - यह गहन विश्लेषण, विस्तृत रिपोर्टिंग और स्थायी दस्तावेजीकरण प्रदान करती है। पाठक अपनी सुविधा के अनुसार इसे पढ़ सकते हैं और जरूरत पड़ने पर बार-बार संदर्भित कर सकते हैं। भारत में 'द टाइम्स ऑफ इंडिया', 'हिंदुस्तान', 'दैनिक भास्कर', 'नवभारत टाइम्स' जैसे प्रमुख समाचार पत्र इस श्रेणी में आते हैं। इलेक्ट्रॉनिक या प्रसारण पत्रकारिता में रेडियो और टेलीविजन शामिल हैं। रेडियो पत्रकारिता ध्वनि के माध्यम से समाचार प्रसारित करती है और इसकी पहुंच व्यापक है, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में। आकाशवाणी भारत में रेडियो पत्रकारिता का प्रमुख उदाहरण है। टेलीविजन पत्रकारिता दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यमों का उपयोग करती है, जिससे यह अधिक प्रभावी और आकर्षक बन जाती है। समाचार चैनल जैसे आज तक, एनडीटीव, इंडिया टीवी इस श्रेणी के प्रमुख उदाहरण हैं।

डिजिटल या ऑनलाइन पत्रकारिता आधुनिक युग का सबसे तेजी से विकसित होने वाला क्षेत्र है। इसमें वेबसाइट आधारित समाचार पोर्टल, ब्लॉग, पॉडकास्ट और मोबाइल एप्लिकेशन शामिल हैं। डिजिटल पत्रकारिता की सबसे बड़ी विशेषता इसकी तात्कालिकता और इंटरैक्टिविटी है। पाठक न केवल समाचार पढ़ते हैं बल्कि

टिप्पणियों और साझाकरण के माध्यम से उसमें भागीदारी भी करते हैं। द वायर, स्क्रॉल, क्रिट जैसे डिजिटल समाचार पोर्टल इस श्रेणी में प्रमुख हैं।

विषयवस्तु के आधार पर पत्रकारिता के प्रकार:

खोजी पत्रकारिता एक विशेष प्रकार की पत्रकारिता है जो गहन शोध और जांच-पड़ताल पर आधारित होती है। इसमें पत्रकार किसी मुद्दे की गहराई में जाकर छिपे हुए तथ्यों को उजागर करते हैं। यह भ्रष्टाचार, घोटालों, और सामाजिक अन्याय को उजागर करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। वाटरगेट कांड की रिपोर्टिंग खोजी पत्रकारिता का एक क्लासिक उदाहरण है। भारत में भी कोलगेट घोटाला, राष्ट्रमंडल खेल घोटाला जैसे मामलों को खोजी पत्रकारिता ने ही उजागर किया। विशिष्ट या विशेषीकृत पत्रकारिता में किसी विशेष क्षेत्र पर केंद्रित रिपोर्टिंग होती है। इसमें खेल पत्रकारिता, व्यापार पत्रकारिता, स्वास्थ्य पत्रकारिता, विज्ञान पत्रकारिता, फैशन पत्रकारिता, और मनोरंजन पत्रकारिता शामिल हैं। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशेष शब्दावली, संदर्भ और पाठक वर्ग होता है। उदाहरण के लिए, खेल पत्रकार को खेल के नियमों, खिलाड़ियों और टूर्नामेंटों की गहरी जानकारी होनी चाहिए।

राजनीतिक पत्रकारिता सरकारी नीतियों, चुनावों, राजनीतिक दलों और राजनेताओं की गतिविधियों पर केंद्रित होती है। यह लोकतंत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है क्योंकि यह सरकार और जनता के बीच सेतु का काम करती है। राजनीतिक पत्रकारों को राजनीतिक प्रक्रियाओं, कानून और शासन व्यवस्था की गहरी समझ होनी आवश्यक है। सामाजिक पत्रकारिता समाज में व्याप्त विभिन्न मुद्दों जैसे शिक्षा, स्वास्थ्य, लैंगिक समानता, बाल अधिकार, पर्यावरण और सामाजिक न्याय पर केंद्रित होती है। यह सामाजिक परिवर्तन लाने और जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। गणिका पुनर्वास, बाल श्रम उन्मूलन, और महिला सशक्तिकरण जैसे मुद्दों पर सामाजिक पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है।

प्रस्तुति की शैली के आधार पर पत्रकारिता के प्रकार:

व्याख्यात्मक या विश्लेषणात्मक पत्रकारिता में केवल तथ्यों को प्रस्तुत करने के बजाय उनका गहन विश्लेषण किया जाता है। इसमें पत्रकार घटनाओं के कारणों, प्रभावों



और संदर्भ को समझाता है। यह पाठकों को किसी मुद्दे की व्यापक समझ प्रदान करती है। संपादकीय लेख, विशेष रिपोर्ट और विश्लेषणात्मक लेख इस श्रेणी में आते हैं। फोटो पत्रकारिता में मुख्य रूप से छवियों या तस्वीरों के माध्यम से कहानी बयान की जाती है। एक शक्तिशाली तस्वीर हजार शब्दों से अधिक प्रभावी हो सकती है। युद्ध, प्राकृतिक आपदाओं, सामाजिक आंदोलनों की तस्वीरें गहरा प्रभाव छोड़ती हैं। प्रसिद्ध फोटो पत्रकार रघु राय और प्रमोद पुष्करणा के काम इस क्षेत्र में मील के पथर हैं। साहित्यिक पत्रकारिता में तथ्यात्मक रिपोर्टिंग को साहित्यिक शैली में प्रस्तुत किया जाता है। इसमें पत्रकार विवरणात्मक भाषा, कथात्मक तकनीकों और साहित्यिक उपकरणों का उपयोग करते हैं। यह पाठकों को न केवल जानकारी देती है बल्कि भावनात्मक रूप से भी जोड़ती है। पंकज मिश्रा और अमिताव घोष की कुछ रचनाएं साहित्यिक पत्रकारिता के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

डेटा पत्रकारिता आधुनिक युग का एक नया रूप है जिसमें बड़े डेटा सेट का विश्लेषण करके कहानियां निकाली जाती हैं। इसमें सांख्यिकीय विश्लेषण, इन्फोग्राफिक्स और विजुअलाइज़ेशन का उपयोग होता है। चुनाव परिणाम विश्लेषण, बजट व्याख्या, और जनसंख्या अध्ययन में डेटा पत्रकारिता का व्यापक उपयोग हो रहा है। नागरिक पत्रकारिता एक अपेक्षाकृत नया लेकिन महत्वपूर्ण प्रकार है जिसमें आम नागरिक स्वयं समाचार संकलन और प्रसारण में भागीदारी करते हैं। सोशल मीडिया के युग में यह तेजी से बढ़ रहा है। स्मार्टफोन और इंटरनेट की पहुंच ने हर नागरिक को संभावित पत्रकार बना दिया है। प्रत्येक प्रकार की पत्रकारिता की अपनी विशेषताएं, चुनौतियां और अवसर हैं। एक कुशल पत्रकार को इन विभिन्न प्रकारों की समझ होनी चाहिए और आवश्यकतानुसार विभिन्न शैलियों को अपनाने में सक्षम होना चाहिए।

2.1.2 समाज में पत्रकारिता की भूमिका

सूचना प्रदाता

पत्रकारिता की सबसे मूलभूत और प्राथमिक भूमिका समाज को सूचना प्रदान करना है। यह भूमिका इतनी महत्वपूर्ण है कि इसे पत्रकारिता का प्राथमिक कर्तव्य माना जाता है। आइए इस भूमिका को विभिन्न पहलुओं से समझें। सूचना प्रदाता के रूप में पत्रकारिता का पहला और सबसे महत्वपूर्ण कार्य दैनिक घटनाओं की जानकारी देना

है। हर दिन स्थानीय, राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर अनगिनत घटनाएं घटती हैं। पत्रकारिता इन घटनाओं को संकलित करती है, उन्हें सत्यापित करती है, और फिर जनता तक पहुंचाती है। यह प्रक्रिया इतनी महत्वपूर्ण है कि इसके बिना समाज का संचालन ही कठिन हो जाएगा। कल्पना कीजिए एक ऐसे समाज की जहां कोई पत्रकारिता नहीं है। लोगों को अपने शहर, राज्य या देश में क्या हो रहा है, इसकी कोई जानकारी नहीं होगी। सरकारी नीतियों, नए कानूनों, आर्थिक परिवर्तनों, मौसम की स्थिति, स्वास्थ्य चेतावनियों - किसी भी महत्वपूर्ण सूचना तक लोगों की पहुंच नहीं होगी। यह अराजकता और असुरक्षा की स्थिति होगी।

सूचना प्रदाता के रूप में पत्रकारिता केवल तथ्यों का संकलन नहीं करती, बल्कि उन्हें सुव्यवस्थित और समझने योग्य रूप में प्रस्तुत करती है। एक जटिल आर्थिक नीति को सरल भाषा में समझाना, एक वैज्ञानिक खोज को आम जनता के लिए सुलभ बनाना, या एक कानूनी मुद्दे को स्पष्ट तरीके से प्रस्तुत करना - ये सभी पत्रकारिता की सूचना प्रदाता भूमिका के महत्वपूर्ण पहलू हैं। सूचना प्रदाता की भूमिका में समयबद्धता अत्यंत महत्वपूर्ण है। प्राकृतिक आपदा, आतंकवादी हमला, या महामारी जैसी आपातकालीन स्थितियों में तुरंत और सटीक सूचना जीवन और मृत्यु का प्रश्न बन सकती है। 2004 की सुनामी हो या कोविड-19 महामारी, पत्रकारिता ने समयबद्ध सूचना प्रदान करके लाखों लोगों की जान बचाने में मदद की। पत्रकारिता सूचना को केवल एकतरफा नहीं प्रवाहित करती, बल्कि विभिन्न दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करती है। किसी भी मुद्दे पर विभिन्न पक्षों के विचार, विशेषज्ञों की राय, और जनता की प्रतिक्रिया को समाहित करके एक संतुलित सूचना प्रदान करना पत्रकारिता का महत्वपूर्ण कार्य है। यह बहुआयामी सूचना नागरिकों को सूचित निर्णय लेने में सहायता करती है।

आधुनिक युग में सूचना की अधिकता एक नई चुनौती है। इंटरनेट और सोशल मीडिया पर हर पल अनगिनत सूचनाएं उपलब्ध हैं, जिनमें से कई भ्रामक या झूठी होती हैं। इस संदर्भ में पत्रकारिता की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। व्यावसायिक पत्रकारिता सूचनाओं को सत्यापित करती है, फर्जी खबरों को पहचानती है, और विश्वसनीय जानकारी प्रदान करती है। यह 'फैक्ट-चेकिंग' का कार्य आज अत्यंत महत्वपूर्ण है। सूचना प्रदाता के रूप में पत्रकारिता का एक और महत्वपूर्ण पहलू है संदर्भ प्रदान करना। किसी घटना को केवल बताना ही पर्याप्त नहीं है, उसके

पीछे के संदर्भ, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, और व्यापक निहितार्थों को समझाना भी आवश्यक है। उदाहरण के लिए, जब सरकार कोई नई आर्थिक नीति घोषित करती है, तो पत्रकारिता केवल नीति की घोषणा नहीं करती, बल्कि यह भी बताती है कि यह नीति क्यों लाई गई, इसका आम आदमी पर क्या प्रभाव पड़ेगा, और इसकी तुलना पहले की नीतियों से कैसे की जा सकती है। शिक्षा और जागरूकता फैलाना भी सूचना प्रदाता भूमिका का हिस्सा है। स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, वित्तीय साक्षरता, कानूनी अधिकार, नागरिक कर्तव्य - इन सभी विषयों पर पत्रकारिता नियमित रूप से जानकारी प्रदान करती है। यह समाज को अधिक सूचित और सशक्त बनाता है। क्षेत्रीय और स्थानीय सूचना प्रदान करना भी पत्रकारिता का महत्वपूर्ण कार्य है। राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय समाचारों के साथ-साथ स्थानीय मुद्दों, घटनाओं और चिंताओं को उजागर करना आवश्यक है। स्थानीय पत्रकारिता समुदाय को एकजुट करती है और स्थानीय समस्याओं का समाधान खोजने में मदद करती है।

लोकतंत्र का चौथा स्तंभ

लोकतंत्र में पत्रकारिता को 'चौथे स्तंभ' के रूप में मान्यता दी गई है। यह उपाधि केवल एक अलंकार नहीं है, बल्कि लोकतांत्रिक व्यवस्था में पत्रकारिता की अत्यंत महत्वपूर्ण और अपरिहार्य भूमिका को दर्शाती है। आइए इस भूमिका को गहराई से समझें।



चित्र 2.3: लोकतंत्र का चौथा स्तंभ

लोकतंत्र के तीन पारंपरिक स्तंभ हैं - विधायिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका। ये तीनों स्तंभ एक-दूसरे की जांच करते हैं और संतुलन बनाए रखते हैं। पत्रकारिता को चौथा स्तंभ इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह इन तीनों स्तंभों की निगरानी करती है और जनता को उनके कार्यों से अवगत कराती है। यह एक निगरानी तंत्र के रूप में कार्य करती है। पत्रकारिता सरकार और शासन व्यवस्था की जवाबदेही सुनिश्चित करती है। किसी भी लोकतांत्रिक व्यवस्था में यह आवश्यक है कि जनता द्वारा चुने गए प्रतिनिधि और नियुक्त अधिकारी अपने कार्यों के लिए जवाबदेह हों। पत्रकारिता इस जवाबदेही को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह सरकारी नीतियों का विश्लेषण करती है, अधिकारियों के कार्यों की समीक्षा करती है, और भ्रष्टाचार व दुराचार को उजागर करती है।

भारत में वॉटरगेट-प्रकार के कई घोटाले पत्रकारिता द्वारा ही उजागर किए गए हैं। बोफोर्स कांड, हर्षद मेहता घोटाला, 2जी स्पेक्ट्रम घोटाला, कोलगेट घोटाला - इन सभी को खोजी पत्रकारिता ने उजागर किया। इन मामलों में पत्रकारिता ने न केवल जनता को सूचित किया बल्कि दोषियों को न्याय के कटघरे में खड़ा करने में भी मदद की। पत्रकारिता सत्ता और आम जनता के बीच सेतु का काम करती है। लोकतंत्र में शक्ति जनता के हाथों में होती है, लेकिन यह शक्ति तभी प्रभावी होती है जब जनता सूचित और जागरूक हो। पत्रकारिता यह सुनिश्चित करती है कि नागरिकों को सरकार के कार्यों, नीतियों और निर्णयों की पूर्ण जानकारी मिले ताकि वे अपने मताधिकार और अन्य लोकतांत्रिक अधिकारों का सार्थक उपयोग कर सकें। पत्रकारिता का यह स्तंभ पारदर्शिता को बढ़ावा देता है। एक स्वस्थ लोकतंत्र में शासन व्यवस्था पारदर्शी होनी चाहिए। पत्रकारिता सूचना के अधिकार (RTI) जैसे कानूनों का उपयोग करके सरकारी कार्यों में पारदर्शिता लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। यह छिपे हुए तथ्यों को उजागर करती है और गुप्त सौदों की जांच करती है।

विपक्ष और आलोचनात्मक आवाज़ों को मंच प्रदान करना भी चौथे स्तंभ का महत्वपूर्ण कार्य है। लोकतंत्र में बहुलवाद आवश्यक है। पत्रकारिता विभिन्न राजनीतिक दलों, नागरिक समूहों और व्यक्तियों को अपनी राय व्यक्त करने का अवसर देती है। यह सुनिश्चित करती है कि सत्ता पक्ष के साथ-साथ विपक्ष और आलोचकों की आवाज़ भी जनता तक पहुंचे। चुनावों में पत्रकारिता की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

चुनाव लोकतंत्र का सबसे महत्वपूर्ण उत्सव है। पत्रकारिता उम्मीदवारों की पृष्ठभूमि, उनके घोषणापत्र, और उनके पिछले कार्यों की जानकारी प्रदान करती है। यह चुनाव प्रक्रिया की निगरानी करती है और किसी भी अनियमितता को उजागर करती है। मतदाता शिक्षा में भी पत्रकारिता महत्वपूर्ण योगदान देती है। नीति निर्माण में भी पत्रकारिता अप्रत्यक्ष रूप से भागीदारी करती है। जब पत्रकारिता किसी सामाजिक समस्या को उजागर करती है और उस पर व्यापक चर्चा करती है, तो यह सरकार को उस मुद्दे पर नीति बनाने के लिए प्रेरित करती है। निर्भया कांड के बाद बलात्कार कानूनों में संशोधन, या जेसिका लाल हत्याकांड के बाद न्याय प्रक्रिया में सुधार - ये सब पत्रकारिता के दबाव का परिणाम थे।

अल्पसंख्यकों और हाशिए पर पड़े समूहों की आवाज़ को मुख्यधारा में लाना भी चौथे स्तंभ का महत्वपूर्ण कार्य है। लोकतंत्र में बहुमत का शासन होता है, लेकिन अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा भी उतनी ही आवश्यक है। पत्रकारिता यह सुनिश्चित करती है कि आदिवासी, दलित, महिलाएं, विकलांग व्यक्ति, और अन्य हाशिए के समूहों की चिंताएं और समस्याएं सामने आएं। संवैधानिक मूल्यों की रक्षा में भी पत्रकारिता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जब कभी संविधान के मूल सिद्धांतों - स्वतंत्रता, समानता, न्याय, बंधुत्व - पर खतरा होता है, तो पत्रकारिता इन मूल्यों की रक्षा के लिए खड़ी होती है। आपातकाल (1975-77) के दौरान जब अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर प्रतिबंध लगाया गया, तो कुछ साहसी पत्रकारों ने इसका विरोध किया और लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा की। अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर भारत की छवि निर्माण में भी पत्रकारिता भूमिका निभाती है।

विदेशी मीडिया भारत के बारे में जो समाचार प्रसारित करता है, और भारतीय मीडिया अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर जो रिपोर्टिंग करता है, वह भारत की वैश्विक छवि को प्रभावित करता है। एक जिम्मेदार पत्रकारिता देश की सकारात्मक और संतुलित छवि प्रस्तुत करती है। लोकतंत्र के चौथे स्तंभ के रूप में पत्रकारिता की स्वतंत्रता अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि पत्रकारिता किसी दबाव, भय या प्रलोभन में आकर अपनी भूमिका नहीं निभा पाती, तो लोकतंत्र कमजोर हो जाता है। इसलिए प्रेस की स्वतंत्रता को संविधान में मौलिक अधिकार के रूप में संरक्षित किया गया है। हालांकि, यह भी याद रखना महत्वपूर्ण है कि स्वतंत्रता के साथ जिम्मेदारी भी आती है। पत्रकारिता को अपनी शक्ति

का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। 'ट्रायल बाई मीडिया' जैसी प्रवृत्तियां लोकतंत्र के लिए हानिकारक हैं। पत्रकारिता को निष्पक्ष, तथ्यात्मक और जिम्मेदार रहना चाहिए।

जनमत निर्माण

पत्रकारिता की तीसरी महत्वपूर्ण भूमिका जनमत निर्माण में है। यह एक सूक्ष्म लेकिन शक्तिशाली प्रक्रिया है जिसके माध्यम से पत्रकारिता समाज की सोच, दृष्टिकोण और मूल्यों को प्रभावित करती है। आइए इस भूमिका को विस्तार से समझें। जनमत का अर्थ है किसी विशेष मुद्दे पर जनता की सामूहिक राय या दृष्टिकोण। यह राय विभिन्न स्रोतों से प्रभावित होती है - व्यक्तिगत अनुभव, शिक्षा, परिवार, समुदाय, और सबसे महत्वपूर्ण रूप से मीडिया। पत्रकारिता जनमत निर्माण में केंद्रीय भूमिका निभाती है क्योंकि यह लोगों को सूचना प्रदान करती है और मुद्दों पर चर्चा का मंच देती है। पत्रकारिता एजेंडा सेटिंग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। एजेंडा सेटिंग का सिद्धांत कहता है कि मीडिया यह निर्धारित करता है कि लोग किस बारे में सोचें, भले ही यह न बताए कि क्या सोचें। जिन मुद्दों को पत्रकारिता महत्व देती है और जिन्हें बार-बार कवर करती है, वे जनता की चेतना में केंद्रीय स्थान ले लेते हैं। उदाहरण के लिए, यदि मीडिया भ्रष्टाचार को बड़े पैमाने पर कवर करता है, तो यह जनता के लिए एक प्रमुख मुद्दा बन जाता है।

फ्रेमिंग भी जनमत निर्माण का महत्वपूर्ण पहलू है। फ्रेमिंग का अर्थ है किसी मुद्दे को एक विशेष दृष्टिकोण से प्रस्तुत करना। एक ही घटना को विभिन्न तरीकों से फ्रेम किया जा सकता है और प्रत्येक फ्रेम जनता की धारणा को अलग तरीके से प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, किसी विरोध प्रदर्शन को 'नागरिक अधिकारों के लिए शांतिपूर्ण आंदोलन' या 'कानून व्यवस्था की समस्या' के रूप में फ्रेम किया जा सकता है। दोनों फ्रेमिंग जनमत को अलग-अलग दिशा में ले जाएंगे। पत्रकारिता विभिन्न विचारों और दृष्टिकोणों को प्रस्तुत करके जनमत को आकार देती है। संपादकीय लेख, टिप्पणियां, विशेषज्ञों के साक्षात्कार, और बहस कार्यक्रम ऐसे मंच हैं जहां विभिन्न विचार व्यक्त किए जाते हैं। यह बहुलवाद जनमत के स्वस्थ निर्माण के लिए आवश्यक है। जब लोग विभिन्न पक्षों को सुनते हैं, तो वे अधिक सूचित और संतुलित राय बना पाते हैं। सामाजिक मुद्दों पर जागरूकता फैलाकर पत्रकारिता जनमत को बदल सकती है।



ऐतिहासिक रूप से, पत्रकारिता ने दासता उन्मूलन, महिला मताधिकार, नागरिक अधिकार आंदोलन जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तनों में भूमिका निभाई है। भारत में भी बाल विवाह, सती प्रथा, दहेज प्रथा जैसी सामाजिक बुराइयों के खिलाफ जनमत बनाने में पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पत्रकारिता प्राइमिंग के माध्यम से भी जनमत को प्रभावित करती है। प्राइमिंग का अर्थ है कि मीडिया जिन मानदंडों को उजागर करता है, लोग उन्हीं मानदंडों के आधार पर नेताओं और नीतियों का मूल्यांकन करते हैं। यदि मीडिया आर्थिक प्रदर्शन पर ध्यान केंद्रित करता है, तो लोग सरकार का मूल्यांकन आर्थिक संकेतकों के आधार पर करेंगे। यदि मीडिया भ्रष्टाचार पर केंद्रित है, तो ईमानदारी मूल्यांकन का मुख्य मानदंड बन जाएगी।

जनमत निर्माण में पत्रकारिता की भाषा और शैली भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। भावनात्मक भाषा, नाटकीय प्रस्तुति, और सनसनीखेज शीर्षक जनमत को तीव्रता से प्रभावित कर सकते हैं। जिम्मेदार पत्रकारिता संतुलित और तथ्यात्मक भाषा का उपयोग करती है, जबकि पीत पत्रकारिता भावनाओं को भड़काने वाली भाषा का उपयोग करती है। सोशल मीडिया के युग में जनमत निर्माण की प्रक्रिया और भी जटिल हो गई है। परंपरागत पत्रकारिता के साथ-साथ सोशल मीडिया भी जनमत को प्रभावित करता है। वायरल कंटेंट, मीम्स, और ट्रेंडिंग टॉपिक्स तेजी से जनमत को आकार देते हैं। इस संदर्भ में व्यावसायिक पत्रकारिता की जिम्मेदारी बढ़ जाती है कि वह सत्यापित और विश्वसनीय सूचना प्रदान करे।

पत्रकारिता चुनावी जनमत को भी महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करती है। चुनाव पूर्व सर्वेक्षण, उम्मीदवारों की प्रोफाइलिंग, बहस का प्रसारण - ये सब मतदाताओं की राय को प्रभावित करते हैं। अध्ययनों से पता चला है कि मीडिया कवरेज चुनाव परिणामों को प्रभावित कर सकती है। हालांकि, जनमत निर्माण में पत्रकारिता की भूमिका एक दोधारी तलवार है। जहां यह सकारात्मक सामाजिक परिवर्तन ला सकती है, वहीं इसका दुरुपयोग भी हो सकता है। प्रचार, दुष्प्रचार, और फेक न्यूज के माध्यम से जनमत को गलत दिशा में भी ले जाया जा सकता है। इसलिए पत्रकारिता की नैतिकता और जिम्मेदारी अत्यंत महत्वपूर्ण है। विविधता और प्रतिनिधित्व भी जनमत निर्माण में महत्वपूर्ण हैं। यदि पत्रकारिता केवल एक वर्ग, क्षेत्र, या विचारधारा का प्रतिनिधित्व

करती है, तो जनमत एकांगी हो जाएगा। स्वस्थ लोकतंत्र के लिए यह आवश्यक है कि मीडिया में विविधता हो और विभिन्न समूहों को प्रतिनिधित्व मिले। पत्रकारिता द्वारा निर्मित जनमत का प्रभाव व्यापक और दीर्घकालिक होता है। यह न केवल तात्कालिक मुद्दों पर राय को प्रभावित करता है बल्कि समाज के मूल्यों, विश्वासों और संस्कृति को भी आकार देता है। जेंडर समानता, पर्यावरण संरक्षण, मानवाधिकार जैसे विषयों पर आज जो सामाजिक सहमति है, उसमें पत्रकारिता का महत्वपूर्ण योगदान है।

2.2.3 पत्रकारिता के उत्तरदायित्व

सामाजिक उत्तरदायित्व

पत्रकारिता समाज का दर्पण है। यह न केवल सूचना का माध्यम है, बल्कि विचार, जागरूकता और परिवर्तन का भी शक्तिशाली उपकरण है। पत्रकारिता की भूमिका केवल समाचार प्रसारित करने तक सीमित नहीं है, बल्कि यह समाज के नैतिक, सांस्कृतिक और बौद्धिक निर्माण में भी गहराई से जुड़ी हुई है। इसीलिए कहा जाता है “महान शक्ति के साथ महान उत्तरदायित्व भी आता है।” पत्रकारिता की शक्ति उसके सामाजिक प्रभाव में निहित है, और इसी प्रभाव के कारण उसका सामाजिक उत्तरदायित्व अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाता है। सामाजिक उत्तरदायित्व का अर्थ है समाज के व्यापक हित में कार्य करना, जनचेतना का विकास करना, और नागरिकों के अधिकारों एवं गरिमा की रक्षा करना। आइए पत्रकारिता के विभिन्न सामाजिक उत्तरदायित्वों को क्रमवार समझें।

1. सत्य का प्रसार — पत्रकारिता का मूल दायित्व

सत्य का प्रसार पत्रकारिता का सबसे बुनियादी और पवित्र उत्तरदायित्व है। समाज का कल्याण केवल सत्य और तथ्यों पर आधारित जानकारी से ही संभव है। जब पत्रकार असत्य, अधूरा या भ्रामक समाचार प्रसारित करते हैं, तो यह समाज में भ्रम, असुरक्षा और अविश्वास पैदा करता है। अतः प्रत्येक पत्रकार का पहला कर्तव्य है कि वह तथ्यों की पूरी जांच-पड़ताल कर, विश्वसनीय स्रोतों से पुष्टि करके ही सूचना प्रस्तुत करे। स्रोतों का सत्यापन, क्रॉस-चेकिंग और डेटा की प्रामाणिकता की जांच पत्रकारिता की बुनियादी प्रक्रिया का हिस्सा होनी चाहिए। ‘फेक न्यूज’ और अफवाहों के दौर में यह



उत्तरदायित्व और भी बढ़ जाता है। क्योंकि एक गलत सूचना समाज को अस्थिर कर सकती है, वहीं एक सच्ची और सटीक रिपोर्ट जनता के विश्वास को मजबूत करती है।

2. निष्पक्षता और संतुलन बनाए रखना

पत्रकारिता का दूसरा महत्वपूर्ण सामाजिक उत्तरदायित्व निष्पक्षता और संतुलन है। किसी भी समाचार में सभी पक्षों को समान महत्व देना आवश्यक है ताकि जनता एक निष्पक्ष और वस्तुनिष्ठ दृष्टिकोण विकसित कर सके। एकतरफा या पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग न केवल पत्रकारिता की साख को नुकसान पहुँचाती है, बल्कि समाज में विभाजन, घृणा और अविश्वास को भी जन्म देती है। उदाहरणार्थ, किसी सांप्रदायिक या राजनीतिक घटना की रिपोर्टिंग करते समय केवल एक पक्ष को प्रस्तुत करना और दूसरे को अनदेखा करना, गैर-जिम्मेदार पत्रकारिता का उदाहरण है। पत्रकार को सदैव यह ध्यान रखना चाहिए कि उसकी कलम या कैमरा किसी के पक्ष या विरोध में नहीं, बल्कि सत्य के पक्ष में हो।

3. सामाजिक सौहार्द और एकता को बढ़ावा देना

भारत जैसे विविधतापूर्ण समाज में, जहाँ विभिन्न धर्म, जाति, भाषा और संस्कृति के लोग साथ रहते हैं, पत्रकारिता का दायित्व केवल सूचना देना नहीं, बल्कि सामाजिक एकता और सौहार्द को बनाए रखना भी है। पत्रकारिता को ऐसे शब्दों, छवियों और कथाओं से बचना चाहिए जो सांप्रदायिक तनाव, जातिगत वैमनस्य या क्षेत्रीय विभाजन को भड़काते हों। इसके विपरीत, पत्रकारिता को ऐसी कहानियाँ प्रकाशित करनी चाहिए जो पारस्परिक समझ, संवाद और सहयोग को प्रोत्साहित करें। एक संवेदनशील पत्रकार वही होता है जो समाज में सामंजस्य और विश्वास की भावना को मजबूत करे।

4. हाशिए पर पड़े वर्गों की आवाज़ उठाना

पत्रकारिता का एक बड़ा सामाजिक उत्तरदायित्व यह भी है कि वह उन लोगों की आवाज़ बने जिन्हें आमतौर पर कोई नहीं सुनता। समाज में कई वर्ग जैसे गरीब, दलित, आदिवासी, महिलाएं, बच्चे, विकलांग और अल्पसंख्यक अक्सर निर्णय प्रक्रिया से बाहर रह जाते हैं। पत्रकारिता को उनके अधिकारों, समस्याओं और संघर्षों को

मुख्यधारा में लाना चाहिए। यही सच्चे अर्थों में लोकतांत्रिक पत्रकारिता है जो सत्ता के सामने नहीं, बल्कि जनता के साथ खड़ी हो। पत्रकारिता तब ही सार्थक बनती है जब वह निर्बलों की आवाज़ को सशक्त बनाती है और समाज में न्याय और समानता की भावना को मजबूत करती है।

5. बच्चों की सुरक्षा और गोपनीयता का सम्मान

बच्चों और नाबालिगों से जुड़ी रिपोर्टिंग पत्रकारिता के सबसे संवेदनशील क्षेत्रों में से एक है। बाल अपराध, यौन शोषण, या दुर्घटनाओं से संबंधित समाचारों में पत्रकारों को विशेष सावधानी बरतनी चाहिए। किसी नाबालिग की पहचान उजागर करना न केवल अनैतिक है, बल्कि भारतीय कानूनों के तहत दंडनीय अपराध भी है। बच्चे की तस्वीर, नाम या पता प्रकाशित करना उसकी गोपनीयता और सुरक्षा का उल्लंघन है। पत्रकारों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे ऐसी कोई सूचना न दें जो बच्चे की मानसिक स्थिति को आहत करे या उसे सामाजिक रूप से हानि पहुंचाए। पत्रकारिता का यह दायित्व है कि वह बच्चों के अधिकारों और गरिमा की रक्षा करे।

6. महिलाओं के प्रति संवेदनशीलता

महिलाओं से संबंधित मुद्दों की रिपोर्टिंग करते समय पत्रकारों को अत्यधिक संवेदनशीलता और सम्मान का पालन करना चाहिए। यौन उत्पीड़न, घरेलू हिंसा, या लैंगिक भेदभाव जैसे विषयों को प्रस्तुत करते समय "पीड़िता-दोषारोपण" जैसी भाषा या दृष्टिकोण से बचना आवश्यक है। महिला की पहचान, उसकी गरिमा और उसकी निजता की रक्षा करना पत्रकारिता की नैतिक जिम्मेदारी है। मीडिया को यह ध्यान रखना चाहिए कि वह किसी भी रूप में महिलाओं को वस्तु के रूप में प्रस्तुत न करे, न ही ऐसे चित्रण या कथाएँ प्रकाशित करे जो लैंगिक असमानता को बढ़ावा दें। सकारात्मक पत्रकारिता महिलाओं के सशक्तिकरण की दिशा में एक बड़ा कदम हो सकती है।



7. स्वास्थ्य और वैज्ञानिक जानकारी की सटीकता

जनस्वास्थ्य से जुड़ी जानकारी की सटीक रिपोर्टिंग भी पत्रकारिता का अत्यंत महत्वपूर्ण सामाजिक दायित्व है। गलत स्वास्थ्य सूचना लोगों के जीवन को सीधे खतरे में डाल सकती है। उदाहरण के लिए, कोविड-19 महामारी के दौरान अफवाहों और फेक न्यूज ने समाज में भ्रम फैलाया और कई लोगों को नुकसान पहुँचाया। अतः पत्रकारों को वैज्ञानिक तथ्यों, चिकित्सा रिपोर्टों और विशेषज्ञों के मतों को सत्यापित करके ही प्रस्तुत करना चाहिए। चिकित्सा, वैक्सीन, पोषण या मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी कोई भी रिपोर्ट तथ्यों पर आधारित और प्रमाणित होनी चाहिए। यह समाज की सुरक्षा और स्वास्थ्य के लिए अत्यावश्यक है।

8. पर्यावरण संरक्षण और सतत विकास

पर्यावरण संरक्षण आज वैश्विक चिंता का विषय है, और पत्रकारिता को इस दिशा में जनजागरूकता का माध्यम बनना चाहिए। जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण, वनों की कटाई, जैव विविधता का हास जैसे विषय केवल वैज्ञानिक चर्चा नहीं हैं ये मानव अस्तित्व से जुड़ी वास्तविक समस्याएं हैं। पत्रकारों को पर्यावरण विरोधी गतिविधियों, अवैध खनन, या प्रदूषण फैलाने वाले उद्योगों को उजागर करना चाहिए। साथ ही, उन्हें पर्यावरण संरक्षण, नवीकरणीय ऊर्जा और सतत विकास के प्रयासों को भी प्रमुखता से प्रस्तुत करना चाहिए। एक पर्यावरण-संवेदनशील पत्रकारिता ही आने वाली पीढ़ियों के लिए एक सुरक्षित और स्वच्छ धरती सुनिश्चित कर सकती है।

9. आपदा रिपोर्टिंग में जिम्मेदारी

प्राकृतिक आपदाओं, दुर्घटनाओं, या आतंकवादी घटनाओं के दौरान पत्रकारों पर सबसे बड़ा सामाजिक दायित्व होता है सूचना देना, लेकिन संवेदनशीलता के साथ। ऐसे समय में सनसनीखेज या भय फैलाने वाली रिपोर्टिंग से बचना चाहिए। अफवाहें फैलाना, पीड़ितों की तस्वीरें बिना अनुमति प्रकाशित करना या बचाव कार्यों में बाधा डालना पत्रकारिता की मर्यादा के विरुद्ध है। पत्रकारिता को ऐसी स्थिति में जनता को सही, सटीक और समय पर जानकारी देनी चाहिए, ताकि अफरातफरी न फैले और राहत कार्य सुचारु रूप से चल सकें।

10. शिक्षा और जन-जागरूकता का प्रसार

पत्रकारिता केवल समाचार देने का नहीं, बल्कि समाज को शिक्षित करने का भी माध्यम है। साक्षरता, स्वास्थ्य, कानूनी अधिकार, वित्तीय योजनाएँ, और सरकारी नीतियों की जानकारी आम जनता तक पहुँचाना पत्रकारिता का मूल दायित्व है। विशेष रूप से ग्रामीण और पिछड़े क्षेत्रों में जन-जागरूकता फैलाने में मीडिया की भूमिका महत्वपूर्ण है। पत्रकारिता जब सामाजिक शिक्षा का माध्यम बनती है, तो यह लोकतंत्र को मजबूत करती है और नागरिकों को आत्मनिर्भर बनाती है।

11. सांस्कृतिक संवेदनशीलता का निर्वाह

भारत विविध संस्कृतियों, धर्मों, भाषाओं और परंपराओं का संगम है। पत्रकारिता को प्रत्येक समुदाय की सांस्कृतिक भावनाओं का सम्मान करना चाहिए। किसी भी समाचार या लेख में ऐसे शब्द या चित्रण नहीं होने चाहिए जो किसी धर्म या संस्कृति की भावनाओं को ठेस पहुँचाएँ। हालाँकि, पत्रकारिता को यह भी ध्यान रखना चाहिए कि “सांस्कृतिक संवेदनशीलता” के नाम पर सामाजिक बुराइयों जैसे जातिवाद, लैंगिक असमानता या अंधविश्वास को सही नहीं ठहराया जा सकता। पत्रकार को संतुलन बनाकर यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वह सामाजिक सुधार और सांस्कृतिक सम्मान दोनों के बीच उचित सामंजस्य बनाए रखे।

12. उपभोक्ता अधिकारों की रक्षा

उपभोक्ता हितों की रक्षा भी पत्रकारिता का एक महत्वपूर्ण सामाजिक दायित्व है। आज के उपभोक्ता समाज में नकली उत्पाद, धोखाधड़ी योजनाएँ और फर्जी विज्ञापन आम हो चुके हैं। पत्रकारिता का दायित्व है कि वह ऐसी गतिविधियों को उजागर करे, जनता को सतर्क करे, और उपभोक्ता अधिकारों के प्रति जागरूकता फैलाए। इस दिशा में “इन्वेस्टिगेटिव जर्नलिज़्म” या खोजी पत्रकारिता का विशेष महत्व है, जो कॉर्पोरेट और बाज़ार शक्तियों की जवाबदेही तय करने में मदद करती है।



13. डिजिटल साक्षरता और साइबर सुरक्षा

डिजिटल युग में पत्रकारिता का सामाजिक उत्तरदायित्व और भी बढ़ गया है। इंटरनेट और सोशल मीडिया के प्रसार ने सूचना को सार्वभौमिक बना दिया है, परंतु इसके साथ साइबर अपराध, ऑनलाइन धोखाधड़ी और प्राइवैसी उल्लंघन जैसी चुनौतियाँ भी बढ़ी हैं। पत्रकारों को न केवल साइबर सुरक्षा से जुड़ी खबरें देनी चाहिए, बल्कि लोगों को डिजिटल साक्षरता के प्रति जागरूक भी करना चाहिए। लोगों को यह समझाना आवश्यक है कि वे अपनी निजी जानकारी की सुरक्षा कैसे करें, ऑनलाइन फेक न्यूज की पहचान कैसे करें, और साइबर ठगी से कैसे बचें। इस दिशा में जिम्मेदार पत्रकारिता समाज को अधिक सुरक्षित और तकनीकी रूप से सशक्त बना सकती है।

पत्रकारिता केवल एक पेशा नहीं, बल्कि एक सामाजिक दायित्व है। इसका उद्देश्य केवल सूचना देना नहीं, बल्कि समाज में सत्य, न्याय, समानता और मानवता के मूल्यों को बनाए रखना भी है। जब पत्रकार अपनी भूमिका को ईमानदारी, संवेदनशीलता और जिम्मेदारी के साथ निभाते हैं, तभी मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ बन पाता है। सच्ची पत्रकारिता वही है जो सत्ता से सवाल करती है, जनता के हित में कार्य करती है, और समाज को बेहतर दिशा देने में सहयोग करती है। इसलिए, पत्रकारिता का प्रत्येक कार्य चाहे वह समाचार लेखन हो, रिपोर्टिंग, या संपादन अपने भीतर सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को समाहित रखे। यही पत्रकारिता की सार्थकता और उसकी नैतिक श्रेष्ठता का प्रमाण है।

इकाई 2.3: इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की संभावनाएँ और चुनौतियाँ

2.3.1 इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की संभावनाएँ

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया: क्रांति, प्रभाव और वर्तमान परिदृश्य

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया शब्द टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट-आधारित स्ट्रीमिंग सेवाओं, पॉडकास्ट और डिजिटल आउटलेट्स को समाहित करता है। यह मुद्रण (प्रिंट) माध्यम के विपरीत, सूचना को इलेक्ट्रॉनिक रूप से प्रसारित करता है। बीसवीं शताब्दी के मध्य में टेलीविजन और रेडियो के उदय ने सूचना के उपभोग के तरीके को हमेशा के लिए बदल दिया, लेकिन 21वीं सदी में इंटरनेट और मोबाइल क्रांति ने इस बदलाव को एक अभूतपूर्व गति दी है। आज, सूचना हर व्यक्ति की हथेली में चौबीसों घंटे उपलब्ध है, जिससे न केवल समाज पर इसका गहरा प्रभाव पड़ा है, बल्कि मीडिया उद्योग के लिए संभावनाओं और चुनौतियों का एक जटिल जाल भी बुना गया है। इस विश्लेषण में, हम इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के व्यापक आयामों, इसके सामने खड़ी चुनौतियों और भविष्य की दिशाओं पर 10 शीर्षकों के तहत गहन चर्चा करेंगे।

1. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का आधार: डिजिटल और तकनीकी क्रांति (तकनीकी विकास)

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की सबसे बड़ी ताकत इसका लगातार होता तकनीकी विकास है। एनालॉग प्रसारण से शुरू होकर, यह माध्यम आज पूरी तरह से डिजिटल, हाई-डेफिनिशन (HD) और अल्ट्रा-HD (4K) प्रारूपों में विकसित हो चुका है।

मुख्य बिंदु:

- **इंटरनेट और स्ट्रीमिंग:** OTT (ओवर-द-टॉप) प्लेटफॉर्म, पॉडकास्टिंग और लाइव स्ट्रीमिंग ने पारंपरिक प्रसारण मॉडल को चुनौती दी है। उपयोगकर्ता अब 'कब' और 'क्या' देखना है, इसका निर्णय स्वयं लेते हैं, जिससे ऑन-डिमांड सामग्री की माँग में भारी वृद्धि हुई है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

- **मोबाइल जर्नलिज्म:** स्मार्टफोन और सस्ते डेटा ने पत्रकारों को उपकरण और स्टूडियो के जटिल सेटअप के बिना भी तुरंत रिपोर्टिंग करने की क्षमता प्रदान की है। एक छोटा सा मोबाइल डिवाइस अब एक चलता-फिरता समाचार कक्ष है।
- **5G और बैंडविड्थ:** 5G तकनीक के विस्तार से अल्ट्रा-लो लेटेंसी और हाई-स्पीड डेटा ट्रांसमिशन संभव हुआ है, जिससे लाइव-स्ट्रीमिंग की गुणवत्ता बढ़ी है और दूरदराज के क्षेत्रों से भी उच्च-गुणवत्ता वाली सामग्री का प्रसारण सहज हो गया है।
- **ऑटोमेशन और एआई:** कंटेंट क्यूरेशन, समाचार संक्षेप, और यहां तक कि बुनियादी रिपोर्टिंग में भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) का उपयोग हो रहा है, जिससे मानव पत्रकारों को अधिक खोजी और जटिल कार्यों पर ध्यान केंद्रित करने का समय मिल रहा है।

2. सीमाओं को तोड़ती व्यापक पहुँच और लोकतंत्र में इसकी भूमिका (व्यापक पहुँच)

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की **व्यापक पहुँच** ने भौगोलिक और सामाजिक सीमाओं को लगभग समाप्त कर दिया है। यह समाज और लोकतंत्र दोनों के लिए एक शक्तिशाली उपकरण बन गया है।

मुख्य बिंदु:

- **लोकतंत्र का सशक्तीकरण:** मीडिया समाज के अंतिम व्यक्ति तक राजनीतिक और सरकारी सूचनाओं को पहुँचाकर, लोगों को सूचित निर्णय लेने में सक्षम बनाता है। यह सरकार की जवाबदेही सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।
- **वैश्विक गाँव की अवधारणा:** इंटरनेट ने स्थानीय घटनाओं को भी वैश्विक मंच पर ला दिया है। एक छोटे से क्षेत्र की खबर मिनटों में दुनिया भर में फैल सकती है, जिससे वैश्विक जागरूकता और एकजुटता बढ़ती है।
- **हाइपर-लोकल कंटेंट:** डिजिटल प्लेटफॉर्म अब केवल राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय समाचारों तक सीमित नहीं हैं। ये स्थानीय भाषाओं और बोलियों में सामग्री प्रदान करके जनसांख्यिकीय रूप से विशिष्ट दर्शकों को लक्षित करते हैं, जिससे जमीनी स्तर की पत्रकारिता को बढ़ावा मिलता है।

- **इंटरैक्टिविटी:** डिजिटल माध्यमों ने दर्शकों को निष्क्रिय उपभोक्ता से सक्रिय भागीदार में बदल दिया है। टिप्पणियाँ, लाइव पोल और सोशल मीडिया शेयरिंग से फीडबैक लूप तुरंत काम करता है, जो सूचना के प्रवाह को अधिक लोकतांत्रिक बनाता है।

3. सृजन का माध्यम: मीडिया उद्योग में रोजगार की अपार संभावनाएँ (रोजगार के अवसर)

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया केवल सूचना का स्रोत नहीं है, बल्कि एक विशाल **रोजगार सृजन** का केंद्र भी है। पारंपरिक मीडिया (चैनल, स्टूडियो) के अलावा, डिजिटल विस्तार ने लाखों नए करियर मार्ग खोले हैं।

मुख्य बिंदु:

- **सामग्री सृजन और निर्माण:** पत्रकार, एंकर, संवाददाता, स्क्रिप्ट राइटर, वीडियो एडिटर, ग्राफिक डिज़ाइनर, और वीडियोग्राफ़र की मांग लगातार बढ़ रही है।
- **डिजिटल और सोशल मीडिया प्रबंधन:** हर मीडिया हाउस और अब लगभग हर कॉर्पोरेट कंपनी को डिजिटल मार्केटिंग मैनेजर, सोशल मीडिया रणनीतिकार, SEO विशेषज्ञ और डेटा विश्लेषकों की आवश्यकता होती है, जो कंटेंट के प्रदर्शन को ट्रैक कर सकें।
- **तकनीकी और इंजीनियरिंग भूमिकाएँ:** प्रसारण इंजीनियर, नेटवर्क प्रशासक, क्लाउड सेवा विशेषज्ञ, और IT सुरक्षा पेशेवर मीडिया के तकनीकी बुनियादी ढांचे को बनाए रखने के लिए आवश्यक हैं।
- **फ्रीलांसिंग और उद्यमिता:** छोटे कंटेंट क्रिएटर्स, यूट्यूबर, पॉडकास्टर और स्वतंत्र पत्रकार अपने खुद के मीडिया आउटलेट चला रहे हैं, जिससे यह क्षेत्र उद्यमिता के लिए एक बड़ा द्वार बन गया है।

4. रेटिंग की सनक: टीआरपी की अंधी दौड़ और सामग्री का पतन

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की व्यावसायिक प्रकृति के कारण, टीआरपी (TRP) की दौड़ (TRP Race) एक गंभीर चुनौती बन गई है। टीआरपी (टेलीविजन रेटिंग प्वाइंट्स)



विज्ञापन राजस्व का प्राथमिक निर्धारक है, और इसे बढ़ाने का दबाव सामग्री की गुणवत्ता को प्रभावित करता है।

मुख्य बिंदु:

- **सूचना से मनोरंजन की ओर बदलाव:** टीआरपी को आकर्षित करने के लिए, गंभीर समाचारों और खोजी पत्रकारिता की जगह उच्च-विवादास्पद बहस, सनसनीखेज ब्रेकिंग न्यूज़ और 'इंफोटेनमेंट' (सूचना+मनोरंजन) ले लेता है।
- **बहस का पतन:** प्राइम टाइम डिबेट अक्सर ज्ञानवर्धक चर्चाओं के बजाय शोरगुल वाले झगड़ों में बदल जाती हैं, जहां विषय की गहराई पर ध्यान देने के बजाय राजनीतिक पक्षपात और व्यक्तिगत आक्षेप पर ज़ोर दिया जाता है।
- **अनावश्यक दोहराव:** दर्शकों को बांधे रखने के लिए, महत्वपूर्ण कहानियों को बार-बार दोहराया जाता है, जिससे दर्शकों की सूचना अधिभार (information overload) की भावना बढ़ती है और वास्तविक मुद्दों को पर्याप्त कवरेज नहीं मिल पाता।
- **सत्यता पर समझौता:** रेटिंग की भूख में, बिना उचित सत्यापन के स्रोतों पर निर्भरता बढ़ जाती है, जिससे 'ब्रेकिंग न्यूज़' की होड़ में फर्जी या अधूरी सूचना प्रसारित होने का खतरा पैदा होता है।

5. पत्रकारिता की पवित्रता पर खतरा: पेड न्यूज़ और विश्वसनीयता का संकट (पेड न्यूज़)

पेड न्यूज़ इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सामने सबसे गंभीर नैतिक और वित्तीय चुनौतियों में से एक है। यह वह स्थिति है जहां समाचार या विश्लेषण के रूप में प्रस्तुत की गई सामग्री वास्तव में किसी व्यक्ति, पार्टी या कंपनी द्वारा भुगतान किया गया प्रचार होता है।

मुख्य बिंदु:

- **सार्वजनिक विश्वास का क्षरण:** जब दर्शकों को यह पता चलता है कि समाचार बेचा जा रहा है, तो पत्रकारिता की विश्वसनीयता पूरी तरह से खत्म हो जाती है, जिससे दर्शक मीडिया को संदेह की दृष्टि से देखते हैं।
- **निष्पक्षता का हनन:** पेड न्यूज़ सीधे तौर पर मीडिया की निष्पक्षता और वस्तुनिष्ठता के सिद्धांतों का उल्लंघन करता है। यह पत्रकारिता के मौलिक दायित्व—जनहित की सेवा—को धन के लालच में दबा देता है।
- **लोकतंत्र के लिए खतरा:** चुनाव के दौरान पेड न्यूज़ का प्रचलन मतदाताओं को गुमराह कर सकता है, जिससे लोकतांत्रिक प्रक्रिया की पवित्रता को खतरा पहुँचता है। यह धनबल को सूचना पर हावी होने का अवसर देता है।
- **विनियमन की कमी:** डिजिटल प्लेटफॉर्म पर पेड कंटेंट को विज्ञापन के रूप में स्पष्ट रूप से लेबल करने के लिए पर्याप्त मजबूत विनियमन या प्रवर्तन तंत्र की कमी है, जिससे इस प्रथा को बढ़ावा मिलता है।

6. अतिरंजित प्रस्तुति: सनसनीखेज़ रिपोर्टिंग का बढ़ता चलन और सामाजिक प्रभाव (सनसनीखेज़ रिपोर्टिंग)

टीआरपी और विज्ञापन की आवश्यकता ने कई मीडिया आउटलेट्स को सनसनीखेज़ रिपोर्टिंग अपनाने पर मजबूर किया है, जिसमें अतिरंजन, भावनात्मक अपील और अनावश्यक नाटकीयता का उपयोग किया जाता है।

मुख्य बिंदु:

- **ट्रायल बाय मीडिया:** गंभीर मामलों में, मीडिया अक्सर न्यायिक प्रक्रिया के समानांतर खुद ही फैसला सुनाना शुरू कर देता है। यह किसी व्यक्ति की प्रतिष्ठा को अपूरणीय क्षति पहुंचाता है और न्याय के सिद्धांतों का उल्लंघन करता है।
- **निजता का उल्लंघन:** सनसनीखेज़ कवरेज अक्सर व्यक्तियों की निजता का उल्लंघन करता है, खासकर पीड़ितों या शोकग्रस्त परिवारों के मामलों में, जिससे उनकी पीड़ा का सार्वजनिक तमाशा बन जाता है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

- **सांप्रदायिक और सामाजिक ध्रुवीकरण:** अतिरंजित और पक्षपाती रिपोर्टिंग अक्सर सामाजिक और सांप्रदायिक तनाव को बढ़ा सकती है, जिससे समाज में विभाजन और असहिष्णुता की भावना पैदा होती है।
- **गंभीर मुद्दों की अनदेखी:** जब मीडिया सनसनीखेज़ कहानियों पर घंटों खर्च करता है, तो स्वास्थ्य, शिक्षा, अर्थव्यवस्था और पर्यावरण जैसे अधिक महत्वपूर्ण लेकिन कम नाटकीय मुद्दों को हाशिए पर धकेल दिया जाता है।

7. सिद्धांतों की कसौटी: इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सामने नैतिक और जवाबदेही के मुद्दे (नैतिक मुद्दे)

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की शक्ति और व्यापक पहुँच को देखते हुए, **नैतिक मुद्दे** सबसे महत्वपूर्ण चुनौतियों में से एक हैं। मीडिया को अपनी शक्ति का उपयोग अत्यंत जिम्मेदारी के साथ करना चाहिए।

मुख्य बिंदु:

- **वस्तुनिष्ठता और निष्पक्षता:** किसी भी पत्रकारिता का मूलभूत सिद्धांत वस्तुनिष्ठता है। पक्षपातपूर्ण रिपोर्टिंग या जानबूझकर केवल एक पक्ष की कहानी प्रस्तुत करना मीडिया के नैतिक दायित्वों के खिलाफ है।
- **सत्यता और सत्यापन:** फेक न्यूज़ और दुष्प्रचार के युग में, सूचना की सत्यता और स्रोत का कठोर सत्यापन आवश्यक है। त्वरित प्रसारण की होड़ में अक्सर यह नैतिक मानक टूट जाता है।
- **सामाजिक जिम्मेदारी:** मीडिया को पता होना चाहिए कि उनके शब्दों और दृश्यों का समाज पर गहरा प्रभाव पड़ता है। उन्हें आत्म-संयम दिखाना चाहिए और ऐसी सामग्री से बचना चाहिए जो हिंसा, घृणा या भेदभाव को बढ़ावा देती हो।
- **जवाबदेही और सुधार:** नैतिक पत्रकारिता का अर्थ है गलती होने पर उसे स्वीकार करना और तुरंत सुधार करना। मीडिया आउटलेट्स को दर्शकों के प्रति पारदर्शी और जवाबदेह होना चाहिए।

8. भविष्य का मीडिया परिदृश्य: आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मेटावर्स और इंटरैक्टिव जर्नलिज्म (नई तकनीकों का प्रभाव)

भविष्य में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया को नई तकनीकों का तेजी से सामना करना पड़ेगा, जो न केवल सामग्री के निर्माण को बल्कि उसके उपभोग और मुद्राकरण को भी बदल देंगी।

मुख्य बिंदु:

- **आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (AI) और मशीन लर्निंग:** AI व्यक्तिगत दर्शकों की प्राथमिकताओं के आधार पर समाचार फ़ीड को अनुकूलित कर देगा। यह डेटा विश्लेषण, दुष्प्रचार की पहचान और रूटीन रिपोर्टिंग (जैसे स्टॉक मार्केट या खेल स्कोर) को स्वचालित करेगा।
- **मेटावर्स और इमर्सिव जर्नलिज्म:** वर्चुअल रियलिटी (VR) और ऑगमेंटेड रियलिटी (AR) दर्शकों को घटना स्थल पर "उपस्थित" होने का अनुभव प्रदान करेंगी। पत्रकारिता अधिक गहन, त्रि-आयामी और भावनात्मक रूप से संलग्न करने वाली बन जाएगी।
- **ब्लॉकचेन और विश्वास:** ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग सूचना के स्रोत को ट्रैक करने और उसकी सत्यता को प्रमाणित करने के लिए किया जा सकता है, जिससे पेड न्यूज़ और फेक न्यूज़ की समस्या से लड़ने में मदद मिलेगी और दर्शकों का विश्वास बढ़ेगा।
- **इंटरैक्टिव और गेमिंग फॉर्मैट्स:** समाचारों को अब केवल पढ़ने या देखने के बजाय, इंटरैक्टिव ग्राफिक्स, डेटा विज़ुअलाइज़ेशन और यहां तक कि गेमिंग फॉर्मैट्स के माध्यम से प्रस्तुत किया जाएगा, जिससे युवा दर्शकों को जोड़ने में मदद मिलेगी।

9. डिजिटल दुनिया में विनियमन और स्व-नियंत्रण की आवश्यकता

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के सामने मौजूद चुनौतियों का मुकाबला करने के लिए विनियमन और स्व-नियंत्रण दोनों की आवश्यकता है। एक स्वस्थ मीडिया पारिस्थितिकी तंत्र के लिए कानून और नैतिक मानकों का पालन अपरिहार्य है।



मुख्य बिंदु:

- **सरकारी और नियामक ढाँचा:** फेक न्यूज़, दुष्प्रचार, और बाल अश्लीलता जैसे मुद्दों से निपटने के लिए नियामक निकायों को डिजिटल प्लेटफॉर्म के लिए स्पष्ट और पारदर्शी दिशानिर्देश बनाने चाहिए। हालांकि, यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि विनियमन से अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता बाधित न हो।
- **मीडिया साक्षरता:** नागरिकों को मीडिया साक्षरता प्रदान करना आवश्यक है। दर्शकों को सिखाया जाना चाहिए कि वे समाचारों का आलोचनात्मक विश्लेषण कैसे करें, स्रोतों का सत्यापन कैसे करें, और सनसनीखेज़ बनाम तथ्यात्मक रिपोर्टिंग के बीच अंतर कैसे करें।
- **उद्योग का स्व-विनियमन:** मीडिया संगठनों को अपने लिए एक मजबूत आचार संहिता विकसित करनी चाहिए, जिसमें टीआरपी के दबाव से मुक्त रहने, पेड न्यूज़ से बचने और निजता के सम्मान को प्राथमिकता दी जाए।
- **अंतर्राष्ट्रीय सहयोग:** चूंकि सूचना आज राष्ट्रीय सीमाओं से परे जाती है, इसलिए दुष्प्रचार और डेटा सुरक्षा जैसी चुनौतियों से निपटने के लिए अंतर्राष्ट्रीय मीडिया संगठनों और सरकारों के बीच सहयोग आवश्यक है।

10. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया: संतुलन, विनियमन और आगे की राह

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया एक दोधारी तलवार है। एक तरफ, यह प्रगति, जागरूकता और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अभूतपूर्व माध्यम है; दूसरी तरफ, यह दुष्प्रचार, सनसनीखेजता और नैतिक पतन का शिकार हो सकता है।

यह माध्यम तकनीकी रूप से लगातार विकसित हो रहा है, एआई, वीआर और 5G इसकी संभावनाओं को असीम बना रहे हैं। यह रोजगार के नए अवसर पैदा कर रहा है और लोगों तक पहुँच को अधिकतम कर रहा है। हालांकि, टीआरपी की अंधी दौड़, पेड न्यूज़ का भ्रष्टाचार, और सनसनीखेज़ रिपोर्टिंग का दबाव इसकी विश्वसनीयता के लिए गंभीर खतरा पैदा करता है।

आगे की राह **संतुलन** पर निर्भर करती है:

1. **तकनीकी शक्ति का नैतिक उपयोग:** नई तकनीकों को केवल दर्शकों को आकर्षित करने के लिए नहीं, बल्कि पत्रकारिता के मूल्यों को मजबूत करने के लिए उपयोग किया जाना चाहिए।
2. **दर्शक की भागीदारी:** मीडिया साक्षरता के माध्यम से दर्शकों को अधिक समझदार उपभोक्ता बनाना, जिससे वे घटिया सामग्री को अस्वीकार कर सकें।
3. **स्व-नियमन को प्राथमिकता:** मीडिया उद्योग को बाहरी विनियमन से पहले अपनी नैतिक जवाबदेही को स्थापित करना होगा।

इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का भविष्य उज्ज्वल है, बशर्ते वह अपने मौलिक सिद्धांत सत्य, वस्तुनिष्ठता और जनहित को अपनी व्यावसायिक जरूरतों पर हावी न होने दे।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

2.4 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

2.4.1 बहुविकल्पीय प्रश्न

1. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में शामिल है:

- a) केवल रेडियो
- b) केवल टेलीविजन
- c) रेडियो, टेलीविजन, इंटरनेट आदि
- d) केवल समाचार पत्र

2. पत्रकारिता को लोकतंत्र का कौन सा स्तंभ कहा जाता है?

- a) पहला
- b) दूसरा
- c) तीसरा
- d) चौथा

3. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की सबसे बड़ी विशेषता है:

- a) धीमी गति
- b) तात्कालिकता
- c) सीमित पहुँच
- d) केवल लिखित सामग्री

4. TRP का पूरा रूप है:

- a) Total Rating Point
- b) Television Rating Point
- c) Technical Rating Program
- d) Time Rating Point

5. पेड न्यूज़ का अर्थ है:

- a) सशुल्क समाचार
- b) वस्तुनिष्ठ समाचार
- c) निःशुल्क समाचार
- d) तेज़ समाचार

6. प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में मुख्य अंतर है:

- a) भाषा
- b) तकनीक और प्रस्तुति
- c) दर्शक
- d) कोई अंतर नहीं

7. पत्रकारिता का मुख्य उद्देश्य है:

- a) मुनाफा कमाना
- b) सूचना, शिक्षा और मनोरंजन
- c) केवल विज्ञापन
- d) राजनीति करना

8. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की प्रमुख चुनौती है:

- a) तकनीकी विकास
- b) सनसनीखेज़पन और नैतिकता
- c) अधिक दर्शक
- d) सरकारी समर्थन

9. जनमत निर्माण में किसकी भूमिका महत्वपूर्ण है?

- a) केवल सरकार
- b) केवल न्यायपालिका
- c) मीडिया
- d) केवल विधायिका

10. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का भविष्य किस पर निर्भर है?

- a) पुरानी तकनीक
- b) नई तकनीक और डिजिटल प्लेटफॉर्म
- c) केवल रेडियो
- d) केवल समाचार पत्र

2.4.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की परिभाषा और विशेषताएँ बताइए।
2. पत्रकारिता की समाज में क्या भूमिका है?



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

3. प्रिंट और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में कोई तीन अंतर बताइए।
4. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की कोई तीन संभावनाएँ लिखिए।
5. TRP और पेड न्यूज़ क्या है? संक्षेप में समझाइए।

2.4.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न.1.1 भक्ति आंदोलन की उद्देश्यपूर्ण विशेषताएँ

1. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की परिभाषा, स्वरूप और विशेषताओं का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. समाज में पत्रकारिता की भूमिका और उत्तरदायित्वों की विस्तृत चर्चा कीजिए।
3. प्रिंट मीडिया और इलेक्ट्रॉनिक मीडिया का तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत कीजिए।
4. इलेक्ट्रॉनिक मीडिया की संभावनाओं और चुनौतियों का विश्लेषण कीजिए।
5. आधुनिक युग में इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के समक्ष आने वाली नैतिक चुनौतियों पर विस्तृत लेख लिखिए।

मॉड्यूल 3

आकाशवाणी

संरचना

इकाई: 3.1 आकाशवाणी का उद्भव और ऐतिहासिक विकास

इकाई: 3.2 समाचार, नाटक, वार्ता और कार्यक्रमों की शैली

इकाई: 3.3 आदिकालीन साहित्यिक परंपराएँ

इकाई: 3.4 प्रमुख रासो काव्य और उनकी प्रमाणिकता

3.0 उद्देश्य:

- रेडियो प्रसारण का इतिहास जानना
- भारत में आकाशवाणी के विकास को समझना
- आकाशवाणी के विस्तार का अध्ययन करना
- रेडियो समाचार की विशेषताओं को समझना
- रेडियो नाटक और वार्ता को जानना
- विभिन्न कार्यक्रमों की शैली का अध्ययन करना
- आकाशवाणी की सामाजिक भूमिका को समझना
- सांस्कृतिक संरक्षण में योगदान जानना
- शिक्षा और विकास में भूमिका का अध्ययन करना

इकाई - 3.1: आकाशवाणी का उद्भव और ऐतिहासिक विकास

3.1.1 रेडियो का आविष्कार

रेडियो का आविष्कार मानव संचार के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर है। 19वीं शताब्दी के अंत में, वैज्ञानिकों ने विद्युत चुम्बकीय तरंगों के सिद्धांतों पर ध्यान दिया। इनमें प्रमुख योगदान जेम्स क्लर्क मैक्सवेल और हेनरिक हर्ट्ज़ का रहा। हर्ट्ज़ ने प्रयोगशाला में विद्युत चुम्बकीय तरंगों को उत्पन्न और प्रकट किया, जिससे रेडियो संचार की नींव रखी गई।



मार्कोनी का योगदान

गुलेल्मो मार्कोनी ने 1895 में रेडियो तरंगों का व्यावहारिक उपयोग करते हुए वायरलेस टेलीग्राफ की प्रणाली विकसित की। उन्होंने 1901 में अटलांटिक महासागर पार पहली सफल रेडियो संचार प्रणाली स्थापित की, जो यह दर्शाती थी कि रेडियो संकेत लंबी दूरी तक पहुँच सकते हैं। मार्कोनी का यह प्रयास रेडियो संचार को व्यापक रूप देने का पहला कदम था। उन्हें 1909 में भौतिकी का नोबेल पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

विश्व में रेडियो का विकास

20वीं शताब्दी की शुरुआत में, यूरोप और अमेरिका में रेडियो प्रसारण में तेजी आई। 1920 में अमेरिका में पहली बार नियमित रेडियो प्रसारण शुरू हुआ, जिसमें संगीत, समाचार और मनोरंजन को जनता तक पहुँचाया गया। इसी प्रकार, यूरोप में भी रेडियो को शिक्षा और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के लिए अपनाया गया। रेडियो ने न केवल संचार को सुलभ बनाया, बल्कि समाज में सूचना के लोकतंत्रीकरण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3.1.2 भारत में आकाशवाणी का उद्भव

भारत में रेडियो की शुरुआत 1920 के दशक में हुई। प्रारंभिक रूप से यह शहरी और उच्च वर्ग के लिए विशेष रूप से उपलब्ध था। इसके विकास में विभिन्न क्लब और संस्थाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

1927: बॉम्बे प्रेसीडेंसी रेडियो क्लब

1927 में बॉम्बे (वर्तमान मुंबई) में प्रेसीडेंसी रेडियो क्लब की स्थापना हुई। यह क्लब रेडियो तकनीक और संचार के अध्ययन का केंद्र बना। इसके माध्यम से भारत में रेडियो प्रसारण के प्रति रुचि और जन जागरूकता बढ़ी। क्लब ने रेडियो उपकरणों का निर्माण, संचालन और प्रशिक्षण में योगदान दिया।

1936: ऑल इंडिया रेडियो की स्थापना

1936 में भारत सरकार ने ऑल इंडिया रेडियो (AIR) की स्थापना की। इसका उद्देश्य पूरे भारत में रेडियो प्रसारण के माध्यम से समाचार, शिक्षा और मनोरंजन को पहुँचाना था। AIR ने विविध भाषाओं में कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू किया, जिससे विभिन्न भाषाई और सांस्कृतिक समुदायों तक सूचना पहुँचने लगी।

आकाशवाणी नाम की उत्पत्ति

‘आकाशवाणी’ नाम का प्रयोग 1956 में किया गया। इस नाम का अर्थ है "आकाश से आने वाली आवाज़"। यह नाम जनता के बीच रेडियो की पहुँच और उसकी सार्वभौमिकता को प्रदर्शित करता है। आकाशवाणी ने लोगों को न केवल समाचार और संगीत प्रदान किया, बल्कि सामाजिक और शैक्षणिक जागरूकता फैलाने का माध्यम भी बना।

3.1.3 आकाशवाणी का विकास

आकाशवाणी का विकास स्वतंत्रता पूर्व और पश्चात दोनों कालों में महत्वपूर्ण रहा। यह न केवल तकनीकी उन्नति का प्रतीक रहा, बल्कि सांस्कृतिक और शैक्षिक कार्यक्रमों का प्रमुख माध्यम भी बना।

स्वतंत्रता से पहले और बाद

स्वतंत्रता से पहले, आकाशवाणी का मुख्य उद्देश्य ब्रिटिश सरकार की नीतियों और समाचारों को प्रसारित करना था। इसमें स्थानीय और राष्ट्रीय समाचारों के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम भी शामिल थे। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद, आकाशवाणी ने अपने प्रसारण में स्वतंत्र भारत की विकास और नीतियों को दर्शाना प्रारंभ किया। कृषि, शिक्षा, स्वास्थ्य और विज्ञान जैसे विषयों पर विशेष कार्यक्रम तैयार किए गए।

वर्तमान स्वरूप

वर्तमान में आकाशवाणी भारत का सबसे व्यापक रेडियो नेटवर्क है। इसके हजारों स्टेशन पूरे देश में स्थित हैं और यह लगभग सभी भारतीय भाषाओं में प्रसारण करता



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

है। तकनीकी उन्नति के साथ, आकाशवाणी अब डिजिटल रेडियो, ऑनलाइन स्ट्रीमिंग और मोबाइल एप्स के माध्यम से भी जनता तक पहुँचता है। वर्तमान स्वरूप में यह न केवल समाचार और मनोरंजन का स्रोत है, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य जागरूकता, सरकारी योजनाओं की जानकारी और सांस्कृतिक संरक्षण का भी माध्यम बन गया है।

रेडियो और समाज

रेडियो का समाज पर व्यापक प्रभाव पड़ा है। यह ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में सूचना और शिक्षा का महत्वपूर्ण स्रोत बन गया है। रेडियो ने सामाजिक चेतना, स्वास्थ्य जागरूकता और लोकतांत्रिक भागीदारी को बढ़ावा दिया है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, जहाँ अन्य मीडिया साधनों की पहुँच सीमित है, रेडियो ने जीवन को सरल और सूचना को सुलभ बनाया है।

तकनीकी उन्नति

रेडियो तकनीक ने समय के साथ कई उन्नत चरण देखे हैं। प्रारंभिक टीएसएफ (टेलीग्राफ सेंट्रल) सिस्टम से लेकर वर्ल्ड वाइड वेब और डिजिटल रेडियो तक, तकनीक ने रेडियो प्रसारण को अधिक विश्वसनीय और सटीक बनाया। FM, AM, और डिजिटल रेडियो जैसे माध्यमों ने ध्वनि की गुणवत्ता और प्रसारण की पहुँच को बढ़ाया। आकाशवाणी ने इन तकनीकों को अपनाकर जनता के अनुभव को सुधारने में योगदान दिया।

सांस्कृतिक योगदान

आकाशवाणी ने भारतीय संस्कृति को संरक्षित और प्रचारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। संगीत, नाट्य, लोककथाएँ, कविताएँ और अन्य सांस्कृतिक कार्यक्रमों का प्रसारण इसके माध्यम से हुआ। विभिन्न राज्यों की भाषाओं और परंपराओं को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम तैयार किए गए, जिससे राष्ट्रीय एकता और सांस्कृतिक विविधता का संतुलन बना।

शिक्षा में योगदान

आकाशवाणी ने शिक्षा के क्षेत्र में भी व्यापक योगदान दिया। दूरस्थ शिक्षा, कृषि प्रशिक्षण, स्वास्थ्य संबंधी जानकारी और वैज्ञानिक कार्यक्रमों के माध्यम से लोगों को ज्ञान प्रदान किया गया। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, यह माध्यम बच्चों और युवाओं के लिए शिक्षा और कौशल विकास का स्रोत बना।

आपदा और आपातकालीन प्रसारण

आकाशवाणी ने प्राकृतिक आपदाओं और आपात परिस्थितियों में त्वरित सूचना पहुँचाने का कार्य किया। बाढ़, भूकंप, सूखा या अन्य संकट के समय, रेडियो ने जनता को सुरक्षित रखने और बचाव कार्यों के बारे में जागरूक करने में मदद की। इसके प्रसारण ने सरकार और स्थानीय प्रशासन को भी आपदा प्रबंधन में सहायक भूमिका निभाई।

अंतरराष्ट्रीय सहयोग

आकाशवाणी ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी सहयोग किया। यह विश्व रेडियो संघ जैसे संस्थानों के माध्यम से वैश्विक प्रसारण मानकों का पालन करता है। अन्य देशों के रेडियो प्रसारण संस्थाओं के साथ सहयोग करके, सांस्कृतिक और शैक्षिक कार्यक्रमों का आदान-प्रदान संभव हुआ।

भविष्य की दिशा

भविष्य में आकाशवाणी का उद्देश्य डिजिटल और मोबाइल प्लेटफॉर्म पर अपनी पहुंच बढ़ाना है। यह सोशल मीडिया, पॉडकास्ट और ऑन-डिमांड सेवाओं के माध्यम से युवा पीढ़ी को जोड़ने का प्रयास कर रहा है। इसके साथ ही, नए तकनीकी नवाचार, जैसे AI आधारित प्रसारण और इंटरैक्टिव प्रोग्रामिंग, आकाशवाणी को और अधिक सुलभ और प्रभावी बनाने की दिशा में हैं। इससे यह सुनिश्चित होगा कि आकाशवाणी भविष्य में भी सूचना, शिक्षा और संस्कृति के क्षेत्र में अग्रणी रहे।



इकाई 3.2: समाचार, नाटक, वार्ता और कार्यक्रमों की शैली

3.2.1 रेडियो समाचार

रेडियो प्रसारण की कला और तकनीक: एक विस्तृत विश्लेषण

रेडियो, अपनी तीव्र पहुँच, व्यक्तिगत स्पर्श और सर्वव्यापकता के कारण, संचार का एक अनूठा माध्यम रहा है। यह केवल एक तकनीकी उपकरण नहीं, बल्कि एक कला रूप है जहाँ 'आवाज़' के माध्यम से भावनाओं, सूचनाओं और कल्पनाओं का संसार रचा जाता है इस विस्तृत विश्लेषण में, हम रेडियो प्रसारण के चार मुख्य स्तंभों पर गहराई से विचार करेंगे: समाचार, नाटक, वार्ता/फीचर और अन्य कार्यक्रम।

रेडियो समाचार

रेडियो समाचार प्रसारण का सबसे महत्वपूर्ण और अनिवार्य हिस्सा है। यह जन-जन तक सूचना पहुँचाने का सबसे तेज़ साधन है। इसकी शक्ति इसकी तत्काल प्रभावशीलता और पहुँच में निहित है।

समाचार लेखन की शैली

रेडियो समाचार लेखन की शैली प्रिंट मीडिया या टेलीविजन से पूरी तरह भिन्न होती है। इसका मूल सिद्धांत "**सुनने के लिए लिखना**" है। श्रोता के पास किसी शब्द को दोबारा पढ़ने या स्क्रीन पर वापस देखने का विकल्प नहीं होता, इसलिए लेखन अत्यंत सरल, सीधा और स्पष्ट होना चाहिए।

1. संक्षिप्तता और सरलता

रेडियो समाचार को कम से कम शब्दों में अधिकतम सूचना देनी होती है। आमतौर पर, एक मिनट के समाचार बुलेटिन में लगभग 120 से 150 शब्द होते हैं।

- **छोटे वाक्य:** वाक्य छोटे, सीधे और एक विचार तक सीमित होने चाहिए। लंबे, जटिल या उपवाक्य-युक्त वाक्यों से बचें, क्योंकि श्रोता उन्हें संसाधित नहीं कर पाता।

- **परिचित शब्दावली:** तकनीकी, कानूनी या अत्यधिक साहित्यिक शब्दों के बजाय आम बोलचाल की भाषा के शब्दों का प्रयोग करें।

2. प्रवाहमयता और गति

रेडियो समाचार को एक सतत प्रवाह बनाए रखना होता है। इसमें एक समाचार से दूसरे समाचार तक का संक्रमण सहज होना चाहिए।

- **समय का ध्यान:** लेखन करते समय इस बात का ध्यान रखें कि इसे पढ़ने में कितना समय लगेगा। महत्वपूर्ण समाचारों को शुरू में और कम महत्वपूर्ण समाचारों को बाद में रखा जाता है।
- **सक्रिय क्रिया:** निष्क्रिय क्रिया की तुलना में सक्रिय क्रिया का प्रयोग अधिक करें। यह वाक्य को अधिक सीधा और तत्काल बनाता है (जैसे: "पुलिस ने चोर को पकड़ा" बजाय "चोर को पुलिस द्वारा पकड़ा गया")।

3. अस्पष्टता से बचाव

रेडियो में केवल ध्वनि ही माध्यम है, इसलिए अस्पष्टता की कोई गुंजाइश नहीं है।

- **अंकों का प्रस्तुतीकरण:** बड़ी संख्याओं या जटिल सांख्यिकी को यथासंभव शब्दों में व्यक्त करें (जैसे: 'पचास लाख' की जगह '50,00,000' लिखने से बचें, या 'लगभग पाँच लाख' का उपयोग करें)।
- **नामों का उच्चारण:** जटिल विदेशी नामों या उपाधियों को संक्षिप्त करें या उनके उच्चारण को सरल बनाने के लिए कोष्ठक में फोनोग्राफिक स्पेलिंग का उपयोग करें।

4. तात्कालिकता

रेडियो हमेशा **वर्तमान काल** में बात करता है।

- **"होगा" की जगह "हो रहा है":** प्रिंट में जहां घटना के भविष्य को दर्शाया जाता है, वहीं रेडियो में, घटना को तत्काल घटित होते हुए प्रस्तुत किया जाता है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

यदि कोई घोषणा आज की गई है, तो कहें "प्रधानमंत्री ने आज घोषणा की है" न कि "प्रधानमंत्री ने कल घोषणा की थी।"

समाचार वाचन

समाचार लेखन के सिद्धांतों का सफल क्रियान्वयन समाचार वाचन की कला पर निर्भर करता है। एक समाचार वाचक बुलेटिन को जीवंत बनाता है।

1. आवाज़ का नियंत्रण

आवाज़ रेडियो का मुख्य उपकरण है। वाचक को अपनी आवाज़ पर पूर्ण नियंत्रण रखना चाहिए।

- **पिच और वॉल्यूम:** आवाज़ न तो बहुत ऊँची होनी चाहिए और न ही बहुत धीमी। पिच को मध्यम और आरामदायक रखें, ताकि लंबे समय तक सुनने पर श्रोता को थकान न हो।
- **मॉड्यूलेशन:** आवाज़ में उतार-चढ़ाव आवश्यक है। महत्वपूर्ण शब्दों या वाक्यों पर हल्का जोर दें, लेकिन कृत्रिमता से बचें। एकरसता सबसे बड़ी शत्रु है।

2. गति और विराम

वाचन की गति श्रोता की समझ के अनुकूल होनी चाहिए।

- **विराम:** व्याकरणिक विराम चिह्नों का पालन करने के अलावा, विचार विराम भी आवश्यक है। यह श्रोता को सूचना संसाधित करने का समय देता है। विराम का उपयोग नाटक और रहस्य बनाने के लिए भी किया जा सकता है।
- **सही गति:** तेज़ गति से बचें, क्योंकि इससे श्रोता महत्वपूर्ण जानकारी खो सकता है। सामान्यतः 130-140 शब्द प्रति मिनट की गति आदर्श मानी जाती है।

3. उच्चारण और स्पष्टता

रेडियो वाचक की सबसे बड़ी जिम्मेदारी शब्दों का शुद्ध उच्चारण करना है।

- **उच्चारण की शुद्धता:** स्थानीय या विदेशी नामों, तकनीकी शब्दों और संख्याओं का उच्चारण त्रुटिरहित होना चाहिए। जटिल या विवादास्पद शब्दों के उच्चारण के लिए प्रशिक्षण और निरंतर अभ्यास आवश्यक है।
- **डिक्शन:** होठों और जीभ का सही संचालन 'डिक्शन' को स्पष्ट और साफ बनाता है। शब्दों को 'खाए' बिना या उन्हें जल्दबाजी में 'गड़बड़ाए' बिना बोलना चाहिए।

4. व्यक्तित्व और विश्वसनीयता

यद्यपि श्रोता वाचक को देख नहीं सकता, उसकी आवाज़ में उसका व्यक्तित्व झलकता है।

- **तटस्थता:** समाचार वाचन में वाचक की व्यक्तिगत राय या भावनाएं नहीं झलकनी चाहिए। स्वर तटस्थ, गंभीर और विश्वसनीय होना चाहिए।
- **भावनात्मक बुद्धिमत्ता:** दुखद या गंभीर समाचार पढ़ते समय आवाज़ में उपयुक्त संवेदनशीलता होनी चाहिए, लेकिन यह नियंत्रण से बाहर नहीं होनी चाहिए।

3.2.2 रेडियो नाटक

रेडियो नाटक, जिसे "अंधेरे का रंगमंच" भी कहा जाता है, रेडियो की सबसे रचनात्मक विधाओं में से एक है। यह केवल संवादों के माध्यम से एक पूरी दुनिया रचता है।

विशेषताएँ

रेडियो नाटक की अपनी कुछ अनूठी विशेषताएँ हैं जो इसे अन्य माध्यमों से अलग करती हैं।

1. श्रव्य माध्यम पर पूर्ण निर्भरता

रेडियो नाटक पूरी तरह से आवाज़, संगीत और ध्वनि प्रभावों पर निर्भर करता है। यहाँ दृश्य की अनुपस्थिति ही इसकी सबसे बड़ी चुनौती और सबसे बड़ी शक्ति है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

- **कल्पना की शक्ति:** चूँकि दर्शक कुछ भी नहीं देखता, वह अपनी कल्पना का उपयोग करता है। यह नाटक को सार्वभौमिक और व्यक्तिगत बना देता है; प्रत्येक श्रोता अपने मन में अपने स्वयं के पात्रों, दृश्यों और परिवेश की कल्पना करता है।
- **सीमित स्थान और समय:** मंच नाटक की तुलना में, रेडियो नाटक स्थान (जैसे: 'जंगल', 'समुद्र', 'अंतरिक्ष') और समय (जैसे: 'भूतकाल', 'भविष्य') की सीमाओं से मुक्त होता है। ध्वनि प्रभाव एक पल में एक दृश्य से दूसरे दृश्य में संक्रमण कर सकते हैं।

2. चरित्र चित्रण

रेडियो में चरित्र चित्रण केवल आवाज़ के माध्यम से किया जाता है।

- **आवाज़ की पहचान:** चरित्र की आवाज़ (टोन, पिच, लहजा, बोलने की गति, उच्चारण) ही उसकी पहचान होती है। एक अभिनेता को केवल अपनी आवाज़ के माध्यम से एक बूढ़े, युवा, अमीर या गरीब व्यक्ति को चित्रित करना होता है।
- **संवादों की आवश्यकता:** पात्रों के बारे में जानकारी देने के लिए संवादों का प्रयोग करना पड़ता है (जैसे: "अरे राहुल, तुम तो बहुत थक गए लग रहे हो")।

3. समय की पाबंदी

रेडियो नाटक आमतौर पर 15 मिनट से लेकर 60 मिनट तक के होते हैं।

- **शीघ्र विकास:** कहानी को जल्दी से स्थापित करना होता है। चूँकि कोई दृश्य परिचय नहीं है, कहानी का संघर्ष, पात्र और परिवेश तेजी से संवादों और ध्वनि प्रभावों के माध्यम से स्थापित होने चाहिए।
- **फ्लैशबैक का उपयोग:** समय और कहानी की जटिलताओं को व्यक्त करने के लिए अक्सर ध्वनि प्रभाव-युक्त फ्लैशबैक तकनीकों का उपयोग किया जाता है।

तत्व और प्रस्तुति

एक सफल रेडियो नाटक ध्वनि के विभिन्न तत्वों के सामंजस्यपूर्ण मिश्रण पर निर्भर करता है।

1. संवाद

संवाद रेडियो नाटक का मूल तत्व है। यह कहानी को आगे बढ़ाता है, पात्रों को परिभाषित करता है, और दृश्य को स्थापित करता है।

- **कार्यशील संवाद:** संवादों को सिर्फ बातचीत नहीं होनी चाहिए; उन्हें कोई न कोई कार्य करना चाहिए (जैसे: समय बताना, स्थान बताना, क्रिया का वर्णन करना)।
- **सहजता:** संवादों को स्वाभाविक और यथार्थवादी लगना चाहिए। वे अति-व्याख्यात्मक नहीं होने चाहिए, भले ही उन्हें दृश्य को स्थापित करने का कार्य करना पड़े।

2. ध्वनि प्रभाव

ध्वनि प्रभाव रेडियो नाटक की जान होते हैं। वे न केवल स्थान स्थापित करते हैं बल्कि क्रिया और भावना को भी व्यक्त करते हैं।

- **पृष्ठभूमि ध्वनि:** यह दृश्य का परिवेश स्थापित करता है (जैसे: पक्षियों की चहचाहट जंगल को स्थापित करती है)।
- **स्पॉट:** यह विशिष्ट क्रियाओं को दर्शाता है (जैसे: दरवाजा खुलने की आवाज़, बंदूक चलने की आवाज़)।
- **SFX की भूमिका:** ध्वनि प्रभावों का चयन और मिश्रण इतनी सावधानी से किया जाना चाहिए कि वे कल्पना को उत्तेजित करें, लेकिन संवादों को ढक्के नहीं। इन्हें सावधानीपूर्वक रिकॉर्ड किया जाता है और फुटस्टेप या फोलिए जैसी ध्वनियों को स्टूडियो में बनाया जाता है।

3. संगीत

संगीत वातावरण और भावनाएँ पैदा करता है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

- **थीम संगीत:** नाटक की शुरुआत और अंत को परिभाषित करता है।
- **पृष्ठभूमि संगीत:** तनाव, रोमांस या खुशी जैसी भावनाओं को बढ़ाता है। यह एक दृश्य से दूसरे दृश्य में संक्रमण को सहज बनाने में भी मदद करता है।
- **साइलेंस:** संगीत और ध्वनि प्रभावों जितना ही महत्वपूर्ण है 'मौन'। मौन का प्रभावी उपयोग तनाव, भय या गहन विचार को व्यक्त करने का एक शक्तिशाली तरीका है।

4. प्रस्तुति और उत्पादन

रेडियो नाटक की प्रस्तुति एक जटिल तकनीकी और कलात्मक प्रक्रिया है।

- **निर्देशन:** निर्देशक यह सुनिश्चित करता है कि पात्रों की आवाज़, संवाद और भावनात्मक प्रदर्शन स्क्रिप्ट के अनुरूप हो। उन्हें ध्वनि प्रभावों और संगीत के साथ अभिनय को सिंक्रनाइज़ करना होता है।
- **रिकॉर्डिंग और मिक्सिंग:** सभी तत्वों (संवाद, संगीत, ध्वनि प्रभाव) को अलग-अलग रिकॉर्ड किया जाता है और फिर सावधानीपूर्वक संतुलित किया जाता है ताकि कोई भी तत्व हावी न हो। इसे साउंडस्केप कहा जाता है।

3.1.3 वार्ता और फीचर

रेडियो में ये दोनों विधाएँ सूचना और मनोरंजन का एक प्रभावी मिश्रण प्रस्तुत करती हैं, जहाँ विशेषज्ञता, ज्ञान और रचनात्मकता का मेल होता है।

वार्ता की शैली

वार्ता एक ऐसा कार्यक्रम है जहाँ किसी विशेषज्ञ या जानकार व्यक्ति द्वारा किसी विशिष्ट विषय पर चर्चा या प्रस्तुति दी जाती है। यह एक तरह का मोनोलॉग या कभी-कभी दो या दो से अधिक व्यक्तियों के बीच एक अनौपचारिक चर्चा हो सकती है।

1. व्यक्तिगत और अनौपचारिक स्पर्श

रेडियो पर वार्ता को एक व्यक्तिगत बातचीत की तरह प्रस्तुत किया जाना चाहिए, न कि एक औपचारिक व्याख्यान की तरह।

- **सीधा संवाद:** श्रोता को यह महसूस होना चाहिए कि वक्ता सीधे उससे बात कर रहा है। इसके लिए 'आप' या 'तुम' जैसे सर्वनामों का उपयोग अधिक सहजता से किया जाता है।
- **सहज भाषा:** भाषा सरल और स्वाभाविक होनी चाहिए। वक्ता को पांडित्य या अत्यधिक शैक्षणिक शब्दावली का प्रदर्शन करने से बचना चाहिए।

2. स्पष्ट संरचना और तार्किक प्रवाह

यद्यपि वार्ता अनौपचारिक लगती है, इसकी संरचना अत्यंत तार्किक और सुनियोजित होनी चाहिए।

- **परिचय:** विषय की स्थापना, महत्व बताना, और श्रोता की रुचि को तुरंत जागृत करना।
- **मुख्य भाग:** तर्कों या विचारों का क्रमिक और सुव्यवस्थित प्रस्तुतीकरण। प्रत्येक उप-विषय को स्पष्ट रूप से परिभाषित किया जाना चाहिए।
- **निष्कर्ष:** मुख्य बिंदुओं का सार प्रस्तुत करना और एक प्रभावी अंतिम विचार के साथ समाप्त करना।

3. उदाहरणों का महत्व

चूँकि दृश्य सामग्री उपलब्ध नहीं है, जटिल विचारों को स्पष्ट करने के लिए ठोस और प्रासंगिक उदाहरणों का उपयोग करना अनिवार्य है।

- **विज़ुअलाइज़ेशन:** वक्ता को ऐसी भाषा का उपयोग करना चाहिए जो श्रोता के मन में चित्र बनाने में मदद करे।
- **डेटा का सरलीकरण:** यदि सांख्यिकीय डेटा प्रस्तुत किया जा रहा है, तो उसे सरल उपमाओं या तुलनाओं के माध्यम से समझाया जाना चाहिए।

4. समय और ऊर्जा

रेडियो वार्ता को जीवंत बनाए रखने के लिए वक्ता की ऊर्जा और उत्साह आवश्यक है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

- **ऊर्जावान प्रस्तुति:** वक्ता की आवाज़ में एक निश्चित ऊर्जा और विश्वास होना चाहिए। आवाज़ की गति में बदलाव और हास्य का संयमित उपयोग श्रोता का ध्यान बनाए रखता है।
- **समय सीमा:** वार्ता कठोर समय सीमा (जैसे 10 मिनट) के भीतर समाप्त होनी चाहिए।

रेडियो फीचर

रेडियो फीचर एक **सृजनात्मक, गहन और विस्तृत** कार्यक्रम है जो किसी विशिष्ट विषय (व्यक्ति, घटना, स्थान या विचार) को व्यापक संदर्भ में प्रस्तुत करता है। यह समाचार और नाटक के बीच का पुल है।

1. परिभाषा और विशेषताएँ

रेडियो फीचर को एक **वृत्तचित्र** या **रिपोर्टाज** का श्रव्य रूप माना जा सकता है।

- **सृजनात्मक प्रस्तुति:** यह समाचार की तरह केवल तथ्य प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि तथ्यों को एक कलात्मक और भावनात्मक ताने-बाने में बुनता है।
- **विविधतापूर्ण तत्व:** फीचर में वार्ता, साक्षात्कार, संगीत, ध्वनि प्रभाव, और नैरेटर की कमेंट्री जैसे सभी रेडियो तत्वों का उपयोग किया जाता है।
- **गहनता:** यह किसी विषय की सतह को नहीं छूता, बल्कि उसकी गहराई में जाता है, पृष्ठभूमि और मानव रुचि पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करता है।

2. संरचना और लेआउट

फीचर की कोई कठोर संरचना नहीं होती; यह कथा और रचनात्मकता की मांग के अनुसार बदलता है।

- **ओपनिंग:** एक शक्तिशाली शुरुआत जो श्रोता को तुरंत आकर्षित करे (जैसे: एक नाटकीय ध्वनि प्रभाव, एक मार्मिक संवाद, या एक जिज्ञासु प्रश्न)।

- **विकास:** विषय का क्रमिक और तार्किक विकास। नैरेटर कहानी को एक सूत्र में पिरोता है, जबकि साक्षात्कार, संगीत और ध्वनि प्रभाव इसे प्रमाणिकता और भावना प्रदान करते हैं।

एक यादगार अंत जो विषय पर अंतिम टिप्पणी करता हो या श्रोता को आगे सोचने के लिए प्रेरित करता हो।

3. फीचर के प्रकार

- **मानव रुचि फीचर:** किसी व्यक्ति या समुदाय के संघर्ष, सफलता या अनूठी जीवनशैली पर आधारित।
- **शैक्षणिक/वैज्ञानिक फीचर:** किसी वैज्ञानिक खोज या जटिल शैक्षणिक विषय को सरल और रोचक ढंग से समझाना।
- **ऐतिहासिक फीचर:** किसी ऐतिहासिक घटना या व्यक्तित्व को उसके समय के ध्वनि प्रभावों और संदर्भों के साथ प्रस्तुत करना।

4. नैरेटर का महत्व

नैरेटर फीचर को बांधे रखने वाला मुख्य सूत्र होता है। उसकी आवाज़ में अधिकार, सहजता और विश्वसनीयता होनी चाहिए। नैरेटर को तत्वों के बीच सहज और प्रभावी संक्रमण सुनिश्चित करना होता है।

3.2.4 अन्य कार्यक्रम

रेडियो की पहचान केवल समाचार या नाटक से नहीं, बल्कि इसकी व्यापक और विविध प्रोग्रामिंग रेंज से होती है, जिसमें संगीत, व्यक्तिगत बातचीत और सामूहिक चर्चाएँ शामिल हैं।

संगीत कार्यक्रम

संगीत कार्यक्रम रेडियो का सबसे लोकप्रिय और व्यापक रूप से प्रसारित किया जाने वाला हिस्सा है। यह मनोरंजन, संस्कृति और भावना का प्राथमिक स्रोत है।



1. संगीत का चयन और प्रस्तुति

कार्यक्रम की सफलता पूरी तरह से संगीत के **चयन** और **प्रस्तुति** पर निर्भर करती है।

1. लक्षित श्रोता

संगीत कार्यक्रम की सफलता का मुख्य आधार उसका लक्षित श्रोता होता है। कार्यक्रम का चयन और प्रस्तुति इस बात पर निर्भर करता है कि किस प्रकार के श्रोता कार्यक्रम में शामिल होंगे। यदि कार्यक्रम का मुख्य लक्षित समूह युवा है, तो उन्हें आकर्षित करने के लिए पॉप, रॉक, और फ्यूजन जैसी आधुनिक संगीत शैलियों का चयन करना उचित होगा। वहीं, यदि श्रोता वृद्ध या पारंपरिक संगीत प्रेमी हैं, तो शास्त्रीय और लोक संगीत का चयन अधिक उपयुक्त होता है। शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के श्रोता भी अलग-अलग संगीत प्राथमिकताओं के साथ आते हैं। शहरी श्रोता आमतौर पर मिश्रित संगीत शैलियों के प्रति अधिक खुले रहते हैं, जबकि ग्रामीण श्रोता पारंपरिक और लोक संगीत के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं। इसके अलावा, कार्यक्रम के समय का चयन भी महत्वपूर्ण है। दिन के समय होने वाले कार्यक्रम में हल्का और मनोरंजक संगीत अधिक उपयुक्त होता है, जबकि शाम या रात के समय गहन और भावपूर्ण संगीत को प्राथमिकता दी जा सकती है। श्रोताओं की उम्र, पेशा, जीवनशैली, और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि को समझना आवश्यक है, ताकि कार्यक्रम उनके स्वाद और अपेक्षाओं के अनुरूप हो।

2. विविधता

एक सफल संगीत कार्यक्रम में विभिन्न शैलियों का संतुलित मिश्रण होना आवश्यक है। विविधता न केवल श्रोताओं को आकर्षित करती है, बल्कि उन्हें लंबे समय तक कार्यक्रम में लगे रहने के लिए प्रेरित करती है। शास्त्रीय संगीत, लोक संगीत, पॉप, और भक्ति संगीत का संतुलित मिश्रण श्रोताओं को विभिन्न भावनाओं और अनुभवों से जोड़ता है। उदाहरण के लिए, यदि कार्यक्रम की शुरुआत उत्साहपूर्ण पॉप या लोक गीतों से की जाए, तो श्रोता तुरंत आकर्षित होते हैं। इसके बाद शास्त्रीय या भावपूर्ण गीतों का समावेश श्रोताओं को भावनात्मक अनुभव प्रदान करता है। भक्ति संगीत या ध्यान संगीत का समावेश कार्यक्रम को आध्यात्मिक और सांस्कृतिक रूप देता है। इसके अलावा, संगीत की विविधता श्रोताओं की उम्र और रुचियों के अनुसार भी

अनुकूलित की जा सकती है। एक संतुलित कार्यक्रम श्रोताओं को न केवल मनोरंजन करता है, बल्कि उन्हें सांस्कृतिक और संगीतात्मक शिक्षा भी प्रदान करता है।

3. प्रवाह

संगीत कार्यक्रम का प्रवाह यानी गीतों की क्रमबद्ध व्यवस्था भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। गीतों का चयन इस प्रकार होना चाहिए कि एक गीत से दूसरे गीत में संक्रमण सहज और प्राकृतिक हो। यह कार्यक्रम के माहौल और श्रोताओं की भावनाओं को बनाए रखने में सहायक होता है। उदाहरण के लिए, यदि कार्यक्रम की शुरुआत तेज और उत्साहपूर्ण गीतों से होती है, तो उसके बाद हल्के और मध्यम गति के गीतों का समावेश श्रोताओं को थकान से बचाता है और उनकी रुचि बनाए रखता है। कार्यक्रम के मध्य में भावपूर्ण या शास्त्रीय गीतों का समावेश श्रोताओं के मन को स्थिर और भावनात्मक रूप से जोड़ता है। अंत में, कार्यक्रम का समापन उत्साहपूर्ण या लोकप्रिय गीतों से करना श्रोताओं को संतुष्टि और खुशी प्रदान करता है। प्रवाह बनाए रखने के लिए समय प्रबंधन, गीतों की लंबाई, और उनके भावनात्मक प्रभाव का ध्यान रखना आवश्यक है। उचित प्रवाह के बिना, कार्यक्रम का अनुभव असंगठित और ऊबाऊ लग सकता है।

4. आरजे/डीजे की भूमिका

आरजे या डीजे का कार्य केवल गीत बजाना नहीं होता; वे श्रोताओं और संगीत के बीच एक सेतु का काम करते हैं। उनके रोचक 'लिंक्स', टिप्पणियाँ, और व्यक्तिगत जुड़ाव श्रोताओं को कार्यक्रम में बनाए रखने में सहायक होते हैं। उदाहरण के लिए, आरजे श्रोताओं को गीतों के पीछे की कहानियाँ, गीतकार और गायकों की जानकारी, और गीतों से संबंधित रोचक तथ्य साझा कर सकते हैं। इससे श्रोता गीतों के प्रति और अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं। इसके अतिरिक्त, डीजे या आरजे श्रोताओं के साथ संवाद स्थापित करके कार्यक्रम को इंटरैक्टिव और जीवंत बनाते हैं। वे श्रोताओं की प्रतिक्रियाओं को ध्यान में रखते हुए कार्यक्रम में बदलाव कर सकते हैं, जिससे श्रोता अनुभव और भी संतोषजनक होता है। आरजे/डीजे का व्यक्तिगत अंदाज और शैली भी कार्यक्रम की सफलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उनकी आवाज़ की लय, उत्साह, और ऊर्जा श्रोताओं की भावना और कार्यक्रम की गति को प्रभावित करती है।



5. थीम और कार्यक्रम की रूपरेखा

संगीत कार्यक्रम की सफलता का एक और महत्वपूर्ण पहलू उसकी थीम और संरचना है। थीम का चयन श्रोताओं के स्वाद और कार्यक्रम के उद्देश्य पर आधारित होना चाहिए। उदाहरण के लिए, यदि कार्यक्रम का उद्देश्य युवा श्रोताओं को आकर्षित करना है, तो आधुनिक पॉप और फ्यूजन संगीत को प्राथमिकता दी जा सकती है। कार्यक्रम की रूपरेखा में गीतों का क्रम, ब्रेक्स, और इंटरल्यूड्स शामिल होने चाहिए। यह श्रोताओं को विश्राम और पुनः उत्साह के लिए समय देता है। कार्यक्रम में सांस्कृतिक, सामाजिक, या मौसमी थीम भी शामिल की जा सकती हैं, जैसे कि त्योहारी गीत, राष्ट्रीय गीत, या मौसमी हिट्स। थीम आधारित कार्यक्रम श्रोताओं को एक संगठित और उद्देश्यपूर्ण अनुभव प्रदान करता है।

6. तकनीकी और ध्वनि प्रबंधन

संगीत कार्यक्रम की गुणवत्ता का निर्धारण तकनीकी और ध्वनि प्रबंधन से भी होता है। उचित ध्वनि तकनीक, माइक्रोफोन, स्पीकर, और ऑडियो मिक्सिंग श्रोताओं के अनुभव को सीधे प्रभावित करते हैं। यदि ध्वनि स्पष्ट और संतुलित नहीं होगी, तो श्रोता गीतों का आनंद नहीं ले पाएंगे। ध्वनि प्रबंधन में प्रत्येक संगीत शैली की ध्वनि विशेषताओं को ध्यान में रखना आवश्यक है। उदाहरण के लिए, शास्त्रीय संगीत में सूक्ष्म आवाज़ और वाद्ययंत्र की स्पष्टता महत्वपूर्ण होती है, जबकि पॉप और लोक संगीत में उच्च और जीवंत ध्वनि प्रभाव की आवश्यकता होती है। तकनीकी प्रबंधन के लिए पेशेवर ध्वनि इंजीनियर और तकनीकी सहायता टीम का होना अनिवार्य है।

7. श्रोताओं की सहभागिता

संगीत कार्यक्रम की सफलता में श्रोताओं की सहभागिता महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। आरजे/डीजे श्रोताओं को गानों के अनुरोध, प्रतियोगिताओं, और संवादात्मक सत्रों के माध्यम से कार्यक्रम में शामिल कर सकते हैं। यह श्रोताओं को व्यक्तिगत अनुभव प्रदान करता है और उनकी रुचि बनाए रखता है। सोशल मीडिया प्लेटफार्मों का उपयोग करके श्रोताओं से प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया और सुझाव प्राप्त करना भी उपयोगी होता

है। श्रोताओं की सहभागिता कार्यक्रम को इंटरैक्टिव और जीवंत बनाती है और उन्हें गीतों के साथ भावनात्मक रूप से जोड़ती है।

8. सांस्कृतिक और भावनात्मक संतुलन

एक सफल संगीत कार्यक्रम में सांस्कृतिक और भावनात्मक संतुलन होना आवश्यक है। यह श्रोताओं को विविध अनुभव प्रदान करता है। लोक और शास्त्रीय संगीत श्रोताओं को सांस्कृतिक और पारंपरिक अनुभव प्रदान करते हैं, जबकि पॉप और आधुनिक संगीत उन्हें मनोरंजन और ताजगी का अनुभव कराते हैं। भावनात्मक संतुलन के लिए गीतों का चयन इस प्रकार होना चाहिए कि श्रोताओं की भावनाओं में उतार-चढ़ाव आता रहे। उदाहरण के लिए, उत्साहपूर्ण गीतों के बाद भावपूर्ण गीतों का समावेश श्रोताओं के अनुभव को गहन और समृद्ध बनाता है।

9. समय प्रबंधन और कार्यक्रम की लंबाई

संगीत कार्यक्रम की सफलता के लिए समय प्रबंधन और कार्यक्रम की लंबाई का ध्यान रखना आवश्यक है। प्रत्येक गीत की लंबाई, ब्रेक, और इंटरल्यूड्स का सही प्रबंधन श्रोताओं की रुचि बनाए रखने में सहायक होता है। अत्यधिक लंबा कार्यक्रम श्रोताओं को थका सकता है, जबकि बहुत छोटा कार्यक्रम अनुभव को अधूरा छोड़ सकता है। कार्यक्रम की लंबाई और समय का चयन श्रोताओं की उम्र, जीवनशैली, और कार्यक्रम के उद्देश्य के अनुसार किया जाना चाहिए। उदाहरण के लिए, युवा श्रोताओं के लिए संक्षिप्त और ऊर्जावान कार्यक्रम अधिक उपयुक्त होते हैं, जबकि वृद्ध श्रोताओं के लिए विस्तारित और भावपूर्ण कार्यक्रम अधिक उपयुक्त होता है।

10. मूल्यांकन और प्रतिक्रिया

कार्यक्रम के अंत में मूल्यांकन और श्रोताओं की प्रतिक्रिया का संग्रह करना महत्वपूर्ण है। यह भविष्य के कार्यक्रमों के लिए मार्गदर्शन और सुधार के अवसर प्रदान करता है। श्रोताओं की प्रतिक्रिया गीतों की पसंद, आरजे/डीजे की प्रस्तुति, और कार्यक्रम की समग्र अनुभव के बारे में महत्वपूर्ण जानकारी देती है। ऑनलाइन सर्वेक्षण, सोशल मीडिया फीडबैक, और प्रत्यक्ष प्रतिक्रियाओं के माध्यम से यह जानकारी प्राप्त की जा



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

सकती है। मूल्यांकन से कार्यक्रम की गुणवत्ता और श्रोताओं की संतुष्टि सुनिश्चित होती है, और भविष्य में और बेहतर कार्यक्रम आयोजित करने में मदद मिलती है।

संगीत कार्यक्रम की योजना, लक्षित श्रोता, विविधता, प्रवाह, और आरजे/डीजे की भूमिका को समझकर ही एक संतुलित, आकर्षक, और सफल कार्यक्रम तैयार किया जा सकता है। इन सभी तत्वों का समन्वय श्रोताओं को मनोरंजन, सांस्कृतिक अनुभव, और भावनात्मक जुड़ाव प्रदान करता है, जिससे कार्यक्रम यादगार और प्रभावशाली बनता है।

2. लिंक्स और व्यक्तिगत स्पर्श

संगीत कार्यक्रमों में RJ के लिंक्स ही कार्यक्रम को विशिष्टता प्रदान करते हैं।

- **इंटरैक्टिविटी:** आधुनिक संगीत कार्यक्रम अत्यधिक इंटरैक्टिव होते हैं। RJ श्रोताओं के संदेश, अनुरोध, और कॉल को शामिल करते हैं, जिससे श्रोता को कार्यक्रम का हिस्सा महसूस होता है।
- **लिंक्स की सामग्री:** लिंक्स को प्रासंगिक, संक्षिप्त, ज्ञानवर्धक और मनोरंजक होना चाहिए। RJ को अपनी आवाज़ में एक अनूठा, आकर्षक व्यक्तित्व विकसित करना होता है।

3. विशेष संगीत कार्यक्रम

- **फार्मेटेड रेडियो:** कुछ स्टेशन विशिष्ट संगीत शैलियों के लिए समर्पित होते हैं (जैसे: केवल क्लासिक हिट्स, केवल क्षेत्रीय संगीत)।
- **रिकॉर्डेड बनाम लाइव:** कुछ कार्यक्रम पूर्व-रिकॉर्डेड होते हैं, जबकि अन्य लाइव होते हैं, जहाँ RJ श्रोताओं के साथ तत्काल बातचीत करते हैं।

साक्षात्कार

साक्षात्कार एक सूचनात्मक और व्यक्तिगत कार्यक्रम विधा है जिसमें किसी व्यक्ति (जैसे: राजनेता, कलाकार, वैज्ञानिक) के विचार, अनुभव या ज्ञान को सीधे श्रोता तक पहुँचाया जाता है।

1. तैयारी और अनुसंधान

एक सफल साक्षात्कारकर्ता की कुंजी उसकी तैयारी में निहित है।

- **गहन अनुसंधान:** साक्षात्कारकर्ता को मेहमान (Guest) के विषय, पृष्ठभूमि और हालिया गतिविधियों के बारे में पूरी जानकारी होनी चाहिए।
- **प्रश्नों का निर्माण:** प्रश्न स्पष्ट, खुले-छोर वाले (open-ended), और विषय के अनुकूल होने चाहिए। 'हाँ' या 'नहीं' में जवाब दिए जाने वाले प्रश्नों से बचना चाहिए, ताकि मेहमान को विस्तार से बोलने का मौका मिले।
- **लक्ष्य निर्धारण:** साक्षात्कार शुरू करने से पहले यह स्पष्ट होना चाहिए कि इस बातचीत का मुख्य उद्देश्य क्या है (सूचना प्राप्त करना, व्यक्तित्व उजागर करना, या राय जानना)।

2. साक्षात्कार की तकनीक

साक्षात्कार की कला केवल प्रश्न पूछना नहीं, बल्कि सुनना भी है।

- **सक्रिय श्रवण:** साक्षात्कारकर्ता को ध्यान से सुनना चाहिए ताकि वह मेहमान के उत्तरों के आधार पर अनुवर्ती प्रश्न पूछ सके।
- **नियंत्रण बनाए रखना:** साक्षात्कारकर्ता को बातचीत की दिशा को नियंत्रित करना चाहिए, यह सुनिश्चित करते हुए कि मेहमान विषय से भटके नहीं और समय सीमा का पालन हो।
- **निष्पक्षता:** साक्षात्कारकर्ता को व्यक्तिगत पूर्वाग्रह (bias) से बचना चाहिए। चुनौतीपूर्ण प्रश्न विनम्रता और दृढ़ता के साथ पूछे जाने चाहिए।

3. प्रस्तुति

रेडियो साक्षात्कार को एक अनौपचारिक और दोस्ताना बातचीत जैसा लगाना चाहिए, भले ही विषय गंभीर हो।

- **परिचय:** मेहमान का परिचय संक्षिप्त लेकिन प्रभावशाली होना चाहिए, जिसमें उनकी प्रासंगिकता को स्थापित किया जाए।



- **अंतिम टिप्पणी:** साक्षात्कार का समापन धन्यवाद ज्ञापन और मुख्य विचारों के संक्षिप्त सार के साथ किया जाना चाहिए।

परिचर्चा

परिचर्चा एक से अधिक विशेषज्ञों के बीच एक विषय पर सामूहिक बहस या विचार-विमर्श की प्रक्रिया है। यह श्रोताओं को एक ही विषय पर विभिन्न दृष्टिकोणों से अवगत कराती है।

1. उद्देश्य और संरचना

परिचर्चा का मुख्य उद्देश्य किसी जटिल या विवादास्पद विषय के बहुआयामी पहलुओं को सामने लाना है।

- **पैनल का चयन:** प्रतिभागियों का चयन इस प्रकार होना चाहिए कि वे विषय के विभिन्न, और संभवतः विपरीत, पहलुओं का प्रतिनिधित्व करें।
- **संचालक की भूमिका:** संचालक परिचर्चा की रीढ़ होता है। उसकी भूमिका निम्नलिखित है:
 - **परिचय और नियम:** विषय और प्रतिभागियों का परिचय कराना तथा चर्चा के नियम (जैसे: समय सीमा, आक्रामक होने से बचना) स्थापित करना।
 - **प्रवाह को नियंत्रित करना:** सुनिश्चित करना कि प्रत्येक प्रतिभागी को बोलने का पर्याप्त और समान मौका मिले। किसी एक वक्ता को हावी होने से रोकना।
 - **संक्रमण:** एक उप-विषय से दूसरे उप-विषय तक सुचारु रूप से बढ़ना।
 - **स्पष्टीकरण:** जब आवश्यक हो, जटिल बिंदुओं को सरल करना या अस्पष्ट उत्तरों के लिए स्पष्टीकरण मांगना।
 - **समय का प्रबंधन:** परिचर्चा को निर्धारित समय सीमा के भीतर पूरा करना।

2. गतिशीलता और चुनौती

परिचर्चा की सफलता उसकी गतिशीलता में निहित है

परिचर्चा की सफलता का मुख्य आधार उसकी गतिशीलता में निहित है। किसी भी चर्चा का उद्देश्य केवल जानकारी साझा करना नहीं होता, बल्कि यह विचारों के आदान-प्रदान और समझ की गहराई बढ़ाने का माध्यम भी है। गतिशीलता का अर्थ है कि चर्चा में ऊर्जा, लचीलापन और सहभागिता का स्तर निरंतर बना रहे। यदि चर्चा स्थिर और एकरूप होती है, तो श्रोता का ध्यान भटक सकता है और विषय की गहन समझ प्राप्त नहीं हो पाती। इसलिए, संचालक का कर्तव्य है कि वह चर्चा को सक्रिय, आकर्षक और उद्देश्यपूर्ण बनाए रखे। गतिशीलता बनाए रखने के लिए संचालक को विषय की विविधताओं, श्रोताओं की प्रतिक्रियाओं और चर्चा के प्रवाह को समझते हुए समय-समय पर मार्गदर्शन करना चाहिए। यह सुनिश्चित करता है कि चर्चा सतत प्रगतिशील और परिणामोन्मुखी बनी रहे।

जीवंतता: चर्चा को आकर्षक बनाए रखना

चर्चा की जीवंतता बनाए रखना किसी भी सफल परिचर्चा का महत्वपूर्ण तत्व है। चर्चा को रोचक और आकर्षक बनाए रखने के लिए कभी-कभी संचालक को प्रत्यक्ष टकराव या बहस को प्रोत्साहित करना पड़ सकता है। यह बहस विचारों को परखने और नए दृष्टिकोण उत्पन्न करने का अवसर प्रदान करती है। हालांकि, यह महत्वपूर्ण है कि यह टकराव विनम्र और नियंत्रित ढंग से हो। अगर बहस अनियंत्रित हो जाए, तो यह श्रोताओं में असहजता उत्पन्न कर सकता है और चर्चा का उद्देश्य पीछे हट सकता है। इसलिए, संचालक को बहस और मतभेद के बीच संतुलन बनाए रखना चाहिए। वह श्रोताओं के मनोवैज्ञानिक दृष्टिकोण को ध्यान में रखते हुए यह सुनिश्चित करें कि सभी प्रतिभागियों को अपनी बात कहने का अवसर मिले और कोई भी दबाव या असहमति श्रोताओं के अनुभव को प्रभावित न करे।

श्रोता का दृष्टिकोण: चर्चा में सहभागिता सुनिश्चित करना

संचालक का एक अन्य महत्वपूर्ण कर्तव्य श्रोता का दृष्टिकोण बनाए रखना है। चर्चा का उद्देश्य केवल वक्ता की राय प्रस्तुत करना नहीं है, बल्कि श्रोताओं के अनुभव और समझ को समृद्ध करना भी है। इसलिए, चर्चा को आम आदमी के लिए सुलभ और प्रासंगिक बनाए रखना आवश्यक है। इसका अर्थ है कि कठिन तकनीकी शब्दावली या जटिल तर्कों का उपयोग बिना स्पष्टीकरण के न किया जाए। संचालक को श्रोताओं की प्रतिक्रियाओं पर नजर रखनी चाहिए और उनके प्रश्नों तथा संदेहों का समाधान करते हुए चर्चा को आगे बढ़ाना चाहिए। श्रोताओं की सहभागिता से चर्चा अधिक समृद्ध और व्यावहारिक बनती है, जिससे नए विचार और समाधान उत्पन्न होते हैं।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

विषय की स्पष्टता और संरचना

सफल परिचर्चा के लिए विषय की स्पष्टता और सुव्यवस्थित संरचना आवश्यक है। यदि चर्चा में विषय अस्पष्ट या असंगठित है, तो श्रोता भ्रमित हो सकते हैं और मुख्य उद्देश्य खो सकता है। संचालक को चर्चा की रूपरेखा पहले से तैयार करनी चाहिए, जिसमें प्रमुख बिंदु, संभावित विवादास्पद मुद्दे और निष्कर्ष की रूपरेखा शामिल हो। इससे चर्चा के दौरान दिशा बनी रहती है और समय का प्रभावी उपयोग होता है। इसके अलावा, विषय की स्पष्टता श्रोताओं को सामग्री को समझने और उसे अपने जीवन या कार्य से जोड़ने में मदद करती है।

बहु-विषयक दृष्टिकोण अपनाना

चर्चा में बहु-विषयक दृष्टिकोण अपनाना भी महत्वपूर्ण है। किसी भी विषय को केवल एक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करने से श्रोता की समझ सीमित रह सकती है। इसलिए, संचालक को विभिन्न विशेषज्ञों, शोधों और अनुभवों को शामिल करके चर्चा को समृद्ध बनाना चाहिए। बहु-विषयक दृष्टिकोण से श्रोताओं को समस्या के विभिन्न पहलुओं को समझने का अवसर मिलता है और उन्हें अधिक संतुलित दृष्टिकोण विकसित करने में मदद मिलती है।

समय प्रबंधन और प्रवाह

संचालक का एक अन्य महत्वपूर्ण कर्तव्य समय प्रबंधन और चर्चा के प्रवाह को बनाए रखना है। परिचर्चा का प्रभाव तभी रहता है जब सभी बिंदुओं पर पर्याप्त समय दिया जाए और चर्चा समय पर समाप्त हो। संचालक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि कोई भी प्रतिभागी चर्चा को अत्यधिक लंबा न करे और सभी महत्वपूर्ण मुद्दों को शामिल किया जाए। समय प्रबंधन से श्रोताओं की रुचि बनी रहती है और चर्चा अधिक प्रभावशाली बनती है।

प्रश्न और उत्तर सत्र का महत्व

प्रश्न और उत्तर सत्र परिचर्चा का महत्वपूर्ण भाग है। यह श्रोताओं को सक्रिय रूप से शामिल होने और अपनी जिज्ञासा को व्यक्त करने का अवसर देता है। संचालक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि प्रश्न सत्र व्यवस्थित और उद्देश्यपूर्ण हो। प्रतिभागियों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए कि वे स्पष्ट और संक्षिप्त प्रश्न पूछें और वक्ताओं को उत्तर देने का पर्याप्त समय मिले। यह सत्र चर्चा को अधिक गहन और व्यावहारिक बनाता है।

प्रमुख बिंदुओं का सारांश

संचालक का अंतिम कर्तव्य चर्चा के प्रमुख निष्कर्षों को संक्षिप्त रूप से प्रस्तुत करना है। निष्कर्ष में मुख्य बिंदुओं, विचारों और संभावित समाधान का सारांश होना चाहिए। यह श्रोताओं को चर्चा की मुख्य उपलब्धियों और सीखों को याद रखने में मदद करता है। निष्कर्ष संतुलित और निष्पक्ष दृष्टिकोण प्रस्तुत करना चाहिए, जिससे श्रोताओं को स्वयं निर्णय लेने का अवसर मिले।

चर्चा की निष्पक्षता और संतुलन

संचालक को चर्चा की निष्पक्षता और संतुलन बनाए रखना अत्यंत आवश्यक है। किसी भी प्रतिभागी या दृष्टिकोण को विशेष लाभ देना या अनदेखा करना चर्चा के उद्देश्य को कमजोर कर सकता है। इसलिए, संचालक को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि सभी प्रतिभागियों को समान अवसर मिले और सभी दृष्टिकोणों का सम्मान हो। निष्पक्षता से श्रोताओं में विश्वास और चर्चा में गंभीरता बनी रहती है।

चर्चा के बाद फीडबैक और मूल्यांकन

परिचर्चा के सफल होने के बाद फीडबैक और मूल्यांकन भी आवश्यक है। श्रोताओं और प्रतिभागियों से प्रतिक्रिया लेकर संचालक यह जान सकते हैं कि चर्चा कितनी प्रभावशाली रही और किन क्षेत्रों में सुधार की आवश्यकता है। यह फीडबैक भविष्य में परिचर्चा की गुणवत्ता बढ़ाने में मदद करता है और श्रोताओं की संतुष्टि सुनिश्चित करता है।

सतत सुधार और शिक्षण अनुभव

अंत में, परिचर्चा को केवल एक बार का कार्यक्रम न मानकर इसे सतत शिक्षण अनुभव के रूप में लिया जाना चाहिए। प्रत्येक परिचर्चा से संचालक और प्रतिभागियों को सीखने और सुधारने का अवसर मिलता है। गतिशीलता, जीवंतता, श्रोता की सहभागिता, निष्कर्ष और संतुलन सभी मिलकर परिचर्चा की सफलता सुनिश्चित करते हैं। समय के साथ अनुभव और फीडबैक से संचालक अपनी क्षमता को और विकसित कर सकते हैं और अधिक प्रभावशाली परिचर्चा आयोजित कर सकते हैं।

3. तकनीकी पहलू

परिचर्चा में कई माइक्रोफ़ोन का उपयोग किया जाता है। सभी वक्ताओं की आवाज़ को एक स्पष्ट और सुसंगत स्तर पर बनाए रखने के लिए रिकॉर्डिंग इंजीनियर को सावधानीपूर्वक मिक्सिंग और इक्लाइज़ेशन करनी पड़ती है। रेडियो प्रसारण की कला और तकनीक एक सतत विकसित होने वाला क्षेत्र है। समाचार लेखन की संक्षिप्तता, नाटक की रचनात्मकता, फीचर की गहनता और विभिन्न कार्यक्रमों की गतिशीलता मिलकर एक ऐसा माध्यम तैयार करती है जो न केवल सूचना देता है बल्कि मानव मन में अमिट छाप छोड़ता है। इन सभी विधाओं में सफलता की कुंजी आवाज़ की शक्ति को समझना और उसका प्रभावी ढंग से उपयोग करना है। आधुनिक रेडियो (विशेषकर पॉडकास्टिंग) में ये सभी सिद्धांत आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने बीते दशकों में थे, केवल प्रस्तुति के तरीके में थोड़ा बदलाव आया है।



इकाई 3.3: आकाशवाणी का सामाजिक और सांस्कृतिक योगदान

3.3.1 सामाजिक योगदान

रेडियो का सामाजिक, सांस्कृतिक और शैक्षिक योगदान: एक विस्तृत अध्ययन

रेडियो ने भारत में अपनी स्थापना से लेकर आज तक समाज के विभिन्न पहलुओं को गहराई से प्रभावित किया है। यह केवल एक मनोरंजन का माध्यम नहीं रहा, बल्कि सामाजिक परिवर्तन, सांस्कृतिक संरक्षण और शैक्षिक विकास का एक सशक्त उपकरण बन गया है। आइए हम इन तीनों महत्वपूर्ण आयामों को विस्तार से समझें और देखें कि किस प्रकार रेडियो ने भारतीय समाज की बुनियाद को मजबूत करने में अपना योगदान दिया है।

1 सामाजिक योगदान

रेडियो का सामाजिक योगदान बहुआयामी और दूरगामी रहा है। जब हम रेडियो के सामाजिक प्रभाव की बात करते हैं, तो हमें यह समझना होगा कि यह माध्यम उन स्थानों तक भी पहुंचा जहां अन्य संचार माध्यमों की पहुंच संभव नहीं थी। इसकी सरलता, सुवाह्यता और कम लागत ने इसे जन-जन का माध्यम बना दिया।

जन जागरूकता का प्रसार

रेडियो ने भारतीय समाज में जन जागरूकता फैलाने में अग्रणी भूमिका निभाई है। स्वतंत्रता के बाद जब देश नवनिर्माण के दौर से गुजर रहा था, तब रेडियो ने लोगों को उनके अधिकारों, कर्तव्यों और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूक किया। ग्रामीण क्षेत्रों में जहां साक्षरता दर बहुत कम थी, वहां रेडियो ने मौखिक संचार के माध्यम से लोगों तक महत्वपूर्ण जानकारी पहुंचाई। रेडियो ने सामाजिक कुरीतियों जैसे बाल विवाह, दहेज प्रथा, जातिगत भेदभाव और लैंगिक असमानता के खिलाफ जागरूकता अभियान चलाए। विभिन्न नाटकों, वार्ताओं और चर्चाओं के माध्यम से समाज में व्याप्त इन बुराईयों पर प्रकाश डाला गया। उदाहरण के लिए, आकाशवाणी द्वारा प्रसारित कार्यक्रमों में महिला सशक्तिकरण, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, और

महिलाओं के कानूनी अधिकारों पर विशेष कार्यक्रम प्रसारित किए गए जिन्होंने समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में योगदान दिया। मतदाता जागरूकता के क्षेत्र में रेडियो की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। चुनाव के समय रेडियो ने लोगों को उनके मताधिकार के महत्व से अवगत कराया और मतदान प्रक्रिया को समझाने में मदद की। विशेष रूप से प्रथम बार मतदान करने वाले युवाओं और दूरदराज के क्षेत्रों में रहने वाले नागरिकों के लिए रेडियो एक प्रभावी माध्यम साबित हुआ। स्वच्छता अभियानों में भी रेडियो की भूमिका सराहनीय रही है। स्वच्छ भारत मिशन के दौरान रेडियो ने व्यापक प्रचार-प्रसार किया और लोगों को स्वच्छता के महत्व से परिचित कराया। प्रधानमंत्री के मन की बात कार्यक्रम में भी स्वच्छता और अन्य सामाजिक मुद्दों पर नियमित चर्चा होती है जो लाखों श्रोताओं तक पहुंचती है। वित्तीय साक्षरता के क्षेत्र में रेडियो ने बैंकिंग सुविधाओं, बीमा योजनाओं, पेंशन कार्यक्रमों और सरकारी योजनाओं के बारे में जागरूकता फैलाई। जन धन योजना, प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और अटल पेंशन योजना जैसी योजनाओं की जानकारी रेडियो के माध्यम से दूरदराज के क्षेत्रों तक पहुंचाई गई। यह विशेष रूप से उन लोगों के लिए महत्वपूर्ण था जिनकी इंटरनेट या अन्य आधुनिक संचार माध्यमों तक पहुंच नहीं थी।

सामाजिक मुद्दों पर कार्यक्रम

रेडियो ने विभिन्न सामाजिक मुद्दों को उठाने और उन पर सार्थक चर्चा करने के लिए एक मंच प्रदान किया है। पर्यावरण संरक्षण, जल संरक्षण, वन संरक्षण और जलवायु परिवर्तन जैसे महत्वपूर्ण मुद्दों पर रेडियो ने नियमित कार्यक्रम प्रसारित किए हैं। इन कार्यक्रमों में विशेषज्ञों की राय, वैज्ञानिक दृष्टिकोण और व्यावहारिक समाधानों को सरल भाषा में प्रस्तुत किया जाता है जिससे आम श्रोता भी इन जटिल मुद्दों को समझ सकें। बाल श्रम, बाल अधिकार और बाल शिक्षा पर रेडियो ने विशेष ध्यान दिया है। विभिन्न कार्यक्रमों में बच्चों के शोषण के खिलाफ जागरूकता फैलाई गई और उनके संरक्षण के लिए कानूनी प्रावधानों की जानकारी दी गई। बचपन बचाओ आंदोलन और अन्य सामाजिक संगठनों के साथ मिलकर रेडियो ने बच्चों के अधिकारों की रक्षा के लिए प्रभावी अभियान चलाए। वृद्धजनों के कल्याण और उनके अधिकारों के संबंध में भी रेडियो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। बुजुर्गों के लिए स्वास्थ्य सेवाओं, पेंशन योजनाओं और सामाजिक सुरक्षा के विषय पर नियमित कार्यक्रम प्रसारित किए जाते



हैं। इसके अलावा, एकाकी बुजुर्गों की समस्याओं और उनके समाधान पर भी चर्चा की जाती है। नशामुक्ति अभियानों में रेडियो की भूमिका अत्यंत सराहनीय रही है। नशे की लत के दुष्परिणामों, पुनर्वास केंद्रों की जानकारी और नशे से मुक्ति के उपायों पर विस्तृत कार्यक्रम प्रसारित किए गए हैं। विशेष रूप से युवाओं को नशे के खतरों से सावधान करने के लिए नाटकों और वार्ताओं का आयोजन किया गया। एड्स और अन्य संक्रामक रोगों के प्रति जागरूकता फैलाने में रेडियो ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इन संवेदनशील विषयों पर खुलकर चर्चा करना और गलत धारणाओं को दूर करना रेडियो ने संभव बनाया। इसने समाज में फैली कलंक की भावना को कम करने और प्रभावित लोगों के प्रति सहानुभूति जगाने में मदद की।

आपदा प्रबंधन में भूमिका

आपदा प्रबंधन में रेडियो की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण और जीवनरक्षक रही है। जब अन्य संचार माध्यम विफल हो जाते हैं, तब रेडियो सबसे विश्वसनीय माध्यम बन जाता है। बाढ़, भूकंप, चक्रवात और अन्य प्राकृतिक आपदाओं के समय रेडियो ने त्वरित और सटीक सूचना प्रदान करके अनगिनत जीवन बचाए हैं। आपदा से पहले, रेडियो चेतावनी प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। मौसम विभाग और आपदा प्रबंधन प्राधिकरण के साथ समन्वय में रेडियो समय पर चेतावनी प्रसारित करता है। उदाहरण के लिए, चक्रवात आने से पहले तटीय क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को समय पर सूचित किया जाता है ताकि वे सुरक्षित स्थानों पर जा सकें। ये चेतावनियां स्थानीय भाषाओं में प्रसारित की जाती हैं जिससे सभी लोग इन्हें आसानी से समझ सकें। आपदा के दौरान, रेडियो निरंतर अपडेट प्रदान करता है। बचाव कार्यों की प्रगति, राहत शिविरों का स्थान, चिकित्सा सुविधाओं की उपलब्धता और अन्य महत्वपूर्ण जानकारी का प्रसारण होता है। 2004 की सुनामी, 2013 की उत्तराखंड बाढ़ और 2015 के नेपाल भूकंप जैसी बड़ी आपदाओं में रेडियो ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रेडियो स्टेशनों ने चौबीसों घंटे प्रसारण करके लापता व्यक्तियों की जानकारी, राहत सामग्री के वितरण और बचाव कार्यों के समन्वय में सहायता की।

आपदा के बाद, पुनर्वास और पुनर्निर्माण के दौरान भी रेडियो की भूमिका जारी रहती है। मनोसामाजिक सहायता कार्यक्रम, सरकारी सहायता योजनाओं की जानकारी और

समुदाय को फिर से एकजुट करने के प्रयासों में रेडियो सक्रिय रहता है। आपदा प्रभावित लोगों की कहानियां सुनाकर और उनके अनुभवों को साझा करके रेडियो समाज में सहानुभूति और एकजुटता की भावना को बढ़ावा देता है। कम्युनिटी रेडियो स्टेशनों ने स्थानीय आपदा प्रबंधन में विशेष रूप से प्रभावी भूमिका निभाई है। ये स्टेशन स्थानीय भूगोल, भाषा और संस्कृति से परिचित होते हैं, इसलिए वे अधिक प्रासंगिक और तत्काल जानकारी प्रदान कर सकते हैं। कुछ कम्युनिटी रेडियो स्टेशनों ने स्थानीय आपदा प्रबंधन समितियों के साथ मिलकर आपदा तैयारी कार्यक्रम भी चलाए हैं जिससे समुदाय आपदाओं के लिए बेहतर तरीके से तैयार हो सके। रेडियो ने आपदा जोखिम न्यूनीकरण में भी योगदान दिया है। नियमित कार्यक्रमों में भूकंप सुरक्षा, बाढ़ से बचाव और अग्नि सुरक्षा के उपायों पर शिक्षा दी जाती है। ड्रिल और अभ्यासों के बारे में जानकारी प्रसारित की जाती है जिससे लोग आपात स्थिति में कैसे प्रतिक्रिया करें, यह सीख सकें।

2 सांस्कृतिक योगदान

भारत की सांस्कृतिक विविधता और समृद्धि को संरक्षित और प्रसारित करने में रेडियो की भूमिका अद्वितीय रही है। जब हम रेडियो के सांस्कृतिक योगदान की बात करते हैं, तो यह केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह हमारी सांस्कृतिक पहचान को बनाए रखने और नई पीढ़ियों तक पहुंचाने का माध्यम भी है।

लोक संगीत और कला का प्रसार

रेडियो ने भारतीय लोक संगीत और कला के संरक्षण और प्रचार में अभूतपूर्व योगदान दिया है। जब टेलीविजन और अन्य आधुनिक माध्यम नहीं थे, तब रेडियो ने देश के विभिन्न क्षेत्रों की लोक संगीत परंपराओं को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंच प्रदान किया। राजस्थान के मांड गायन से लेकर बंगाल के बाउल गीत, पंजाब की भांगड़ा धुनों से लेकर असम के बिहू गीतों तक, रेडियो ने सभी को समान महत्व दिया। विविध भारती ने लोक संगीत के प्रसार में विशेष भूमिका निभाई है। साप्ताहिक कार्यक्रमों में विभिन्न राज्यों के लोक गायकों और वादकों को अवसर दिया जाता रहा है। इसने न केवल इन कलाकारों को पहचान दिलाई बल्कि उनकी कला को भी लोकप्रिय बनाया।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

जो लोक गायक गांवों और कस्बों तक सीमित थे, रेडियो ने उन्हें राष्ट्रीय कलाकार का दर्जा दिया। लोक वाद्य यंत्रों का प्रचार भी रेडियो के माध्यम से हुआ। सारंगी, रवाब, इकतारा, दोतारा, तुम्बी और अन्य पारंपरिक वाद्य यंत्रों को रेडियो कार्यक्रमों में स्थान मिला। इन वाद्य यंत्रों की अनूठी ध्वनि और संगीतीय परंपरा को नई पीढ़ी तक पहुंचाने में रेडियो का योगदान अमूल्य है। कई युवा संगीतकारों ने रेडियो पर सुनकर ही इन पारंपरिक वाद्य यंत्रों को सीखने की प्रेरणा ली। लोक नाट्य परंपराओं को भी रेडियो ने संरक्षित किया। नौटंकी, तमाशा, यक्षगान, भवाई और अन्य लोक नाट्य रूपों को रेडियो नाटकों के रूप में प्रस्तुत किया गया। हालांकि ये दृश्य कला रूप हैं, लेकिन रेडियो ने ध्वनि प्रभावों और संवाद के माध्यम से इन्हें श्रोताओं तक पहुंचाया। इससे इन परंपराओं की जीवंतता बनी रही और नई पीढ़ियां इनसे परिचित हो सकीं।

आकाशवाणी द्वारा संगीत समाचार कार्यक्रम ने शास्त्रीय और लोक संगीत के समारोहों, उत्सवों और कार्यक्रमों की जानकारी प्रसारित की। इससे संगीत प्रेमियों को देश भर में हो रहे संगीत आयोजनों की जानकारी मिलती रही। यह एक प्रकार से संगीत समुदाय को जोड़ने का काम करता रहा। लोक कवियों और कहानीकारों को भी रेडियो ने मंच प्रदान किया। कहानी सुनाने की परंपरा, जो भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है, को रेडियो ने जीवित रखा। विभिन्न भाषाओं में लोक कथाएं, पौराणिक कथाएं और नैतिक कहानियां प्रसारित की गईं जो पीढ़ियों को जोड़ने का काम करती रहीं।

भाषाओं का संरक्षण

भारत की भाषाई विविधता असाधारण है और इस विविधता के संरक्षण में रेडियो की भूमिका बेहद महत्वपूर्ण रही है। आकाशवाणी ने विभिन्न भाषाओं और बोलियों में कार्यक्रम प्रसारित करके भाषाओं के संरक्षण में योगदान दिया है। संविधान द्वारा मान्यता प्राप्त 22 भाषाओं के अलावा कई क्षेत्रीय बोलियों में भी कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। जनजातीय भाषाओं के संरक्षण में रेडियो का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है। संथाली, बोडो, गोंडी, कोकणी और अन्य जनजातीय भाषाओं में कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। ये कार्यक्रम न केवल इन भाषाओं को बोलने वाले समुदायों को सूचना और मनोरंजन प्रदान करते हैं, बल्कि इन भाषाओं की जीवंतता को भी बनाए रखते हैं।

जब कोई भाषा जन संचार माध्यमों में स्थान पाती है, तो उसे मान्यता और गौरव मिलता है, जो उसके संरक्षण के लिए आवश्यक है। सीमावर्ती क्षेत्रों की बोलियों को भी रेडियो ने संरक्षित किया है। कश्मीरी, डोगरी, मणिपुरी, मिजो और नागा भाषाओं में विशेष कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। इससे इन क्षेत्रों के लोगों को अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति गर्व का अनुभव होता है और वे मुख्यधारा से जुड़े रहते हैं। रेडियो ने मानक भाषा के विकास में भी योगदान दिया है। समाचार पाठकों और उद्घोषकों के स्पष्ट और शुद्ध उच्चारण ने भाषा के मानकीकरण में मदद की। विशेष रूप से हिंदी के मामले में, आकाशवाणी ने मानक हिंदी के विकास और प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। देवनागरी लिपि के उच्चारण नियमों को रेडियो ने व्यवहार में लाकर उन्हें लोकप्रिय बनाया।

भाषा शिक्षण कार्यक्रम भी रेडियो का एक महत्वपूर्ण योगदान हैं। विभिन्न भाषाओं को सीखने के लिए रेडियो पाठ्यक्रम प्रसारित किए गए हैं। उदाहरण के लिए, दक्षिण भारत में हिंदी सीखने और उत्तर भारत में दक्षिण भारतीय भाषाएं सीखने के कार्यक्रम। इससे राष्ट्रीय एकता और भाषाई समझ को बढ़ावा मिला। साहित्यिक कार्यक्रमों ने भी भाषाओं को समृद्ध किया है। कविता पाठ, कहानी वाचन और साहित्यिक चर्चाएं नियमित रूप से प्रसारित होती हैं। प्रसिद्ध लेखकों और कवियों की रचनाएं रेडियो पर सुनाई जाती हैं, जिससे साहित्य जन-जन तक पहुंचता है। कई लेखकों को रेडियो नाटक और कहानी लेखन के माध्यम से अवसर मिला, जिससे उनकी प्रतिभा निखरी।

सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण

भारत की सांस्कृतिक धरोहर अत्यंत समृद्ध और विविध है, और रेडियो ने इसके संरक्षण और प्रसार में अहम भूमिका निभाई है। रेडियो के अभिलेखागार में दुर्लभ रिकॉर्डिंग संरक्षित हैं जो अमूल्य सांस्कृतिक संपदा हैं। महान गायकों, वादकों और कलाकारों की प्रस्तुतियां जो अब इस दुनिया में नहीं हैं, उनकी आवाज़ें रेडियो के अभिलेखागार में सुरक्षित हैं। शास्त्रीय संगीत के क्षेत्र में रेडियो का योगदान अद्वितीय है। पंडित रविशंकर, उस्ताद बिस्मिल्लाह खान, भीमसेन जोशी, एम.एस. सुब्बुलक्ष्मी और अनगिनत अन्य महान कलाकारों की प्रस्तुतियां रेडियो पर प्रसारित हुईं। राष्ट्रीय संगीत प्रतियोगिताओं और संगीत सम्मेलनों का प्रसारण नियमित रूप से होता रहा है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

इससे शास्त्रीय संगीत की परंपरा को जीवित रखने और नई पीढ़ी तक पहुंचाने में मदद मिली। त्योहारों और उत्सवों के विशेष कार्यक्रम रेडियो की सांस्कृतिक प्रस्तुति का महत्वपूर्ण हिस्सा रहे हैं। दीपावली, होली, ईद, क्रिसमस, बैसाखी, ओणम, दुर्गा पूजा और अन्य सभी प्रमुख त्योहारों पर विशेष कार्यक्रम प्रसारित होते हैं। इन कार्यक्रमों में न केवल मनोरंजन होता है बल्कि त्योहारों के सांस्कृतिक और धार्मिक महत्व को भी समझाया जाता है। यह विभिन्न समुदायों के बीच सांस्कृतिक समझ और सम्मान को बढ़ावा देता है। लोक मेलों और सांस्कृतिक उत्सवों का प्रत्यक्ष प्रसारण भी रेडियो की एक विशेषता रही है। कुंभ मेला, पुष्कर मेला, सोनपुर मेला और अन्य प्रमुख मेलों से सीधा प्रसारण होता है। इससे जो लोग इन आयोजनों में शारीरिक रूप से उपस्थित नहीं हो सकते, वे भी इनका आनंद ले सकते हैं और सांस्कृतिक गतिविधियों से जुड़े रह सकते हैं।

3.4 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

3.4.1 बहुविकल्पीय प्रश्न

1. रेडियो का आविष्कार किसने किया?

- a) थॉमस एडीसन
- b) गुग्लिएल्मो मार्कोनी
- c) ग्राहम बेल
- d) निकोला टेस्ला

2. भारत में पहला रेडियो प्रसारण कब शुरू हुआ?

- a) 1920
- b) 1927
- c) 1936
- d) 1947

3. ऑल इंडिया रेडियो की स्थापना कब हुई?

- a) 1927
- b) 1936
- c) 1947
- d) 1950

4. 'आकाशवाणी' नाम किसने दिया?

- a) महात्मा गांधी
- b) जवाहरलाल नेहरू
- c) एम.वी. गोपालस्वामी
- d) सरदार पटेल

5. रेडियो समाचार की सबसे बड़ी विशेषता है:

- a) दृश्य प्रस्तुति
- b) तात्कालिकता और श्रव्यता
- c) लिखित रूप
- d) लंबाई



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

6. रेडियो नाटक का सबसे महत्वपूर्ण तत्व है:

- a) दृश्य
- b) ध्वनि और संवाद
- c) रंगमंच
- d) वेशभूषा

7. 'कृषि दर्शन' किस माध्यम का कार्यक्रम है?

- a) टेलीविजन
- b) आकाशवाणी (रेडियो)
- c) इंटरनेट
- d) समाचार पत्र

8. रेडियो का मुख्य माध्यम है:

- a) दृश्य
- b) श्रव्य (ध्वनि)
- c) लिखित
- d) स्पर्श

9. आकाशवाणी ने किस क्षेत्र में विशेष योगदान दिया है?

- a) केवल मनोरंजन
- b) केवल समाचार
- c) शिक्षा, सूचना, मनोरंजन और सांस्कृतिक संरक्षण
- d) केवल विज्ञापन

10. रेडियो फीचर की विशेषता है:

- a) केवल तथ्य
- b) विस्तृत और रोचक प्रस्तुति
- c) केवल समाचार
- d) केवल संगीत

3.4.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में आकाशवाणी के उद्भव और विकास को संक्षेप में लिखिए।
2. रेडियो समाचार लेखन की विशेषताएँ बताइए।

3. रेडियो नाटक के प्रमुख तत्व कौन-कौन से हैं?
4. आकाशवाणी का सामाजिक योगदान बताइए।
5. रेडियो वार्ता और रेडियो फीचर में अंतर स्पष्ट कीजिए।

3.4.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. आकाशवाणी के उद्भव और ऐतिहासिक विकास का विस्तार से वर्णन कीजिए।
2. रेडियो के विभिन्न कार्यक्रमों (समाचार, नाटक, वार्ता, फीचर) की शैली और विशेषताओं की व्याख्या कीजिए।
3. रेडियो नाटक क्या है? इसके तत्वों और प्रस्तुति शैली का विस्तृत वर्णन कीजिए।
4. आकाशवाणी के सामाजिक और सांस्कृतिक योगदान का मूल्यांकन कीजिए।
5. भारतीय समाज में आकाशवाणी की भूमिका और महत्व पर विस्तृत लेख लिखिए।



मॉड्यूल 4

दूरदर्शन

संरचना

इकाई: 4.1 दूरदर्शन का उद्भव और विकास

इकाई: 4.2 समाचार और मनोरंजन कार्यक्रमों की प्रस्तुति

इकाई: 4.3 दूरदर्शन का लोकतंत्र और शिक्षा में योगदान

4.0 उद्देश्य

- टेलीविजन के आविष्कार को जानना
- भारत में दूरदर्शन के विकास को समझना
- दूरदर्शन के विस्तार का अध्ययन करना
- टेलीविजन समाचार की विशेषताओं को समझना
- मनोरंजन कार्यक्रमों के प्रकारों को जानना
- प्रस्तुति शैली का अध्ययन करना
- लोकतांत्रिक प्रक्रिया में दूरदर्शन की भूमिका समझना
- शिक्षा में योगदान को जानना
- सामाजिक प्रभाव का अध्ययन करना

इकाई - 4.1: दूरदर्शन का उद्भव और विकास

4.1.1 टेलीविजन का आविष्कार

टेलीविजन का आविष्कार मानव समाज के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ साबित हुआ। इस तकनीकी उपकरण ने न केवल मनोरंजन के क्षेत्र में क्रांति लाई, बल्कि शिक्षा, सूचना और सामाजिक जागरूकता के प्रसार में भी अभूतपूर्व योगदान दिया। टेलीविजन का विचार सबसे पहले 1920 के दशक में विकसित हुआ। स्कॉटिश आविष्कारक जॉन लोगी बेयर्ड (John Logie Baird) को टेलीविजन का वास्तविक जनक माना जाता है। उन्होंने 1925 में पहला कार्यशील टेलीविजन प्रणाली विकसित की, जिसमें चित्र और ध्वनि का संयोजन संभव हुआ। बेयर्ड की प्रणाली ने इस तकनीक के व्यावहारिक पक्ष को स्पष्ट किया और उसे आगे विकसित करने के लिए वैज्ञानिक समुदाय को प्रेरित किया। विश्व स्तर पर, टेलीविजन तकनीक में निरंतर सुधार हुआ।

1930 और 1940 के दशकों में अमेरिका और यूरोप में टेलीविजन प्रसारण की शुरुआत हुई। पहले केवल ब्लैक एंड व्हाइट प्रणाली थी, लेकिन 1950 के दशक के अंत तक रंगीन प्रसारण की तकनीक विकसित हो गई। टेलीविजन ने सूचना और मनोरंजन दोनों ही क्षेत्रों में सामाजिक बदलाव लाने की क्षमता दिखाई। समाचार चैनलों, शैक्षणिक कार्यक्रमों और मनोरंजन शो के माध्यम से यह तकनीक लोगों के जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गई।

भारत में दूरदर्शन का उद्भव

भारत में टेलीविजन प्रसारण की शुरुआत 1959 में हुई, जब प्रायोगिक प्रसारण के रूप में दूरदर्शन के पहले संकेत भेजे गए। यह प्रारंभिक चरण केवल शैक्षणिक और सरकारी प्रयोजनों तक सीमित था। तब देश में केवल कुछ स्थानों पर ही टेलीविजन की पहुँच थी। 1965 में, दूरदर्शन ने नियमित सेवा की शुरुआत की, जिससे यह तकनीक आम जनता के लिए उपलब्ध हो गई। इसके माध्यम से शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और सामाजिक जागरूकता के क्षेत्र में महत्वपूर्ण संदेश दिए जाने लगे। 1975-76 में, भारत में एस.आई.टी.ई कार्यक्रम का आयोजन हुआ। यह कार्यक्रम दूरदर्शन की भूमिका को और सशक्त बनाने वाला था। इसके तहत ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में सैटेलाइट के माध्यम से शैक्षणिक कार्यक्रम प्रसारित किए गए। इस प्रयोग ने दिखाया कि टेलीविजन केवल शहरों तक सीमित नहीं रह सकता और यह ग्रामीण क्षेत्रों में भी शिक्षा और जागरूकता फैलाने में प्रभावी है।

दूरदर्शन का विकास और विस्तार

भारत में दूरदर्शन का विकास और विस्तार धीरे-धीरे हुआ। 1982 में रंगीन प्रसारण की शुरुआत ने टेलीविजन को और आकर्षक बनाया। रंगीन प्रसारण ने न केवल मनोरंजन का अनुभव बेहतर किया, बल्कि राष्ट्रीय उत्सव, खेल प्रतियोगिताएँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम भी व्यापक दर्शकों तक पहुँचने लगे। राष्ट्रीय प्रसारण के दौरान, दूरदर्शन ने विभिन्न राज्यों और क्षेत्रों के लिए अलग-अलग कार्यक्रमों का निर्माण किया। इससे स्थानीय भाषा और संस्कृति का संरक्षण हुआ और लोगों में राष्ट्रीय एकता की भावना भी विकसित हुई। दूरदर्शन ने शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि और सामाजिक जागरूकता जैसे क्षेत्रों में विभिन्न कार्यक्रम प्रस्तुत किए, जिससे समाज में सकारात्मक बदलाव आए।

1990 के दशक में, केबल और सेटेलाइट चैनलों का युग शुरू हुआ। इसने दूरदर्शन को नई प्रतिस्पर्धा दी और दर्शकों के लिए विकल्पों की संख्या बढ़ाई। वैश्विक चैनलों के प्रवेश से भारतीय टेलीविजन ने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाई। इसके साथ ही, स्थानीय और राष्ट्रीय कार्यक्रमों की गुणवत्ता में सुधार हुआ और विविध प्रकार के मनोरंजन, समाचार और शैक्षणिक कार्यक्रम प्रस्तुत किए जाने लगे।

टेलीविजन का सामाजिक प्रभाव

टेलीविजन ने समाज पर गहरा प्रभाव डाला। यह न केवल सूचना का स्रोत है, बल्कि लोगों के विचारों, संस्कारों और सामाजिक मान्यताओं को भी प्रभावित करता है। टेलीविजन के माध्यम से लोग राजनीति, शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण के मुद्दों से अवगत होते हैं। इसके अलावा, टेलीविजन ने सामाजिक आंदोलनों और जागरूकता अभियानों को भी गति दी।



चित्र 4.1: टेलीविजन

शैक्षणिक और ग्रामीण प्रसारण

शैक्षणिक और ग्रामीण प्रसारण ने टेलीविजन की उपयोगिता को और बढ़ाया। दूरदर्शन और बाद के शैक्षणिक चैनलों ने विद्यार्थियों और ग्रामीण जनता के लिए विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किए। यह तकनीक शिक्षा के समान अवसर प्रदान करने का महत्वपूर्ण साधन बनी। सैटेलाइट और डिजिटल टेलीविजन ने इसे और सुलभ बना दिया।

रंगीन और तकनीकी नवाचार

रंगीन प्रसारण और तकनीकी नवाचार ने टेलीविजन अनुभव को और समृद्ध किया। रंगीन प्रसारण, डिजिटल तकनीक, और उच्च गुणवत्ता वाले ध्वनि और चित्र ने दर्शकों को एक जीवंत अनुभव प्रदान किया। इसके अलावा, टेलीविजन तकनीक में लगातार सुधार ने विभिन्न प्रकार के कार्यक्रमों को संभव बनाया।

केबल और सैटेलाइट चैनलों का उदय

1990 के दशक में केबल और सैटेलाइट चैनलों का उदय हुआ। इससे दर्शकों के पास विभिन्न विकल्प उपलब्ध हुए। विशेषीकृत चैनलों ने समाचार, मनोरंजन, खेल और बच्चों के कार्यक्रमों की पेशकश की। यह प्रतियोगिता दर्शकों की पसंद और गुणवत्ता को प्रभावित करने लगी।



चित्र 4.2: केबल और सैटेलाइट चैनलों



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

वैश्विक टेलीविजन पर भारत की स्थिति

भारत ने वैश्विक टेलीविजन में अपनी पहचान बनाई। भारतीय चैनलों ने अंतरराष्ट्रीय मंच पर भारतीय संस्कृति और कला का परिचय दिया। इसके अलावा, विदेशी चैनलों ने भारतीय दर्शकों को वैश्विक परिप्रेक्ष्य से अवगत कराया।

टेलीविजन और आर्थिक प्रभाव

टेलीविजन ने आर्थिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। विज्ञापन और विपणन के माध्यम से यह उद्योग आर्थिक विकास का साधन बना। इसके अलावा, टेलीविजन ने रोजगार के अवसर पैदा किए और मीडिया उद्योग के विस्तार में योगदान दिया।

इकाई 4.2: समाचार और मनोरंजन कार्यक्रमों की प्रस्तुति

4.2.1 टेलीविजन समाचार

टेलीविजन समाचार किसी भी समाज में जानकारी का प्रमुख स्रोत होते हैं। समाचार लेखन और प्रस्तुति में सटीकता, निष्पक्षता और समयबद्धता अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। समाचार को संकलित करने के लिए पत्रकार पहले घटनास्थल का दौरा करते हैं, प्राथमिक और माध्यमिक स्रोतों से जानकारी एकत्र करते हैं, और तथ्यात्मक सामग्री तैयार करते हैं। इसके बाद रिपोर्ट को सुगम और स्पष्ट भाषा में प्रस्तुत किया जाता है, ताकि दर्शक आसानी से समझ सकें। एंकरिंग एक ऐसी कला है, जिसमें समाचार प्रस्तुत करने वाले व्यक्ति को न केवल तथ्यों का ज्ञान होना चाहिए, बल्कि उसे भावनात्मक संतुलन, आवाज की स्पष्टता, और दर्शकों से संवाद स्थापित करने की क्षमता भी होनी चाहिए। एक सफल एंकर की आवाज में आत्मविश्वास होना चाहिए और उसकी प्रस्तुति में भावनात्मक संतुलन दर्शकों को समाचार पर विश्वास करने के लिए प्रेरित करता है। रिपोर्टिंग और कैमरा वर्क समाचार के दृश्य प्रभाव को बढ़ाते हैं। रिपोर्टर घटनास्थल से लाइव रिपोर्ट करते समय कैमरा वर्क का ध्यान रखते हैं, ताकि कहानी न केवल सुनी जाए, बल्कि देखी भी जा सके। कैमरा एंगल, शॉट साइज, और मोशन का सही उपयोग दृश्य कहानी को प्रभावशाली बनाता है। इससे समाचार अधिक रोचक और आकर्षक बनता है, जिससे दर्शकों की संलग्नता बढ़ती है।

मनोरंजन कार्यक्रम

मनोरंजन कार्यक्रम टेलीविजन उद्योग का वह हिस्सा हैं जो दर्शकों को अवकाश के समय में मनोरंजन प्रदान करते हैं। धारावाहिक इस प्रकार के कार्यक्रमों में सबसे लोकप्रिय होते हैं। ये कहानी आधारित होते हैं और विभिन्न सामाजिक, सांस्कृतिक, और पारिवारिक मुद्दों को चित्रित करते हैं। धारावाहिकों की सफलता इस पर निर्भर करती है कि कहानी में दर्शकों को रोचक मोड़, चरित्र विकास, और भावनात्मक जुड़ाव कैसा है। रियलिटी शो दर्शकों को वास्तविक जीवन की घटनाओं और प्रतियोगिताओं का अनुभव कराते हैं। ये शो प्रतिभागियों की प्राकृतिक प्रतिक्रियाओं और संघर्षों पर आधारित होते हैं। रियलिटी शो का निर्माण दर्शकों को मनोरंजन के साथ-साथ सिखाने, प्रेरित करने या जागरूक करने का माध्यम भी बन सकता है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

टॉक शो और गेम शो मनोरंजन की अन्य विधाएं हैं। टॉक शो में सामाजिक, राजनीतिक, या सांस्कृतिक विषयों पर विशेषज्ञों और सामान्य जनता के बीच संवाद स्थापित किया जाता है। गेम शो में प्रतिभागियों को विभिन्न खेल और प्रश्नोत्तरी के माध्यम से चुनौती दी जाती है। ये शो दर्शकों को सक्रिय रूप से जोड़ते हैं और उनकी उत्सुकता बनाए रखते हैं।

कार्यक्रम निर्माण

कार्यक्रम निर्माण में स्क्रिप्ट राइटिंग सबसे महत्वपूर्ण चरण है। स्क्रिप्ट लेखन में कहानी का प्रारूप, संवाद, पात्र, और दृश्य क्रमबद्ध होते हैं। एक अच्छी स्क्रिप्ट दर्शकों को कार्यक्रम में बांधे रखती है और भावनात्मक प्रभाव डालती है। स्क्रिप्ट लेखन में लेखक को दर्शकों की रुचियों और संस्कृति का भी ध्यान रखना होता है। शूटिंग और एडिटिंग कार्यक्रम निर्माण की अन्य महत्वपूर्ण क्रियाएं हैं। शूटिंग में कैमरा एंगल, लाइटिंग, और स्थान का चयन कहानी को जीवंत बनाता है। एडिटिंग में दृश्यों का संयोजन, विशेष प्रभाव, संगीत और ध्वनि संपादन कहानी को सुसंगठित और आकर्षक बनाते हैं। कार्यक्रम निर्माण की सफलता इस बात पर निर्भर करती है कि सभी तकनीकी और रचनात्मक तत्व सही प्रकार से समन्वित हों। एक सटीक शूटिंग और कुशल एडिटिंग कार्यक्रम की गुणवत्ता और दर्शकों की संतुष्टि को सुनिश्चित करती है।

समाचार और मनोरंजन का संतुलन

टेलीविजन उद्योग में समाचार और मनोरंजन के बीच संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। समाचार दर्शकों को जानकारी प्रदान करता है और समाज में जागरूकता बढ़ाता है, जबकि मनोरंजन कार्यक्रम दर्शकों को विश्राम और भावनात्मक आनंद प्रदान करते हैं। दोनों का संयोजन दर्शकों को संतुलित अनुभव देता है और चैनल की लोकप्रियता बढ़ाता है। समाचार और मनोरंजन के बीच संतुलन बनाए रखने के लिए प्रोड्यूसर को यह सुनिश्चित करना होता है कि समाचार की गंभीरता और सटीकता में कोई समझौता न हो। मनोरंजन कार्यक्रम दर्शकों को व्यस्त रखते हैं, लेकिन उन्हें सामाजिक और नैतिक मूल्यों की जानकारी देने के अवसर भी प्रदान कर सकते हैं।

तकनीकी विकास और प्रभाव

टेलीविजन समाचार और मनोरंजन कार्यक्रमों में तकनीकी विकास का गहरा प्रभाव है। डिजिटल कैमरा, एडिटिंग सॉफ्टवेयर, और उच्च गुणवत्ता वाले ऑडियो उपकरण ने प्रस्तुतिकरण को और प्रभावशाली बनाया है। लाइव स्ट्रीमिंग और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने दर्शकों की पहुंच और सहभागिता बढ़ाई है। तकनीकी उपकरणों का प्रभाव न केवल दृश्य और श्रव्य गुणवत्ता में होता है, बल्कि समाचार की सटीकता और मनोरंजन की आकर्षक प्रस्तुति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इससे टेलीविजन उद्योग में प्रतिस्पर्धा बढ़ती है और दर्शकों की अपेक्षाएं अधिक होती हैं।

पेशेवर कौशल और प्रशिक्षण

टेलीविजन पत्रकारिता और कार्यक्रम निर्माण में पेशेवर कौशल अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। पत्रकारों, एंकरों, और प्रोड्यूसरों को समाचार लेखन, एंकरिंग, कैमरा संचालन, स्क्रिप्ट राइटिंग, और एडिटिंग में प्रशिक्षण प्राप्त होना चाहिए। प्रशिक्षण से व्यक्तियों को नवीनतम तकनीकी उपकरणों और मीडिया प्रवृत्तियों की जानकारी मिलती है। इसके अलावा, नैतिकता, निष्पक्षता, और दर्शकों के प्रति जिम्मेदारी जैसे गुण भी पेशेवर कौशल का हिस्सा हैं। कुशल पेशेवर टेलीविजन उद्योग की गुणवत्ता और विश्वसनीयता बनाए रखते हैं।

दर्शक सहभागिता और प्रतिक्रिया

दर्शक टेलीविजन उद्योग का प्रमुख हिस्सा हैं। उनकी पसंद, आलोचना और प्रतिक्रिया कार्यक्रम की दिशा और गुणवत्ता को प्रभावित करती है। समाचार कार्यक्रमों में दर्शकों की प्रतिक्रिया उनकी संतुष्टि और विश्वास को दर्शाती है। मनोरंजन कार्यक्रमों में दर्शक जुड़ाव कार्यक्रम की लोकप्रियता को तय करता है। सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने दर्शकों को सक्रिय रूप से प्रतिक्रिया देने और सुझाव साझा करने का अवसर दिया है। यह प्रोड्यूसरों और पत्रकारों को दर्शकों की रुचियों और अपेक्षाओं के अनुसार सामग्री तैयार करने में मदद करता है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

टेलीविजन समाचार और मनोरंजन कार्यक्रम समाज में जानकारी, जागरूकता और मनोरंजन का मुख्य स्रोत हैं। समाचार लेखन, एंकरिंग, रिपोर्टिंग और कैमरा वर्क की सटीकता और निष्पक्षता दर्शकों का विश्वास जीतती है। मनोरंजन कार्यक्रम जैसे धारावाहिक, रियलिटी शो, टॉक शो और गेम शो दर्शकों को भावनात्मक और मानसिक संतुलन प्रदान करते हैं। कार्यक्रम निर्माण में स्क्रिप्ट राइटिंग, शूटिंग और एडिटिंग के तकनीकी और रचनात्मक पहलू सफलता का आधार हैं। तकनीकी विकास, पेशेवर कौशल, और दर्शक सहभागिता ने टेलीविजन उद्योग को अधिक प्रभावशाली और प्रतिस्पर्धात्मक बनाया है। समग्र रूप से, टेलीविजन समाचार और मनोरंजन कार्यक्रम समाज में सूचना, शिक्षा, और मनोरंजन का संतुलित माध्यम हैं।

इकाई 4.3: दूरदर्शन का लोकतंत्र और शिक्षा में योगदान

4.3.1 लोकतंत्र में भूमिका

दूरदर्शन, जिसे अक्सर भारत के सार्वजनिक प्रसारक के रूप में जाना जाता है, ने देश के सामाजिक, शैक्षिक और राजनीतिक परिदृश्य को आकार देने में एक अद्वितीय और अतुलनीय भूमिका निभाई है। अपनी स्थापना से लेकर आज तक, यह केवल मनोरंजन का साधन नहीं रहा है, बल्कि यह राष्ट्रीय एकता, सूचना के प्रसार और सामूहिक चेतना के निर्माण का एक शक्तिशाली उपकरण रहा है। एक विकासशील राष्ट्र के रूप में भारत की यात्रा में, दूरदर्शन ने लोकतंत्र को मजबूत करने, शिक्षा को दूर-दराज के क्षेत्रों तक ले जाने और महत्वपूर्ण सामाजिक परिवर्तनों को प्रेरित करने के लिए एक बहुआयामी दृष्टिकोण अपनाया है। इसका जनादेश हमेशा तीन स्तंभों पर आधारित रहा है: सूचना, शिक्षा और मनोरंजन, और इन उद्देश्यों की पूर्ति के लिए इसने अपने कार्यक्रमों की सामग्री और पहुंच को लगातार ढाला है। दूरदर्शन की कहानी वास्तव में भारतीय गणराज्य की कहानी है, जो इसकी आकांक्षाओं, चुनौतियों और सफलताओं को दर्शाती है। यह विस्तृत विश्लेषण दूरदर्शन के इस महत्वपूर्ण योगदान को तीन व्यापक क्षेत्रों और उनके उप-शीर्षकों के तहत रेखांकित करता है, जैसा कि आपकी रूपरेखा में निर्धारित है, प्रत्येक आयाम को गहराई से छूता है। यह राष्ट्रीय प्रसारणकर्ता न केवल देश की विविधता को एक मंच पर लाता है, बल्कि समाज के सबसे हाशिए पर पड़े वर्गों के लिए भी ज्ञान और अधिकारिता का द्वार खोलता है। इसकी ऐतिहासिक यात्रा आज के निजी मीडिया परिदृश्य के लिए एक आवश्यक पृष्ठभूमि प्रदान करती है, जहाँ सार्वजनिक प्रसारण का महत्व पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हो जाता है।

दूरदर्शन ने भारत के लोकतंत्र को जड़ से मजबूत करने में आधारभूत कार्य किया है। एक सार्वजनिक सेवा प्रसारक होने के नाते, इसकी भूमिका केवल खबरें दिखाने तक सीमित नहीं रही है, बल्कि इसने नागरिकों को सूचित करने, उन्हें संवैधानिक प्रक्रियाओं से परिचित कराने और राष्ट्रीय विमर्श में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करने का कार्य किया है। यह विशेष रूप से ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण था जहाँ अन्य संचार माध्यमों की पहुंच सीमित थी। दूरदर्शन की राष्ट्रीय पहुंच ने यह सुनिश्चित किया कि देश के विभिन्न भौगोलिक और भाषाई क्षेत्रों के नागरिक समान और विश्वसनीय जानकारी प्राप्त करें, जिससे एक साझा राष्ट्रीय पहचान



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

और समझ विकसित हो सके। विश्वसनीयता दूरदर्शन की सबसे बड़ी पूंजी रही है। निजी मीडिया के आगमन से पहले, सरकार की नीतियों, संसद की कार्यवाहियों, और सर्वोच्च न्यायिक फैसलों की जानकारी प्राप्त करने का यह प्राथमिक और आधिकारिक स्रोत था। इसने सूचना के विषमता को कम किया, और यह सुनिश्चित किया कि हर नागरिक को, चाहे वह कहीं भी रहता हो, देश के शासन और राजनीति के बारे में एक आधारभूत समझ हो। दूरदर्शन ने राष्ट्रपति, प्रधानमंत्री और अन्य गणमान्य व्यक्तियों के राष्ट्र के नाम संबोधनों को प्रसारित करके सीधे जनता से संवाद स्थापित करने का मार्ग प्रशस्त किया, जो लोकतंत्र में पारदर्शिता और जवाबदेही के लिए अत्यंत आवश्यक है। इस प्रकार, दूरदर्शन ने देश के सबसे बड़े लोकतंत्र की धड़कन को लाखों घरों तक पहुंचाया है, जिससे प्रत्येक व्यक्ति खुद को राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया का एक अभिन्न अंग महसूस करता है।

राजनीतिक जागरूकता

दूरदर्शन ने भारत के नागरिकों में राजनीतिक जागरूकता पैदा करने में एक शैक्षिक भूमिका निभाई है। इसके समाचार बुलेटिन और विशेष कार्यक्रम, जैसे कि संसद की कार्यवाही का सीधा प्रसारण और बजट विश्लेषण, ने जनता को जटिल राजनीतिक और आर्थिक मामलों को सरल भाषा में समझने में सहायता की। कार्यक्रम 'जनवाणी' या बाद में 'पब्लिक स्पीक' जैसे प्लेटफॉर्म ने नागरिकों को सीधे मंत्रियों और नीति निर्माताओं से सवाल पूछने का अवसर दिया, जिससे सरकार और जनता के बीच की दूरी कम हुई और शासन में जवाबदेही का तत्व मजबूत हुआ। दूरदर्शन का उद्देश्य केवल घटनाओं की रिपोर्टिंग करना नहीं था, बल्कि नागरिक शिक्षा प्रदान करना भी था। इसने संविधान, मौलिक अधिकारों, कर्तव्यों और लोकतंत्र की संस्थाओं के महत्व पर वृत्तचित्रों और चर्चाओं की एक श्रृंखला प्रसारित की। यह सुनिश्चित किया गया कि साक्षर और निरक्षर दोनों नागरिक देश के राजनीतिक ढांचे को समझें। इसके अलावा, इसने विभिन्न राजनीतिक दलों और विचारधाराओं को समान और तटस्थ मंच प्रदान किया, जिससे जनता को सूचित निर्णय लेने के लिए आवश्यक संतुलित दृष्टिकोण प्राप्त हो सके। राजनीतिक विमर्श को शोर और पूर्वाग्रह से मुक्त रखने के प्रयास में, दूरदर्शन ने गंभीर बहस और तथ्यों पर आधारित विश्लेषण को प्राथमिकता दी, जिससे मतदाताओं की तर्क क्षमता का विकास हुआ। इसने राजनीतिक सहभागिता को बढ़ावा

दिया, लोगों को स्थानीय निकाय चुनावों से लेकर राष्ट्रीय चुनावों तक मतदान करने के महत्व को समझाया, और यह राजनीतिक जागरूकता का प्रसार ग्रामीण भारत के लिए विशेष रूप से परिवर्तनकारी था।

चुनाव और दूरदर्शन

चुनाव, लोकतंत्र का सबसे महत्वपूर्ण पर्व होते हैं, और दूरदर्शन ने इस प्रक्रिया की पवित्रता और पहुंच सुनिश्चित करने में एक स्तंभ के रूप में कार्य किया है। भारत के चुनाव आयोग के दिशानिर्देशों का सख्ती से पालन करते हुए, दूरदर्शन ने सभी मान्यता प्राप्त राष्ट्रीय और क्षेत्रीय राजनीतिक दलों को चुनाव प्रचार के लिए समान समय आवंटित किया। यह सुविधा देश के सबसे छोटे और सबसे कम संसाधन वाले राजनीतिक दलों को भी राष्ट्रीय मंच पर अपनी बात रखने का अवसर प्रदान करती है, जो निजी मीडिया के व्यावसायिक दबावों से मुक्त एक समावेशी चुनावी प्रक्रिया को सुनिश्चित करता है। चुनाव कवरेज के दौरान, दूरदर्शन न केवल उम्मीदवारों के भाषणों का प्रसारण करता है, बल्कि मतदाता शिक्षा पर विशेष ध्यान देता है। इसमें मतदाता सूची में नाम दर्ज कराने की प्रक्रिया, इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीनों (EVMs) का उपयोग, नैतिक मतदान का महत्व और चुनाव आचार संहिता के उल्लंघन के खतरों के बारे में जानकारी शामिल होती है। चुनाव परिणाम के दिनों में, दूरदर्शन का निर्वाचन प्रसारण पूरे देश के लिए एक केंद्रीकृत और विश्वसनीय स्रोत बन जाता है। इसके विशेषज्ञ पैनल चर्चाएँ, सटीक रुझान और अंतिम परिणाम की घोषणाएँ जनता को सबसे पहले और सबसे भरोसेमंद तरीके से प्रदान की जाती हैं। यह कवरेज अत्यंत तटस्थ और तथ्यात्मक होता है, जिससे किसी भी तरह की अफवाह या गलत सूचना के प्रसार को रोका जा सके। दूरदर्शन ने चुनावी लोकतंत्र को घर-घर तक पहुँचाया है, खासकर दूरस्थ क्षेत्रों में, जहाँ यह एकमात्र दृश्य-श्रव्य माध्यम है जो मतदान के महत्व और प्रक्रिया को समझाता है, जिससे मतदान प्रतिशत बढ़ाने में भी मदद मिलती है।

सरकारी योजनाओं का प्रसार

दूरदर्शन ने भारतीय कल्याणकारी राज्य की योजनाओं को अंतिम व्यक्ति तक पहुंचाने में एक पुल की भूमिका निभाई है। सरकार की नीतियां और योजनाएं, जब तक कि वे लक्षित लाभार्थियों तक प्रभावी ढंग से न पहुंचें, तब तक सफल नहीं हो सकती हैं।



दूरदर्शन ने इस संचार अंतर को भरा है। दूरदर्शन पर प्रसारित होने वाला सबसे पुराना और सबसे सफल कार्यक्रम, 'कृषि दर्शन', किसानों को नवीनतम कृषि तकनीकों, मौसम के पूर्वानुमान, बाजार की कीमतों और सरकारी सब्सिडी योजनाओं के बारे में जानकारी प्रदान करता रहा है। यह कार्यक्रम लाखों किसानों के लिए एक विश्वविद्यालय के समान रहा है, जिसने कृषि उत्पादकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इसी तरह, स्वास्थ्य, शिक्षा, ग्रामीण विकास और महिला एवं बाल विकास से संबंधित विभिन्न सरकारी योजनाओं का प्रचार दूरदर्शन के माध्यम से एक सुनियोजित तरीके से किया जाता है। पोलियो उन्मूलन अभियान, राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (NRHM) और साक्षरता कार्यक्रमों जैसे राष्ट्रीय महत्व के अभियानों को दूरदर्शन पर आकर्षक और प्रेरक विज्ञापनों, वृत्तचित्रों और शॉर्ट फिल्मों के माध्यम से व्यापक रूप से प्रचारित किया गया। उदाहरण के लिए, 'दो बूंद जिंदगी की' जैसे नारों को दूरदर्शन ने राष्ट्रीय चेतना में इतनी गहराई से बैठा दिया कि भारत पोलियो मुक्त हो सका। सरकारी योजनाओं के लाभों, पात्रता मानदंडों और आवेदन प्रक्रियाओं को सरल भाषा में समझाकर, दूरदर्शन ने यह सुनिश्चित किया कि जानकारी की कमी के कारण कोई भी पात्र नागरिक लाभ से वंचित न रहे। यह भूमिका, सूचनात्मक होने के साथ-साथ सशक्तिकरण की भी है, क्योंकि यह नागरिकों को उनके अधिकारों और उपलब्ध अवसरों के बारे में जागरूक करती है।

4.3.2 शिक्षा में योगदान

भारत में दूरदर्शन का शिक्षा के क्षेत्र में योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण, ऐतिहासिक और बहुआयामी रहा है। यह केवल एक प्रसारण माध्यम के रूप में नहीं, बल्कि एक सामाजिक परिवर्तन के साधन के रूप में उभरा जिसने शिक्षा के प्रसार और समान अवसरों की दिशा में एक नई राह खोली। जब देश में टेलीविजन की शुरुआत हुई, तब इसका मुख्य उद्देश्य मनोरंजन नहीं, बल्कि सूचना और शिक्षा का प्रसार था। भारत जैसे विविधतापूर्ण और विशाल देश में, जहाँ भौगोलिक, सामाजिक और आर्थिक असमानताएँ शिक्षा की पहुँच में बाधा उत्पन्न करती थीं, दूरदर्शन ने उन सीमाओं को तोड़ने का साहसिक कार्य किया।

प्रारंभिक दौर और उद्देश्य

दूरदर्शन की स्थापना के समय से ही शिक्षा को इसके प्रमुख उद्देश्यों में शामिल किया गया। 1960 और 1970 के दशक में जब टेलीविजन धीरे-धीरे घर-घर में पहुँचने लगा, तब नीति-निर्माताओं ने यह समझा कि टेलीविजन केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि साक्षरता, जागरूकता और सामाजिक प्रगति का माध्यम भी बन सकता है। इस सोच के आधार पर दूरदर्शन ने शिक्षा को प्राथमिकता दी। प्रारंभ में 'स्कूल टेलीविजन प्रोजेक्ट' और 'साइट प्रोजेक्ट' जैसे प्रयोग किए गए, जिनका उद्देश्य ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता फैलाना था। इन कार्यक्रमों ने यह साबित किया कि यदि टेलीविजन को सुविचारित रूप से उपयोग किया जाए, तो यह दूरस्थ और पिछड़े क्षेत्रों तक ज्ञान का प्रसार कर सकता है। इस प्रयोग की सफलता के बाद शिक्षा को दूरदर्शन की नीति में स्थायी स्थान मिला।

शिक्षा का प्रसार और सामाजिक समावेशन

1980 और 1990 के दशक दूरदर्शन के शैक्षणिक प्रसारण के स्वर्णिम वर्ष माने जा सकते हैं। इस अवधि में जब भारत में टेलीविजन की पहुँच तेजी से बढ़ी, तब दूरदर्शन ने शैक्षिक कार्यक्रमों को मुख्यधारा के प्रसारण का अंग बना दिया। उस समय अधिकांश ग्रामीण और अर्धशहरी परिवारों के पास मनोरंजन का एकमात्र स्रोत दूरदर्शन था। इसका लाभ उठाते हुए सरकार ने शिक्षा से जुड़ी सामग्री को ऐसे समय स्लॉट में प्रसारित करना शुरू किया, जब विद्यार्थी और गृहिणियाँ सबसे अधिक उपलब्ध होते थे। सुबह और दोपहर के समय विशेष स्लॉट निर्धारित किए गए, जिनमें विज्ञान, गणित, भाषा, समाजशास्त्र और पर्यावरण जैसे विषयों पर उच्च गुणवत्ता वाले व्याख्यान, प्रयोग और नाट्य प्रस्तुतियाँ प्रसारित की जाती थीं। इन कार्यक्रमों को देश के श्रेष्ठ शिक्षकों, विषय-विशेषज्ञों और शिक्षाशास्त्रियों द्वारा तैयार किया जाता था। इस पहल ने न केवल शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार किया, बल्कि शिक्षा की पहुँच को भी कई गुना बढ़ाया। दूरदर्शन की यह नीति विशेष रूप से उन छात्रों और वयस्कों के लिए वरदान साबित हुई जो आर्थिक या भौगोलिक कारणों से औपचारिक शिक्षा से वंचित थे। ग्रामीण महिलाओं, कामकाजी युवाओं और सामाजिक रूप से वंचित समुदायों को घर बैठे शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिला।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

संस्थागत सहयोग और राष्ट्रीय नेटवर्क

दूरदर्शन की सफलता का एक प्रमुख कारण इसका संस्थागत सहयोग रहा। इसने शिक्षा से जुड़े कई राष्ट्रीय निकायों के साथ साझेदारी की, जैसे कि –

- राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (NCERT)
- विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (UGC)
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU)
- केंद्रीय शिक्षा प्रौद्योगिकी संस्थान (CIET)

इन संस्थानों ने दूरदर्शन को वैज्ञानिक और शैक्षणिक रूप से समृद्ध सामग्री उपलब्ध कराई। उदाहरणस्वरूप, NCERT ने विद्यालय स्तर की सामग्री विकसित की, जबकि UGC ने विश्वविद्यालय स्तर की सामग्री तैयार की। IGNOU ने दूरस्थ शिक्षा के पाठ्यक्रमों के लिए ऑडियो-विजुअल व्याख्यान विकसित किए। इस सहयोग ने दूरदर्शन को एक राष्ट्रीय आभासी विश्वविद्यालय का स्वरूप प्रदान किया।

शैक्षिक चैनलों की स्थापना: ज्ञान दर्शन और ज्ञान वाणी

शिक्षा के क्षेत्र में दूरदर्शन की प्रतिबद्धता को एक नई दिशा और पहचान ज्ञान दर्शन (Gyan Darshan) और ज्ञान वाणी (Gyan Vani) जैसे समर्पित चैनलों की स्थापना से मिली। ये दोनों पहलें भारत के सबसे बड़े मुक्त विश्वविद्यालय, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (IGNOU) के सहयोग से शुरू की गईं और इन्होंने भारत में शैक्षणिक प्रसारण की अवधारणा को नए स्तर तक पहुँचाया।

ज्ञान दर्शन

ज्ञान दर्शन एक 24 घंटे चलने वाला शैक्षिक टेलीविजन चैनल है, जो विभिन्न विषयों पर वीडियो-आधारित शिक्षण सामग्री प्रसारित करता है। इसका उद्देश्य है मुक्त और दूरस्थ शिक्षा को प्रोत्साहित करना तथा औपचारिक शिक्षा प्रणाली का पूरक बनना। इस चैनल की सामग्री कई स्तरों की शिक्षा को कवर करती है –

1. IGNOU के पाठ्यक्रमों के व्याख्यान:

स्नातक और स्नातकोत्तर छात्रों के लिए विषय-विशेषज्ञों द्वारा तैयार वीडियो व्याख्यान, जो कक्षा जैसे अनुभव प्रदान करते हैं।

2. UGC के उच्च शिक्षा कार्यक्रम:

कॉलेज और विश्वविद्यालय स्तर के विद्यार्थियों के लिए नवीनतम शोध, साक्षात्कार, और शैक्षणिक चर्चाएँ।

3. NCERT/CIET के विद्यालय-आधारित कार्यक्रम:

प्राथमिक से लेकर माध्यमिक स्तर तक के छात्रों के लिए पाठ्यक्रम आधारित सामग्री, जो अध्यापन में सहायक होती है।

4. शिक्षक प्रशिक्षण एवं व्यावसायिक विकास:

शिक्षकों के लिए नवाचार-आधारित शिक्षण पद्धतियों और तकनीकी उपकरणों पर प्रशिक्षण मॉड्यूल।

ज्ञान दर्शन ने शिक्षा के प्रति एक एकीकृत दृष्टिकोण प्रस्तुत किया, जिसमें औपचारिक और गैर-औपचारिक शिक्षा के बीच की दूरी को कम किया गया। इसने न केवल विद्यार्थियों बल्कि शिक्षकों, अभिभावकों और नीति निर्माताओं को भी लाभ पहुँचाया।

ज्ञान वाणी

ज्ञान वाणी एक शैक्षणिक एफएम रेडियो नेटवर्क है जो श्रव्य माध्यम से शिक्षा का प्रसार करता है। यह पहल विशेष रूप से उन क्षेत्रों के लिए महत्वपूर्ण थी जहाँ टेलीविजन की पहुँच सीमित थी या बिजली की उपलब्धता नहीं थी। रेडियो के माध्यम से शिक्षा ने एक सुलभ और पोर्टेबल स्वरूप ग्रहण किया, जो साक्षरता और जीवन कौशल बढ़ाने में सहायक बना। ज्ञान वाणी की सामग्री में विविधता देखने को मिलती है चर्चाएँ, साक्षात्कार, कहानियाँ, विषय-विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान, और सामाजिक विषयों पर कार्यक्रम। इसकी पहुँच छात्रों के अलावा गृहिणियों, किसानों, स्वैच्छिक संगठनों और



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

ग्राम पंचायतों तक थी। इस माध्यम ने ग्रामीण भारत में जीवन पर्यन्त शिक्षा की अवधारणा को सशक्त बनाया।

दूरस्थ शिक्षा का सशक्तीकरण

भारत जैसे विशाल देश में जहाँ हर व्यक्ति के लिए औपचारिक शिक्षण संस्थान तक पहुँचना संभव नहीं, वहाँ दूरस्थ शिक्षा एक व्यवहारिक विकल्प बनकर उभरी। दूरदर्शन ने इस प्रणाली को लोकप्रिय और प्रभावी बनाने में केंद्रीय भूमिका निभाई। IGNOU के सहयोग से दूरदर्शन ने अपने विस्तृत नेटवर्क का उपयोग करते हुए छात्रों को उच्च गुणवत्ता वाली ऑडियो-विजुअल शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराई। पहले जहाँ पत्राचार पाठ्यक्रम केवल लिखित सामग्री तक सीमित थे, वहीं दूरदर्शन ने उन्हें दृश्य और श्रव्य माध्यमों से समृद्ध किया। अब छात्र अपने घरों में बैठकर देश के श्रेष्ठ शिक्षकों और प्रोफेसरों के व्याख्यान देख सकते थे।

यह पहल महिलाओं, ग्रामीण युवाओं और कामकाजी पेशेवरों के लिए विशेष रूप से लाभदायक रही। सामाजिक कारणों से जो महिलाएँ घर से बाहर जाकर पढ़ाई नहीं कर सकती थीं, उन्होंने दूरदर्शन के माध्यम से उच्च शिक्षा प्राप्त की। इसी तरह, नौकरीपेशा लोग शाम को प्रसारित कार्यक्रमों के जरिये अपने कौशल और ज्ञान को उन्नत कर सकते थे। दूरदर्शन ने यह सुनिश्चित किया कि शिक्षा केवल अभिजात वर्ग तक सीमित न रहे, बल्कि हर वर्ग, हर आयु और हर क्षेत्र के व्यक्ति तक पहुँचे। इसने शिक्षा को सामाजिक अधिकार और आत्मनिर्भरता के साधन के रूप में प्रस्तुत किया।

नवाचार और तकनीकी एकीकरण

समय के साथ दूरदर्शन ने शिक्षा के क्षेत्र में कई नवाचार किए। तकनीकी उन्नति के साथ, इसमें डिजिटल रिकॉर्डिंग, उपग्रह प्रसारण और मल्टी-चैनल सिस्टम शामिल किए गए। इससे शैक्षणिक सामग्री की गुणवत्ता बढ़ी और दर्शकों को विविध विकल्प मिले। उदाहरणस्वरूप, इंटरैक्टिव टेलीविजन कार्यक्रमों के माध्यम से छात्रों को विशेषज्ञों से सीधे प्रश्न पूछने का अवसर मिला। इससे शिक्षण प्रक्रिया एकतरफा न रहकर द्विपक्षीय संवादात्मक बन गई।

सामाजिक प्रभाव और परिणाम

दूरदर्शन की शैक्षणिक पहलों ने भारत में शिक्षा के क्षेत्र में गहरे सामाजिक परिवर्तन किए। इनका प्रभाव निम्नलिखित रूप में देखा जा सकता है —

- शिक्षा का लोकतंत्रीकरण: शिक्षा तक समान पहुंच की अवधारणा को सशक्त किया।
- साक्षरता में वृद्धि: ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में साक्षरता दर बढ़ाने में योगदान।
- महिला शिक्षा को प्रोत्साहन: घर-आधारित शिक्षण से महिलाओं को सशक्त बनाया।
- कौशल विकास: व्यावसायिक और तकनीकी प्रशिक्षण कार्यक्रमों ने रोजगार के अवसर बढ़ाए।
- सांस्कृतिक एकीकरण: विविध भाषाओं और संस्कृतियों के बीच ज्ञान के आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया।

शिक्षा और सार्वजनिक प्रसारण का भविष्य

दूरदर्शन की शिक्षा में भूमिका ने यह सिद्ध किया कि सार्वजनिक प्रसारण केवल मनोरंजन का साधन नहीं, बल्कि राष्ट्र निर्माण का उपकरण है। ज्ञान दर्शन और ज्ञान वाणी जैसे माध्यमों ने शिक्षा की दिशा को आधुनिक प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ा और शिक्षा को घर-घर तक पहुँचाया। वर्तमान डिजिटल युग में, जहाँ इंटरनेट आधारित शिक्षण (e-Learning) तेजी से बढ़ रहा है, दूरदर्शन का अनुभव इस बात की याद दिलाता है कि टेलीविजन और रेडियो जैसे पारंपरिक माध्यम अभी भी प्रभावी और विश्वसनीय हैं, विशेष रूप से उन क्षेत्रों में जहाँ डिजिटल पहुंच सीमित है। भविष्य में यदि दूरदर्शन और डिजिटल शिक्षा प्लेटफॉर्म का एकीकरण किया जाए, तो यह भारत को एक डिजिटल शिक्षित राष्ट्र बनाने की दिशा में बड़ा कदम साबित हो सकता है।

संक्षेप में कहा जाए तो दूरदर्शन ने भारत में शिक्षा के परिदृश्य को बदल दिया। इसने शिक्षा को भौगोलिक सीमाओं से मुक्त किया, दूरस्थ और वंचित वर्गों तक पहुँचाया, और औपचारिक शिक्षा प्रणाली को एक सशक्त पूरक प्रदान किया।



ज्ञान दर्शन और ज्ञान वाणी जैसी पहलों ने दिखाया कि तकनीक और जनसंचार माध्यमों के सही उपयोग से शिक्षा को समावेशी, सुलभ और गुणात्मक बनाया जा सकता है। दूरदर्शन की शैक्षणिक यात्रा यह प्रमाणित करती है कि जब मीडिया सामाजिक उत्तरदायित्व को गंभीरता से लेता है, तो वह न केवल सूचना का प्रसार करता है, बल्कि राष्ट्र के भविष्य का निर्माण भी करता है।

4.3.3 सामाजिक प्रभाव

दूरदर्शन का सामाजिक प्रभाव भारत में आधुनिक मीडिया के इतिहास में सबसे गहन और स्थायी विरासतों में से एक माना जाता है। यह केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहा, बल्कि समाज के मानदंडों, मूल्यों और व्यवहारों को आकार देने वाला एक सशक्त कारक भी बन गया है। एक सार्वजनिक प्रसारक के रूप में, दूरदर्शन ने हमेशा ऐसी सामग्री तैयार करने को प्राथमिकता दी जो सामाजिक रूप से प्रासंगिक, जिम्मेदार और राष्ट्रहित में हो। इसके माध्यम से प्रसारित कार्यक्रमों ने समाज में जागरूकता पैदा करने, बुराईयों और अंधविश्वासों को चुनौती देने और सामाजिक सुधारों को बढ़ावा देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

दूरदर्शन ने मनोरंजन और शिक्षा के बीच का संतुलन अत्यंत कुशलता से स्थापित किया। इसके लोकप्रिय धारावाहिकों, वृत्तचित्रों, जन-जागरूकता अभियानों और विशेष प्रसारणों के माध्यम से लोगों को न केवल मनोरंजन का अनुभव प्राप्त हुआ, बल्कि उन्होंने समाज के विभिन्न पहलुओं पर गहन चिंतन और विचार भी किया। दूरदर्शन ने राष्ट्रीय एकता की भावना को प्रोत्साहित किया, क्षेत्रीय और भाषाई विविधता का सम्मान करना सिखाया, और सामाजिक सद्भाव के महत्व को समझाया। यह पहला ऐसा माध्यम था जिसने देश के दूर-दराज के क्षेत्रों में रहने वाले लोगों को एक-दूसरे की संस्कृति, रीति-रिवाज और जीवन शैली से परिचित कराया, जिससे भावनात्मक और सामाजिक एकीकरण को बल मिला।

सामाजिक जागरूकता का सृजन

दूरदर्शन की भूमिका सामाजिक जागरूकता के निर्माण में क्रांतिकारी रही है। इसके धारावाहिक और कार्यक्रम अक्सर उन मुद्दों को उठाते थे, जिन्हें सामान्य तौर पर

सार्वजनिक विमर्श के लिए विवादास्पद माना जाता था। 'नुक्कड़' और 'हम लोग' जैसे धारावाहिकों ने रोजमर्रा के सामाजिक-आर्थिक मुद्दों जैसे दहेज प्रथा, लैंगिक असमानता, बेरोजगारी, भ्रष्टाचार और अन्य सामाजिक बुराइयों को बारीकी से उजागर किया। 'हम लोग' के हर एपिसोड के अंत में प्रसिद्ध अभिनेता अशोक कुमार द्वारा दिया गया नैतिक संदेश लाखों दर्शकों के लिए मार्गदर्शक सिद्धांत का काम करता था। इससे दर्शक मनोरंजन के साथ-साथ सामाजिक मुद्दों पर गंभीरता से विचार करने के लिए प्रेरित होते थे। राष्ट्रीय एकता को मजबूत करने के लिए दूरदर्शन ने 'एक चिड़िया अनेक चिड़िया' जैसे कार्यक्रमों का प्रसारण किया, जिनमें स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस के अवसर पर विशेष प्रसारण शामिल थे। इन कार्यक्रमों ने न केवल राष्ट्रीय गौरव की भावना को बढ़ावा दिया, बल्कि यह भी सिखाया कि विविधता में एकता की भावना ही किसी राष्ट्र की मजबूती का मूल आधार है।

इतिहास और संस्कृति के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए दूरदर्शन ने 'भारत एक खोज' जैसे वृत्तचित्र का प्रसारण किया। यह कार्यक्रम जवाहरलाल नेहरू के ग्रंथ 'डिस्कवरी ऑफ इंडिया' पर आधारित था और दर्शकों को भारतीय इतिहास, दर्शन और संस्कृति की गहरी समझ प्रदान करता था। इससे नागरिकों में अपनी विरासत के प्रति सम्मान और जागरूकता बढ़ी।

पर्यावरण संरक्षण और नागरिक कर्तव्यों के प्रति जागरूकता पैदा करने के लिए दूरदर्शन ने नियमित रूप से सार्वजनिक सेवा प्रसारण (PSAs) जारी किए। इनमें वृक्षारोपण, जल संरक्षण और यातायात नियमों के पालन जैसे मुद्दों पर जोर दिया गया। इस प्रकार, दूरदर्शन ने समाज में जिम्मेदारी की भावना और सामूहिक कर्तव्यनिष्ठा को बढ़ावा दिया। इन सभी प्रयासों ने एक संवाद की शुरुआत की और समाज में सकारात्मक बदलाव के लिए आवश्यक वातावरण तैयार किया। लाखों भारतीयों को सामाजिक मुद्दों पर खुलकर बात करने और बदलाव के लिए पहल करने के लिए प्रेरित किया गया। यह स्पष्ट है कि दूरदर्शन केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रहा, बल्कि यह सामाजिक सुधार और जागरूकता का एक मंच बन गया।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

महिला और बाल विकास

महिला और बाल विकास के क्षेत्र में दूरदर्शन ने एक शक्तिशाली वकील के रूप में कार्य किया है। इसके कार्यक्रमों ने महिलाओं को केवल पारंपरिक भूमिकाओं में प्रस्तुत करने के बजाय, उन्हें शिक्षा, पेशेवर सफलता और सशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में दिखाया। कई धारावाहिकों ने महिला शिक्षा, कार्यस्थल पर उनके अधिकार और परिवार नियोजन जैसे संवेदनशील मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया। लैंगिक समानता को बढ़ावा देने के लिए दूरदर्शन ने ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में महिलाओं के लिए उपलब्ध सरकारी योजनाओं की जानकारी दी। इनमें स्वयं सहायता समूह (SHGs) और व्यावसायिक प्रशिक्षण कार्यक्रम शामिल थे। इसके अतिरिक्त, कन्या भ्रूण हत्या और बाल विवाह जैसी प्रथाओं पर आधारित वृत्तचित्र और लघु फिल्में प्रसारित की गईं।

बाल स्वास्थ्य और पोषण के क्षेत्र में दूरदर्शन ने विशेष कार्यक्रम प्रस्तुत किए। स्वास्थ्य मंत्रालय के सहयोग से प्रसारित इन कार्यक्रमों में स्तनपान, टीकाकरण और बच्चों के लिए संतुलित पोषण के महत्व को व्यापक रूप से बताया गया। इसके साथ ही, दूरदर्शन ने बाल मजदूरी और बच्चों के अधिकारों के उल्लंघन के खिलाफ भी मुखर रूप से आवाज उठाई। महिला सशक्तिकरण की कहानियों को प्रमुखता से प्रस्तुत करना दूरदर्शन की विशेषता रही है। सफल महिला रोल मॉडल और समाज में उनके योगदान को दर्शाते हुए, दूरदर्शन ने युवा लड़कियों को प्रेरित किया कि वे अपने जीवन में आगे बढ़ें और सामाजिक बाधाओं को पार करें। इस प्रकार, दूरदर्शन ने लैंगिक मानदंडों और समाज में महिलाओं की भूमिका को बदलने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

स्वास्थ्य जागरूकता

दूरदर्शन ने सार्वजनिक स्वास्थ्य जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए एक राष्ट्रीय मंच के रूप में कार्य किया। यह विशेष रूप से संक्रामक रोगों, परिवार कल्याण और मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य के क्षेत्र में प्रभावशाली रहा है। दूरदर्शन ने स्वास्थ्य संदेशों को सरल और दृश्य रूप में प्रस्तुत किया, जिससे यह लाखों अशिक्षित और दूरदराज के लोगों तक पहुंच सका। शुरुआती दिनों में, 'हम दो, हमारे दो' जैसे नारे दूरदर्शन के माध्यम से पूरे देश में फैलाए गए। इसने छोटे परिवार के आदर्श को बढ़ावा दिया और परिवार

नियोजन के तरीकों तथा मातृत्व स्वास्थ्य के महत्व को समझाया। इसके अतिरिक्त, एचआईवी/एड्स जागरूकता अभियान और पोलियो उन्मूलन अभियान दूरदर्शन के सबसे सफल कार्यक्रमों में शामिल रहे। इन अभियानों में वृत्तचित्रों और सेलिब्रिटी समर्थन वाले विज्ञापनों का उपयोग किया गया, जिससे संदेश तेजी से और प्रभावशाली तरीके से जनता तक पहुंचा।

सामान्य स्वास्थ्य और स्वच्छता के महत्व को बढ़ावा देने के लिए दूरदर्शन ने नियमित रूप से प्रसारण किया। इसमें व्यक्तिगत स्वच्छता, साफ-सफाई, शुद्ध पेयजल और मौसमी बीमारियों से बचाव के तरीकों की जानकारी शामिल थी। 'स्वच्छ भारत अभियान' जैसे हालिया सरकारी अभियान के प्रसार में भी दूरदर्शन ने महत्वपूर्ण योगदान दिया। गर्भवती महिलाओं और बच्चों के स्वास्थ्य पर ध्यान केंद्रित करने के लिए दूरदर्शन ने टीकाकरण अनुसूची, गर्भावस्था के दौरान उचित देखभाल और संस्थागत प्रसव के लाभों पर जानकारी प्रसारित की। इस प्रकार, दूरदर्शन ने देश के शिशु मृत्यु दर और मातृ मृत्यु दर को कम करने के राष्ट्रीय प्रयासों का समर्थन किया। दूरदर्शन ने स्वास्थ्य शिक्षा को केवल सूचना देने तक सीमित नहीं रखा, बल्कि समाज में व्यवहारिक बदलाव लाने और स्वास्थ्य संबंधी जागरूकता फैलाने में भी अग्रणी भूमिका निभाई। यह एक विश्वसनीय स्वास्थ्य सलाहकार के रूप में कार्य करता रहा, जिसने लाखों लोगों के जीवन में सकारात्मक बदलाव लाने का कार्य किया।

शिक्षा और ज्ञान का प्रसार

दूरदर्शन ने शिक्षा और ज्ञान के प्रसार में भी अद्वितीय योगदान दिया। ज्ञान दर्शन और ज्ञान वाणी जैसे समर्पित शैक्षिक चैनलों के माध्यम से दूरदर्शन ने शिक्षकों, छात्रों और सामान्य जनता तक व्यापक शिक्षा संदेश पहुंचाए। यह विशेष रूप से ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण रहा, जहां शिक्षा तक पहुंच सीमित थी। शैक्षिक कार्यक्रमों ने न केवल अकादमिक ज्ञान प्रदान किया, बल्कि जीवन कौशल, नागरिक जिम्मेदारी और सामाजिक जिम्मेदारियों के प्रति जागरूकता भी बढ़ाई। इन कार्यक्रमों के माध्यम से छात्र न केवल सैद्धांतिक ज्ञान प्राप्त कर सकते थे, बल्कि व्यवहारिक ज्ञान भी सीखते थे, जो उनके जीवन में व्यावहारिक रूप से लागू होता था।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

लोकतंत्र और नागरिक भागीदारी

एक सार्वजनिक प्रसारक के रूप में दूरदर्शन ने लोकतंत्र के स्तंभों को मजबूत करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। चुनावी प्रक्रियाओं को पारदर्शी बनाने, सरकारी नीतियों और योजनाओं को आम जनता तक पहुंचाने, और समाज में नागरिक जागरूकता बढ़ाने में दूरदर्शन ने अग्रणी भूमिका निभाई। इसके माध्यम से लोग सरकार की योजनाओं, मतदान के महत्व और नागरिक अधिकारों के प्रति जागरूक हुए। इस प्रकार, दूरदर्शन ने लोकतंत्र की बुनियादी अवधारणाओं को समाज में जमीनी स्तर पर फैलाने का कार्य किया। यह केवल सूचना का माध्यम नहीं रहा, बल्कि यह समाज में नागरिक भागीदारी और लोकतांत्रिक जिम्मेदारियों को समझाने वाला एक सशक्त माध्यम बन गया।

सारांश रूप में कहा जा सकता है कि दूरदर्शन ने भारत के सामाजिक जीवन में एक अविस्मरणीय छाप छोड़ी है। सार्वजनिक प्रसारण के एक आदर्श मॉडल के रूप में, इसने न केवल मनोरंजन, बल्कि शिक्षा, स्वास्थ्य, महिला सशक्तिकरण, सामाजिक जागरूकता और नागरिक जिम्मेदारी में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया। दूरदर्शन ने समाज के विभिन्न वर्गों तक अपनी पहुँच और विश्वसनीयता के कारण आज भी एक महत्वपूर्ण और आवश्यक आवाज बनाए रखा है। यह न केवल समाज में जागरूकता बढ़ाने, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक मूल्यों को संरक्षित करने और विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इसके कार्यक्रमों ने लोगों को सामाजिक सुधारों, नैतिक जिम्मेदारियों और नागरिक कर्तव्यों के प्रति जागरूक किया और समाज को प्रगतिशील दिशा में अग्रसर किया। सामाजिक परिवर्तन के इस अनूठे मॉडल ने मनोरंजन के माध्यम से शिक्षा, जागरूकता और सामाजिक सुधार को एक साथ प्रस्तुत किया। दूरदर्शन का यह योगदान केवल वर्तमान के लिए नहीं, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक प्रेरणास्त्रोत के रूप में हमेशा याद रखा जाएगा।

4.4 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

4.4.1 बहुविकल्पीय प्रश्न

1. टेलीविजन का आविष्कार किसने किया?

- a) मार्कोनी
- b) जॉन लोगी बेयर्ड
- c) थॉमस एडीसन
- d) ग्राहम बेल

2. भारत में दूरदर्शन का प्रायोगिक प्रसारण कब शुरू हुआ?

- a) 1947
- b) 1950
- c) 1959
- d) 1965

3. SITE का पूरा रूप है:

- a) Satellite Instructional Television Experiment
- b) Simple Information Technology Education
- c) System of Indian Television Education
- d) Special Indian Technology Experiment

4. भारत में रंगीन टेलीविजन प्रसारण कब शुरू हुआ?

- a) 1975
- b) 1980
- c) 1982
- d) 1990

5. टेलीविजन समाचार की विशेषता है:

- a) केवल ध्वनि
- b) दृश्य और श्रव्य दोनों
- c) केवल लिखित
- d) केवल दृश्य



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

6. एंकरिंग का संबंध किससे है:

- a) समाचार वाचन और कार्यक्रम संचालन
- b) केवल लेखन
- c) केवल शूटिंग
- d) केवल एडिटिंग

7. रियलिटी शो किस प्रकार का कार्यक्रम है?

- a) समाचार
- b) मनोरंजन
- c) शैक्षिक
- d) धार्मिक

8. 'ज्ञान दर्शन' किस प्रकार का चैनल है?

- a) समाचार चैनल
- b) शैक्षिक चैनल
- c) मनोरंजन चैनल
- d) खेल चैनल

9. दूरदर्शन लोकतंत्र में किस रूप में योगदान देता है?

- a) केवल मनोरंजन
- b) राजनीतिक जागरूकता और सूचना प्रसार
- c) केवल विज्ञापन
- d) कोई योगदान नहीं

10. टेलीविजन में पोस्ट-प्रोडक्शन का अर्थ है:

- a) शूटिंग से पहले की तैयारी
- b) शूटिंग के दौरान का कार्य
- c) शूटिंग के बाद एडिटिंग और अन्य कार्य
- d) केवल प्रसारण

4.4.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में दूरदर्शन के उद्भव और विकास को संक्षेप में लिखिए।
2. टेलीविजन समाचार की प्रस्तुति शैली की विशेषताएँ बताइए।

3. SITE कार्यक्रम क्या था? इसका महत्व बताइए।
4. दूरदर्शन के प्रमुख मनोरंजन कार्यक्रमों के नाम लिखिए।
5. शिक्षा में दूरदर्शन की भूमिका बताइए।

4.4.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. भारत में दूरदर्शन के उद्भव, विकास और विस्तार का विस्तृत वर्णन कीजिए।
2. टेलीविजन समाचार और मनोरंजन कार्यक्रमों की प्रस्तुति शैली का वर्णन कीजिए।
3. दूरदर्शन का लोकतांत्रिक प्रक्रिया में क्या योगदान है? विस्तार से समझाइए।
4. शिक्षा और सामाजिक विकास में दूरदर्शन की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए।
5. रेडियो और टेलीविजन की तुलना करते हुए दूरदर्शन की विशेषताओं और सीमाओं का वर्णन कीजिए।



मॉड्यूल 5

विविध इलेक्ट्रॉनिक माध्यम

संरचना

- इकाई: 5.1** एफ.एम. रेडियो: उद्भव, स्वरूप और महत्व
- इकाई: 5.2** सामुदायिक रेडियो: विशेषताएँ और भूमिका
- इकाई: 5.3** फिल्म और डॉक्यूमेंट्री: पत्रकारिता में स्थान और उपयोग
- इकाई: 5.4** नवीन तकनीक: डिजिटल मीडिया, इंटरनेट और मोबाइल पत्रकारिता का समावेश

5.0 उद्देश्य

- एफ.एम. रेडियो को समझना
- एफ.एम. के विकास को जानना
- एफ.एम. की विशेषताओं का अध्ययन करना
- सामुदायिक रेडियो की अवधारणा समझना
- विशेषताओं को जानना
- सामाजिक विकास में भूमिका का अध्ययन करना
- फिल्म और डॉक्यूमेंट्री को समझना
- पत्रकारिता में उनकी भूमिका जानना
- निर्माण प्रक्रिया का अध्ययन करना
- डिजिटल मीडिया को समझना
- इंटरनेट पत्रकारिता को जानना
- मोबाइल पत्रकारिता का अध्ययन करना

इकाई 5.1: एफ.एम. रेडियो: उद्भव, स्वरूप और महत्व

5.1.1 एफ.एम. रेडियो का परिचय

एफ.एम. रेडियो, संचार तकनीक की दुनिया में एक क्रांतिकारी आविष्कार था जिसने रेडियो प्रसारण के अनुभव को पूरी तरह से बदल दिया। इसका उद्भव केवल तकनीकी प्रगति का परिणाम नहीं था, बल्कि यह जनसंचार माध्यमों के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मोड़ था, जिसने श्रोताओं को बेजोड़ ध्वनि गुणवत्ता और स्थानीय जुड़ाव

प्रदान किया। भारत सहित पूरे विश्व में, एफ.एम. ने रेडियो को केवल सूचना के एक माध्यम से मनोरंजन, स्थानीय संस्कृति के वाहक और युवा विमर्श के एक सक्रिय मंच में रूपांतरित कर दिया। पारंपरिक ए.एम. (Amplitude Modulation) प्रसारण की सीमाओं को पार करते हुए, एफ.एम. ने एक ऐसा प्रसारण मंच तैयार किया जो हस्तक्षेप-मुक्त (Interference-free) था और उच्च-निष्ठा (High-fidelity) वाली ध्वनि प्रदान करता था। यह आलेख एफ.एम. रेडियो के तकनीकी स्वरूप, इसके ऐतिहासिक विकास और समकालीन समाज पर इसके गहरे प्रभाव का विस्तृत अध्ययन प्रस्तुत करता है, जिसके तहत इसके महत्व, विशेषताओं और प्रसार को सात प्रमुख शीर्षकों में समझा गया है। एफ.एम. रेडियो ने न केवल मनोरंजन के साधनों का विस्तार किया है, बल्कि इसने स्थानीय भाषाओं, संगीत और सामुदायिक जुड़ाव को मजबूत करके सांस्कृतिक विविधता को भी बढ़ावा दिया है।



चित्र 5.1: एफ.एम. रेडियो



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

एफ.एम. रेडियो का परिचय मात्र एक तकनीकी शब्दावली का नहीं है, बल्कि यह सार्वजनिक प्रसारण के अनुभव में एक गुणात्मक छलांग का प्रतिनिधित्व करता है। रेडियो प्रसारण के शुरुआती और मध्य दौर में, ए.एम. रेडियो ही एकमात्र विकल्प था, लेकिन इसकी अंतर्निहित सीमाओं ने ध्वनि की गुणवत्ता और प्रसारण की स्थिरता को हमेशा एक चुनौती बनाए रखा। एफ.एम. ने इस चुनौती का समाधान करते हुए रेडियो को एक नए युग में प्रवेश कराया। एफ.एम. रेडियो की स्थापना का मूल उद्देश्य श्रोताओं को संगीत, समाचार और सूचना की बेहतर गुणवत्ता प्रदान करना था, जो उन्हें पारंपरिक माध्यमों में उपलब्ध नहीं थी। इसकी बेहतर तकनीकी दक्षता ने इसे एक प्रीमियम संचार माध्यम बना दिया, खासकर संगीत प्रेमियों और उन क्षेत्रों के लिए जहाँ स्थलाकृति और विद्युत उपकरण हस्तक्षेप ए.एम. सिग्नल को विकृत कर देते थे। भारत में, एफ.एम. का आगमन 1990 के दशक में हुआ और यह सूचना के एक माध्यम से बढ़कर एक जीवनशैली का हिस्सा बन गया, जिसने शहरों और कस्बों में निजी चैनलों के माध्यम से एक अभूतपूर्व लोकप्रिय संस्कृति का निर्माण किया। एफ.एम. ने स्थानीय रेडियो जॉकी (RJs) को जन्म दिया, जिन्होंने श्रोताओं के साथ व्यक्तिगत स्तर पर संवाद स्थापित किया, जिससे यह माध्यम अधिक आत्मीय और व्यक्तिगत बन गया। एफ.एम. रेडियो, अपने स्वरूप में, संकीर्ण प्रसारण बैंडविड्थ और सीमित भौगोलिक कवरेज के कारण स्थानीयकरण को बढ़ावा देता है, जो इसे सामुदायिक रेडियो के लिए भी एक आदर्श तकनीक बनाता है। यह परिचय इस बात पर जोर देता है कि एफ.एम. सिर्फ एक तकनीक नहीं है, बल्कि एक सामाजिक-सांस्कृतिक घटना है जिसने भारतीय युवाओं की बातचीत के तरीके और उनके संगीत उपभोग की आदतों को मौलिक रूप से बदल दिया है। इसकी सफलता का रहस्य इसकी ध्वनि की स्पष्टता, प्रोग्रामिंग की स्थानीय प्रासंगिकता और श्रोताओं के साथ भावनात्मक जुड़ाव स्थापित करने की क्षमता में निहित है।

एफएम का अर्थ

एफ.एम. का पूर्ण रूप **फ्रीक्वेंसी मॉड्यूलेशन** है, जिसका शाब्दिक अर्थ है **आवृत्ति मॉड्यूलेशन** या **आवृत्ति मॉडुलन**। मॉड्यूलेशन एक ऐसी प्रक्रिया है जिसके द्वारा सूचना (जैसे संगीत या भाषण) को रेडियो तरंगों पर संचारित करने के लिए तैयार किया जाता है। एफ.एम. तकनीक में, यह प्रक्रिया वाहक तरंग की आवृत्ति

को बदलकर की जाती है, जबकि उस तरंग का आयाम (Amplitude) स्थिर रखा जाता है। यह मौलिक रूप से ए.एम. से अलग है, जहाँ सूचना को आयाम में बदलाव करके कोडित किया जाता है।

एफ.एम. तकनीक को समझना इसके उच्च महत्व को स्पष्ट करता है:

1. सूचना का कोडन

एफ.एम. तकनीक में मुख्य विचार यह है कि ध्वनि या ऑडियो संकेत वाहक तरंग की आवृत्ति में परिवर्तित होता है। जब ऑडियो सिग्नल का आयाम बढ़ता है, तो वाहक तरंग की आवृत्ति बढ़ती है; जब आयाम घटता है, तो आवृत्ति घटती है। इसे फ्रीक्वेंसी मॉड्यूलेशन कहा जाता है। इस तरह, सूचना केवल वाहक की आवृत्ति में छिपाई जाती है, न कि उसकी आयाम में। इसके विपरीत, ए.एम. में जानकारी वाहक तरंग के आयाम में कोडित होती है। एफ.एम. तकनीक का यह तरीका विशेष रूप से शोर और हस्तक्षेप के प्रति प्रतिरोधी बनाता है, क्योंकि बाहरी शोर आमतौर पर तरंग के आयाम को प्रभावित करता है। इस तकनीक से संगीत, संवाद और अन्य ऑडियो सामग्री की सटीकता और गुणवत्ता उच्च बनी रहती है। इसके अलावा, एफ.एम. में पूरी ऑडियो रेंज को कोडित किया जा सकता है, जिससे बास और ट्रेबल दोनों के लिए पर्याप्त जगह होती है। इसलिए, सूचना का कोडन एफ.एम. की मूल ताकत और इसकी उच्च ध्वनि गुणवत्ता का आधार है।

2. शोर से मुक्ति

एफ.एम. तकनीक की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी शोर प्रतिरोधक क्षमता है। प्राकृतिक शोर, जैसे वायुमंडलीय हस्तक्षेप, बिजली के उपकरणों का उत्पन्न शोर या अन्य इलेक्ट्रॉनिक हस्तक्षेप, मुख्य रूप से तरंग के आयाम को प्रभावित करते हैं। चूंकि एफ.एम. में जानकारी आवृत्ति में होती है, रिसीवर केवल आवृत्ति में होने वाले परिवर्तन को पढ़ता है और आयाम में होने वाले उतार-चढ़ाव को अनदेखा कर देता है। यही कारण है कि एफ.एम. पर संगीत और बोली जाने वाली सामग्री स्पष्ट और क्रिस्प सुनाई देती है। यह विशेषता एफ.एम. को ए.एम. की तुलना में कई गुना श्रेष्ठ बनाती है, क्योंकि ए.एम. में शोर सीधे ऑडियो सिग्नल में प्रवेश कर जाता है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

शोर से मुक्ति की यह क्षमता एफ.एम. को स्टूडियो जैसी स्पष्टता प्रदान करती है, जिससे श्रोताओं को उच्च गुणवत्ता वाले संगीत और संवाद का अनुभव मिलता है। यही कारण है कि एफ.एम. तकनीक आधुनिक रेडियो प्रसारण में प्राथमिक पसंद बनी हुई है।

3. उच्च बैंडविड्थ की आवश्यकता

एफ.एम. प्रसारण में स्पष्ट और उच्च गुणवत्ता वाली ध्वनि के लिए ए.एम. की तुलना में अधिक बैंडविड्थ की आवश्यकता होती है। एफ.एम. आमतौर पर 88 से 108 मेगाहर्ट्ज के वीएचएफ (VHF) बैंड में संचालित होता है। इस व्यापक बैंडविड्थ के कारण यह पूरी ऑडियो रेंज (Low Bass से High Treble तक) का प्रसारण संभव बनाता है। स्टूडियो जैसी स्पष्टता और स्टीरियो प्रभाव के लिए एफ.एम. में पर्याप्त बैंडविड्थ की आवश्यकता होती है, जिससे संगीत और संवाद अधिक यथार्थवादी और जीवंत सुनाई देते हैं। उदाहरण के लिए, एफ.एम. पर आप संगीत में प्रत्येक इंस्ट्रूमेंट की आवाज और ध्वनि का अंतर सुन सकते हैं। इसके विपरीत, ए.एम. में सीमित बैंडविड्थ के कारण उच्च और निम्न ध्वनियों में विस्तार कम होता है। उच्च बैंडविड्थ के कारण एफ.एम. सिग्नल में संपूर्ण ऑडियो डायनामिक्स मौजूद रहते हैं। यही कारण है कि एफ.एम. आधुनिक रेडियो प्रसारण के लिए आदर्श तकनीक है, खासकर संगीत प्रेमियों और स्टीरियो ध्वनि अनुभव की चाह रखने वालों के लिए।

4. सीमित रेंज

एफ.एम. तरंगें मुख्यतः दृष्टि रेखा में यात्रा करती हैं। इसका अर्थ है कि एफ.एम. ट्रांसमीटर की प्रभावी दूरी आमतौर पर 50 से 100 किलोमीटर तक सीमित होती है। जबकि यह कुछ दृष्टिकोण से इसकी कमजोरी प्रतीत हो सकती है, यह विशेषता स्थानीय और सामुदायिक प्रसारण के लिए इसे अत्यंत उपयुक्त बनाती है। स्थानीय रेडियो स्टेशन अपने क्षेत्र में विशिष्ट कंटेंट, जैसे स्थानीय समाचार, सांस्कृतिक कार्यक्रम और क्षेत्रीय संगीत, प्रभावी रूप से प्रसारित कर सकते हैं। सीमित रेंज के कारण एफ.एम. ट्रांसमीटर को बड़े टॉवर की आवश्यकता नहीं होती, जिससे लागत कम होती है। इसके अलावा, यह तकनीक क्षेत्रीय पहचान और स्थानीय कंटेंट के निर्माण को प्रोत्साहित करती है। इस प्रकार, एफ.एम. का सीमित दायरा इसे समुदाय आधारित

प्रसारण और स्थानीय मीडिया के लिए आदर्श बनाता है, जबकि इसकी स्पष्टता और गुणवत्ता वैश्विक या दूरदराज के प्रसारण से समझौता किए बिना बनी रहती है।

एएम और एफएम में मौलिक अंतर

ए.एम. और एफ.एम. के बीच का अंतर केवल तकनीकी नहीं है, बल्कि यह रेडियो प्रसारण की प्रकृति, गुणवत्ता और श्रोताओं के अनुभव को मौलिक रूप से प्रभावित करता है। इन दोनों तकनीकों का तुलनात्मक अध्ययन एफ.एम. की श्रेष्ठता और इसके महत्व को स्पष्ट करता है।

विशेषता	ए.एम.	एफ.एम.
मॉड्यूलेशन विधि	सूचना संकेत के अनुसार वाहक तरंग के आयाम को बदला जाता है, जबकि आवृत्ति स्थिर रहती है।	सूचना संकेत के अनुसार वाहक तरंग की आवृत्ति को बदला जाता है, जबकि आयाम स्थिर रहता है।
ध्वनि गुणवत्ता	निम्न गुणवत्ता (Low Fidelity)। आयाम में बदलाव के कारण शोर (Noise) आसानी से प्रवेश करता है। उच्च आवृत्ति वाले (Treble) संगीत तत्वों की हानि होती है।	उच्च गुणवत्ता (High Fidelity)। शोर के प्रति अत्यधिक प्रतिरोधी, जिसके परिणामस्वरूप स्पष्ट, क्रिस्प और स्टूडियो-गुणवत्ता वाली ध्वनि मिलती है। स्टीरियो प्रसारण संभव।
शोर प्रतिरोध	कम। विद्युत उपकरण, वायुमंडलीय परिवर्तन, और अन्य रेडियो संकेत आसानी से हस्तक्षेप (Interference) करते हैं।	बहुत अधिक। शोर, जो आयाम में होता है, को फिल्टर कर दिया जाता है, जिससे स्पष्ट प्रसारण होता है।
प्रसारण रेंज	बहुत लंबी। ए.एम. तरंगें पृथ्वी के वक्र (Curvature) का अनुसरण करती हैं और आयनमंडल से परावर्तित हो सकती हैं, जिससे वे हजारों किलोमीटर तक पहुंच सकती हैं।	अपेक्षाकृत कम (50-100 कि.मी.)। तरंगें मुख्य रूप से दृष्टि रेखा (Line-of-sight) में यात्रा करती हैं और इमारतों तथा पहाड़ियों से अवरुद्ध हो जाती हैं।
बैंडविड्थ	संकीर्ण बैंडविड्थ (Narrow Bandwidth)। एक चैनल को लगभग 10 किलोहर्ट्ज़ (kHz) की आवश्यकता होती है।	व्यापक बैंडविड्थ (Broad Bandwidth)। एक चैनल को लगभग 200 किलोहर्ट्ज़ (kHz) की आवश्यकता होती है।
उपयोग	लंबी दूरी का प्रसारण, समाचार, टॉक शो, और ग्रामीण/दूरस्थ क्षेत्रों तक पहुँच।	संगीत, स्थानीय समाचार, इंटरैक्टिव शो, युवा-केंद्रित सामग्री, और उच्च-गुणवत्ता वाला मनोरंजन।

ए.एम. प्रसारण, अपनी लंबी दूरी की क्षमता के कारण, आज भी आपातकालीन प्रसारणों और दूरदराज के क्षेत्रों तक समाचार पहुँचाने के लिए महत्वपूर्ण बना हुआ है।



हालांकि, जब बात संगीत, मनोरंजन और ध्वनि की गुणवत्ता की आती है, तो एफ.एम. निर्विवाद रूप से श्रेष्ठ है। एफ.एम. की उच्च-निष्ठा ध्वनि और शोर-मुक्त प्रसारण ने इसे आधुनिक श्रोता की पहली पसंद बना दिया। ए.एम. की सीमा थी कि रात में प्रसारण की गुणवत्ता बदल जाती थी और यह **फेडिंग** (Fading) और **क्रैकलिंग** (Crackling) से ग्रस्त था, जबकि एफ.एम. पूरे दिन और रात एक समान, स्पष्ट गुणवत्ता बनाए रखता है। यह तकनीकी अंतर ही एफ.एम. की व्यावसायिक सफलता और भारतीय मीडिया परिदृश्य में इसकी लोकप्रियता का मुख्य कारण बना। ए.एम. तकनीकी रूप से पुराना है, लेकिन उसका वैश्विक पहुँच का महत्व बरकरार है; वहीं, एफ.एम. तकनीक में उन्नत है और स्थानीय संचार के लिए प्रासंगिक है।

4.1.2 एफ.एम. का वैश्विक उद्भव और ऐतिहासिक विकास

एफ.एम. रेडियो का उद्भव 20वीं शताब्दी की सबसे महत्वपूर्ण तकनीकी कहानियों में से एक है, जो एक ऐसे आविष्कारक के दृढ़ संकल्प को दर्शाती है जिसने प्रचलित ए.एम. प्रणाली की सीमाओं को पहचाना और उसे दूर करने का प्रयास किया।

विश्व में एफ.एम. का उद्भव

एफ.एम. तकनीक के जनक अमेरिकी इंजीनियर **एडविन एच. आर्मस्ट्रांग** थे। 1930 के दशक की शुरुआत में, आर्मस्ट्रांग ने आयाम मॉड्यूलेशन (AM) की मौलिक समस्या को हल करने का प्रयास किया: वायुमंडलीय और विद्युत चुम्बकीय हस्तक्षेप के कारण होने वाला उच्च शोर और ध्वनि की निम्न गुणवत्ता। 1933 में, आर्मस्ट्रांग ने औपचारिक रूप से एफ.एम. प्रणाली के लिए एक पेपर और पेटेंट प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने दर्शाया कि कैसे आवृत्ति को संशोधित करके शोर-मुक्त, उच्च-गुणवत्ता वाले ध्वनि प्रसारण को प्राप्त किया जा सकता है। यह एक क्रांतिकारी विचार था, लेकिन इसे व्यावसायिक रूप से अपनाने में लंबा समय लगा।

1940 के दशक में, एफ.एम. प्रसारण ने संयुक्त राज्य अमेरिका में धीरे-धीरे अपनी जगह बनाना शुरू कर दिया, लेकिन द्वितीय विश्व युद्ध के कारण इसका विस्तार बाधित हुआ। युद्ध के बाद, जब एफ.एम. प्रसारण बैंड को **88 मेगाहर्ट्ज से 108 मेगाहर्ट्ज** तक पुनर्स्थापित किया गया, तब उद्योग के भीतर काफी प्रतिरोध हुआ, खासकर ए.एम.

प्रसारण में बड़ी हिस्सेदारी रखने वाली कंपनियों से। हालांकि, एफ.एम. की बेहतर स्टीरियो ध्वनि क्षमता ने अंततः श्रोताओं को आकर्षित किया, खासकर संगीत प्रेमियों को। 1960 और 1970 के दशक तक, एफ.एम. ने अमेरिका में लोकप्रियता में ए.एम. को पछाड़ना शुरू कर दिया, खासकर जब इसे स्टीरियो में प्रसारित करने की अनुमति मिली। यूरोपीय देशों में भी इसी तरह का विकास हुआ, जहाँ एफ.एम. को उच्च-निष्ठा संगीत (Hi-Fi Music) और शैक्षिक प्रसारण के लिए मानक के रूप में अपनाया गया। 20वीं सदी के उत्तरार्ध में, एफ.एम. रेडियो वैश्विक स्तर पर प्रसारण की प्रमुख विधि बन गया, जिससे रेडियो को एक आधुनिक और प्रासंगिक माध्यम के रूप में पुनर्स्थापित किया गया।

भारत में एफ.एम. का संक्रमण और विकास

भारत में एफ.एम. का आगमन और इसका विस्तार एक बहु-चरण प्रक्रिया रही है जो देश के उदारीकरण और तकनीकी विकास के साथ जुड़ी हुई है।

प्रथम चरण (प्रारंभिक सरकारी प्रयास: 1970-1990)

भारत में एफ.एम. प्रसारण की शुरुआत आधिकारिक तौर पर ऑल इंडिया रेडियो (AIR) द्वारा की गई थी। पहला प्रायोगिक एफ.एम. स्टेशन 1977 में मद्रास (चेन्नई) में शुरू किया गया था। शुरुआती वर्षों में, एफ.एम. का उपयोग मुख्य रूप से महानगरीय क्षेत्रों में शिक्षा, संस्कृति और उच्च गुणवत्ता वाले संगीत कार्यक्रमों के सीमित प्रसारण के लिए किया गया था। यह चरण सरकारी नियंत्रण और सीमित पहुंच तक सीमित था।

द्वितीय चरण (वाणिज्यिक और मेट्रो विस्तार: 1990-2000)

1990 के दशक में आर्थिक उदारीकरण के बाद, एफ.एम. प्रसारण को वाणिज्यिक रूप से अधिक आकर्षक बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया। 1993 में, एआईआर ने अपने कुछ एफ.एम. स्लॉट निजी ऑपरेटरों को लीज पर देना शुरू किया, जिससे पहली बार **गैर-सरकारी प्रोग्रामिंग** भारतीय रेडियो पर आई। यह एक महत्वपूर्ण कदम था। इस अवधि में, 'एफएम रेनबो' और 'एफएम गोल्ड' जैसे एआईआर के एफ.एम. चैनलों ने लोकप्रियता हासिल करना शुरू कर दिया।



तृतीय चरण (निजी एफ.एम. क्रांति: 2000-2006)

यह चरण भारत में एफ.एम. रेडियो के इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण है। वर्ष 2000 में, भारत सरकार ने निजी ऑपरेटरों को एफ.एम. चैनलों के लाइसेंस की नीलामी के लिए पहली नीति की घोषणा की, जिसे 'एफ.एम. फेज-I' कहा गया। इस चरण में 12 शहरों में 40 से अधिक चैनल नीलाम किए गए। हालांकि, उच्च लाइसेंस शुल्क के कारण यह चरण मिश्रित सफलता वाला रहा। इसके बाद, 'एफ.एम. फेज-II' नीति (2006) लागू की गई, जिसने लाइसेंस शुल्क को राजस्व-साझाकरण मॉडल (Revenue-Sharing Model) में बदल दिया। इस नीति ने निजी एफ.एम. स्टेशनों जैसे रेडियो मिर्ची, बिग एफएम, और रेडियो सिटी के उदय को प्रेरित किया। इन निजी खिलाड़ियों ने प्रोग्रामिंग को युवा-केंद्रित, इंटरैक्टिव और स्थानीय भाषाओं पर आधारित बनाया, जिसने एफ.एम. को भारतीय युवाओं के बीच एक अभूतपूर्व लोकप्रियता दिलाई।

चतुर्थ चरण (विस्तार और डिजिटलीकरण: 2007-वर्तमान)

'एफ.एम. फेज-III' नीति (2015) ने एफ.एम. रेडियो को छोटे शहरों और कस्बों (Tier-2 और Tier-3 शहरों) तक विस्तारित किया, जिससे इसका भौगोलिक कवरेज काफी बढ़ गया। इसने समाचारों के प्रसारण पर लगे कुछ प्रतिबंधों को भी हटाया, जिससे एफ.एम. स्थानीय समाचारों को प्रसारित करने में अधिक सक्षम हुआ। इस विस्तार ने एफ.एम. को एक सच्चे स्थानीयकृत माध्यम (Localized Medium) में बदल दिया। आज, भारत में 400 से अधिक निजी एफ.एम. स्टेशन और एआईआर के सैकड़ों एफ.एम. स्टेशन कार्यरत हैं। एफ.एम. रेडियो अब स्मार्टफोन और इंटरनेट से जुड़ा हुआ है, जिससे यह पारंपरिक ट्रांजिस्टर से परे एक मल्टीमीडिया मंच बन गया है, जो ऑडियो स्ट्रीमिंग और पॉडकास्टिंग जैसे आधुनिक स्वरूपों के साथ प्रतिस्पर्धा कर रहा है। भारत में एफ.एम. का विकास शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों के बीच सूचना और मनोरंजन के अंतर को पाटने में सहायक रहा है।

4.1.3 एफ.एम. की तकनीकी विशेषताएँ और सार्वजनिक महत्व

एफ.एम. (फ्रीक्वेंसी मॉड्यूलेशन) रेडियो ने भारतीय जनसंचार के इतिहास में अपनी विशेष तकनीकी विशेषताओं और सार्वजनिक महत्व के कारण एक अद्वितीय स्थान प्राप्त किया है। इसकी तकनीकी संरचना ही इसे सिर्फ एक संचार माध्यम नहीं, बल्कि एक **सांस्कृतिक और सामाजिक उपकरण** बनाती है। एफ.एम. की विशेषताएँ जैसे उच्च ध्वनि गुणवत्ता, सीमित प्रसारण रेंज, स्थिर सिग्नल और आवृत्ति आधारित मॉड्यूलेशन ने इसे ग्रामीण और शहरी भारत दोनों में एक आवश्यक माध्यम बना दिया है। इसके माध्यम से न केवल संगीत और मनोरंजन का प्रसारण होता है, बल्कि शैक्षिक, सामाजिक और स्वास्थ्य संबंधी संदेश भी प्रभावी रूप से आम जनता तक पहुँचते हैं।

ध्वनि की गुणवत्ता

एफ.एम. की सबसे महत्वपूर्ण और निर्णायक विशेषता इसकी **उच्च ध्वनि गुणवत्ता** है। पारंपरिक ए.एम. रेडियो में ऑडियो सिग्नल को वाहक तरंग के **आयाम** में कोडित किया जाता है। इसका परिणाम यह होता है कि बाहरी शोर, जैसे बिजली के उपकरण, वातावरणीय हस्तक्षेप या अन्य इलेक्ट्रॉनिक हस्तक्षेप, सीधे सिग्नल में प्रवेश कर जाते हैं। एफ.एम. में, इसके विपरीत, जानकारी वाहक तरंग की **आवृत्ति** में कोडित होती है। आयाम में होने वाले उतार-चढ़ाव (जो अधिकांश शोर उत्पन्न करते हैं) को एफ.एम. रिसीवर अनदेखा कर देते हैं और केवल आवृत्ति में होने वाले परिवर्तनों को पढ़ते हैं। इसका परिणाम यह होता है कि ध्वनि **क्रिस्टल-क्लियर** और उच्च-निष्ठा वाली सुनाई देती है।

1. संगीत और मनोरंजन का क्रांति:

एफ.एम. रेडियो ने संगीत सुनने के अनुभव को पूरी तरह बदल दिया। ए.एम. पर प्रसारित संगीत अक्सर नीरस, क्रैकलिंग (crackling) और सीमित ऑडियो डायनामिक्स वाला होता था। एफ.एम. ने उच्च बास और स्पष्ट ट्रेबल के साथ पूर्ण-श्रेणी के ऑडियो सिग्नल के प्रसारण को संभव बनाया। इसके अलावा, एफ.एम. की स्टीरियो प्रसारण क्षमता ने संगीत प्रेमियों को एक इमर्सिव और यथार्थवादी ध्वनि अनुभव प्रदान



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

किया। यह अनुभव विशेष रूप से निजी एफ.एम. स्टेशनों में स्पष्ट दिखाई दिया, जिन्होंने संगीत-आधारित प्रोग्रामिंग में उच्च गुणवत्ता और सजीव प्रस्तुति सुनिश्चित की। श्रोताओं ने अब न केवल संगीत को सुना, बल्कि हर इंस्ट्रूमेंट की ध्वनि और गायन के प्रत्येक सुर को अलग पहचानने की क्षमता प्राप्त की।

2. स्पष्टता का महत्व:

एफ.एम. रेडियो केवल संगीत तक सीमित नहीं है। समाचार, टॉक शो, चर्चाएं और शैक्षिक कार्यक्रम भी इसके माध्यम से प्रसारित होते हैं। इन कार्यक्रमों के लिए **ध्वनि की स्पष्टता** अत्यंत महत्वपूर्ण है। एफ.एम. यह सुनिश्चित करता है कि संदेश बिना किसी विकृति या हस्तक्षेप के श्रोताओं तक पहुंचे। विशेष रूप से ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में, जहाँ अधिकांश लोग इलेक्ट्रॉनिक मीडिया पर निर्भर करते हैं, संदेश की स्पष्टता जीवन रक्षक हो सकती है। उदाहरण के लिए, स्वास्थ्य संबंधी जानकारी, जैसे टीकाकरण कार्यक्रम, मातृ और शिशु स्वास्थ्य, या आपातकालीन चेतावनियाँ, यदि स्पष्ट रूप से श्रोताओं तक पहुँचें, तो इनका वास्तविक सामाजिक और स्वास्थ्य लाभ होता है।

3. स्थिरता

एफ.एम. सिग्नल की एक और प्रमुख विशेषता उसकी **स्थिरता** है। ए.एम. की तरह, एफ.एम. में सिग्नल की शक्ति और गुणवत्ता में अचानक उतार-चढ़ाव (फेडिंग) नहीं होता। यदि सिग्नल प्राप्त हो रहा है, तो उसकी गुणवत्ता लगातार स्थिर रहती है। इसका लाभ यह होता है कि श्रोताओं को लंबी अवधि तक सुनने का **सुखद अनुभव** मिलता है। यही कारण है कि एफ.एम. रेडियो ड्राइविंग के दौरान या चलते-फिरते सुनने के लिए सबसे पसंदीदा माध्यम बन गया है। चाहे यातायात में फंसे हों या घर पर आराम कर रहे हों, एफ.एम. की स्पष्ट और स्थिर ध्वनि श्रोताओं को निरंतर जुड़ाव प्रदान करती है।

युवा वर्ग में लोकप्रियता और स्थानीय प्रसारण की शक्ति

एफ.एम. रेडियो की लोकप्रियता, विशेष रूप से युवा वर्ग में, इसके दोहरी लाभ के कारण है – उच्च गुणवत्ता वाली ध्वनि और गहन स्थानीय जुड़ाव।

युवा वर्ग में लोकप्रियता

निजी एफ.एम. चैनलों ने भारत के युवा वर्ग की बदलती आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं को ध्यान में रखते हुए अपनी प्रोग्रामिंग तैयार की।

1. संगीत और प्रोग्रामिंग:

एफ.एम. चैनलों ने मुख्य रूप से नवीनतम बॉलीवुड हिट्स, अंतर्राष्ट्रीय पॉप संगीत और क्षेत्रीय हिट्स पर ध्यान केंद्रित किया। इसने युवा श्रोताओं को आकर्षित किया और उनकी मनोरंजन की जरूरतों को पूरा किया। पारंपरिक और गंभीर टॉक शो की तुलना में, एफ.एम. ने हल्के-फुल्के, तेज-तर्रार और इंटरैक्टिव कार्यक्रमों को प्राथमिकता दी। इन कार्यक्रमों ने युवा वर्ग को जोड़ने और उनकी रुचियों को समझने का कार्य किया।

2. इंटरएक्टिविटी और पहचान:

एफ.एम. चैनलों ने श्रोताओं को सीधे कार्यक्रम में भाग लेने का अवसर प्रदान किया। कॉल-इन शो, डेडिकेशन संदेश और ऑन-एयर प्रतियोगिताओं के माध्यम से श्रोता अपने विचार और संदेश साझा कर सकते थे। रेडियो जॉकी (RJs) युवाओं के लिए न केवल मनोरंजन का स्रोत, बल्कि **रोल मॉडल और दोस्त** भी बन गए। RJs अक्सर हिंदी और अंग्रेजी का मिश्रित भाषा प्रयोग करते थे, और अपने कार्यक्रमों में युवाओं के रोजमर्रा के जीवन, चुनौतियों और आकांक्षाओं को दर्शाते थे। इस प्रकार, एफ.एम. रेडियो युवाओं के लिए **पहचान और अभिव्यक्ति का मंच** बन गया।

3. शहरी जीवनशैली का हिस्सा:

एफ.एम. रेडियो शहरी जीवनशैली का अभिन्न हिस्सा बन गया है। लोग इसे यात्रा करते समय (कार या सार्वजनिक परिवहन में), काम करते समय या आराम करते समय



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

सुनते हैं। स्मार्टफोन में अंतर्निहित एफ.एम. रिसीवर ने इसकी पहुंच को और भी बढ़ा दिया है। यह सुविधा सुनिश्चित करती है कि श्रोताओं को हर समय और हर जगह उच्च गुणवत्ता वाली ध्वनि का अनुभव मिले।

स्थानीय प्रसारण

एफ.एम. की **सीमित रेंज** इसकी सबसे बड़ी सामाजिक-सांस्कृतिक ताकत बन गई है।

1. गहन स्थानीय जुड़ाव:

एफ.एम. सिग्नल लंबी दूरी तक नहीं जाता। प्रत्येक स्टेशन केवल एक विशेष शहर या क्षेत्र पर केंद्रित होता है। इसका अर्थ है कि एफ.एम. स्थानीय मुद्दों, स्थानीय हस्तियों, ट्रैफिक अपडेट्स और सांस्कृतिक कार्यक्रमों पर ध्यान केंद्रित कर सकता है। उदाहरण के लिए, मुंबई स्थित एफ.एम. स्टेशन बेंगलुरु या कोलकाता के ट्रैफिक की जानकारी नहीं देगा, जिससे इसकी स्थानीय प्रासंगिकता बढ़ती है।

2. क्षेत्रीय भाषा और संस्कृति का संवर्धन:

निजी एफ.एम. चैनलों ने स्थानीय भाषाओं और बोलियों को अपनाया। पुणे, इंदौर और जयपुर जैसे शहरों में, एफ.एम. ने शहर की विशिष्ट बोली और व्यंग्य का उपयोग किया। इससे श्रोताओं को यह अनुभव होता है कि यह उनका **अपना माध्यम** है। यह स्थानीयकरण राष्ट्रीय एकता को कमजोर किए बिना सांस्कृतिक विविधता का उत्सव मनाता है।

3. सामुदायिक रेडियो का आधार:

एफ.एम. की स्थानीय प्रकृति सामुदायिक रेडियो के लिए आदर्श है। छोटे स्टेशन स्थानीय समुदायों को स्वास्थ्य, कृषि, शिक्षा और स्थानीय शासन जैसे मुद्दों पर अपनी आवाज उठाने का अवसर प्रदान करते हैं। इससे एफ.एम. केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं रह जाता, बल्कि यह सशक्तिकरण और जागरूकता का उपकरण बन जाता है।

एफ.एम. की सामाजिक और शैक्षिक भूमिका

एफ.एम. रेडियो का महत्व केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं है। इसकी तकनीकी क्षमताओं और स्थानीयकरण के कारण यह **शैक्षिक और सामाजिक संदेशों** के प्रसारण में भी प्रभावशाली साबित हुआ है।

1. शैक्षिक प्रसारण:

एफ.एम. रेडियो स्कूल और कॉलेजों में अध्ययन सामग्री, भाषा शिक्षा और विज्ञान संबंधित जानकारी प्रदान करता है। विशेष रूप से ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों में, जहाँ इंटरनेट या केबल टीवी की पहुंच सीमित है, एफ.एम. शैक्षिक संदेशों का सस्ता और प्रभावी माध्यम साबित होता है।

2. सामाजिक जागरूकता:

एफ.एम. ने स्वास्थ्य, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण और नागरिक जिम्मेदारियों पर कार्यक्रम प्रसारित किए। उदाहरण के लिए, टीकाकरण अभियान, मातृ और शिशु स्वास्थ्य, और स्थानीय शासन के कार्यक्रम एफ.एम. पर पहुंचकर समुदाय में **सकारात्मक बदलाव** लाते हैं।

3. आपातकालीन सूचना:

एफ.एम. रेडियो प्राकृतिक आपदाओं, ट्रेफिक अपडेट या स्थानीय सुरक्षा चेतावनियों की सूचना देने में प्रभावशाली है। इसकी सीमित रेंज और व्यापक स्थानीय जुड़ाव इसे आपातकालीन संदेशों के लिए आदर्श बनाते हैं।

एफ.एम. रेडियो केवल संगीत और मनोरंजन का माध्यम नहीं है, बल्कि यह तकनीकी श्रेष्ठता, सामाजिक प्रासंगिकता और सांस्कृतिक संवर्धन का एक शक्तिशाली संयोजन है। इसकी उच्च ध्वनि गुणवत्ता, स्थिर सिग्नल, इंटरएक्टिविटी और स्थानीयकरण ने इसे युवाओं और स्थानीय समुदायों के लिए एक अनिवार्य माध्यम बना दिया है। एफ.एम. रेडियो ने शैक्षिक और सामाजिक जागरूकता में योगदान दिया, सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा दिया और नागरिकों को सशक्त बनाया।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

आज, भारत में एफ.एम. रेडियो श्रोताओं के दैनिक जीवन का हिस्सा बन गया है। यह शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में **सूचना, मनोरंजन और सामाजिक संवाद** का एक प्रभावी साधन है। इसकी तकनीकी विशेषताएँ और सामाजिक भूमिका इसे न केवल वर्तमान पीढ़ी के लिए, बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी एक मूल्यवान और अपरिहार्य माध्यम बनाती हैं। एफ.एम. रेडियो, एडविन आर्मस्ट्रांग के एक तकनीकी आविष्कार से शुरू होकर, भारतीय समाज में एक शक्तिशाली सामाजिक और सांस्कृतिक शक्ति बन गया है। इसने ध्वनि की गुणवत्ता के मामले में एक क्रांति लाई, जिसने श्रोता अनुभव को पूरी तरह से बदल दिया। ए.एम. के विपरीत, एफ.एम. ने शोर-मुक्त, स्टीरियो-सक्षम प्रसारण प्रदान किया जिसने संगीत उद्योग को एक नई दिशा दी। भारत में इसका विकास, सरकारी पहल से निजीकरण और फिर ग्रामीण विस्तार तक, देश के संचार क्षेत्र के उदारीकरण की कहानी को दर्शाता है। आज, एफ.एम. न केवल मनोरंजन का एक प्राथमिक स्रोत है, बल्कि यह युवा वर्ग की आकांक्षाओं को व्यक्त करने का एक मंच है, और स्थानीय संस्कृति व भाषा को बढ़ावा देने वाला एक शक्तिशाली माध्यम है। इसकी सीमित भौगोलिक सीमा ही इसकी सबसे बड़ी ताकत बन गई है, जिसने इसे 'लोकल' और 'पर्सनल' माध्यम बना दिया है, जो हर शहर की धड़कन को उसकी अपनी आवाज़ में प्रसारित करता है। एफ.एम. रेडियो का भविष्य, हालांकि डिजिटल प्लेटफॉर्म से प्रतिस्पर्धा कर रहा है, फिर भी इसकी सहज पहुंच, कम लागत और स्थानीय प्रासंगिकता के कारण, भारतीय जनसंचार के परिदृश्य में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका बनाए रखेगा।

इकाई 5.2: सामुदायिक रेडियो: विशेषताएँ और भूमिका

5.2.1 सामुदायिक रेडियो का परिचय

सामुदायिक रेडियो जनसंचार माध्यमों के बीच एक अद्वितीय स्थान रखता है, जो पारंपरिक सरकारी या वाणिज्यिक प्रसारण मॉडल से मौलिक रूप से भिन्न है। यह केवल एक तकनीकी मंच नहीं है, बल्कि यह लोकतंत्र, अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और स्थानीय सशक्तिकरण का एक शक्तिशाली माध्यम है। सामुदायिक रेडियो की आधारशिला यह विचार है कि सूचना का प्रवाह नीचे से ऊपर की ओर हो, जहाँ स्थानीय लोग न केवल श्रोता हों, बल्कि कार्यक्रम निर्माता, प्रस्तोता और स्टेशन के स्वामी भी हों।

चित्र 5.2: सामुदायिक रेडियो

एफ.एम. तकनीक की स्थानीय प्रकृति (सीमित भौगोलिक कवरेज) ने सामुदायिक रेडियो के लिए एक आदर्श तकनीकी आधार प्रदान किया, जिससे यह एक विशेष समुदाय की ज़रूरतों, भाषा और संस्कृति पर केंद्रित हो सका। इसका उद्भव वैश्विक स्तर पर मीडिया एकाधिकार के विरोध और विकासशील देशों में सामाजिक परिवर्तन की आवश्यकता से जुड़ा हुआ है। भारत में, सामुदायिक रेडियो का विकास एक लंबे संघर्ष और नीतिगत सुधारों का परिणाम रहा है, जिसने इसे 'तीसरा स्तर' का प्रसारण माध्यम बनने का गौरव दिलाया है। यह आलेख सामुदायिक रेडियो के अर्थ और अवधारणा से लेकर वैश्विक व भारतीय संदर्भ में इसके विकास, इसकी विशिष्टताओं



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

और स्थानीय समुदायों के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक विकास में इसकी अपरिहार्य भूमिका का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है। यह माध्यम हाशिए पर पड़े समुदायों को मुख्यधारा की सूचना से जोड़ने, उनके मुद्दों को आवाज़ देने और उन्हें विकास प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार बनाने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है।

सामुदायिक रेडियो: अर्थ और अवधारणा

सामुदायिक रेडियो की अवधारणा उस सिद्धांत पर आधारित है जो संचार को लोगों का मौलिक अधिकार मानता है। यह रेडियो स्टेशन किसी व्यावसायिक लाभ के उद्देश्य से नहीं, बल्कि किसी विशिष्ट भौगोलिक या सामाजिक समुदाय की सेवा के लिए स्थापित किया जाता है। इसकी पहचान मुख्य रूप से इसके स्वामित्व, भागीदारी और प्रोग्रामिंग की प्रकृति से होती है।

अर्थ और अवधारणा

सामुदायिक रेडियो का अर्थ एक ऐसे प्रसारण माध्यम से है जिसका स्वामित्व, संचालन और प्रबंधन स्वयं समुदाय के सदस्यों द्वारा किया जाता है। इसकी सामग्री भी उसी समुदाय की स्थानीय भाषाओं, बोलियों, संगीत और स्थानीय मुद्दों पर केंद्रित होती है। इसे अक्सर "लोगों द्वारा, लोगों के लिए, लोगों का रेडियो" कहा जाता है।

1. स्वामित्व

सामुदायिक रेडियो का स्वामित्व इसे विशेष बनाता है। यह व्यावसायिक या लाभ-केंद्रित रेडियो से अलग होता है क्योंकि इसका उद्देश्य वित्तीय लाभ कमाना नहीं होता, बल्कि समुदाय की सेवा करना और स्थानीय विकास को बढ़ावा देना होता है। सामान्यतः सामुदायिक रेडियो स्टेशन गैर-लाभकारी संगठन, शैक्षणिक संस्थान, या पंजीकृत सामुदायिक ट्रस्ट द्वारा संचालित होते हैं। इसका मतलब यह है कि ये संस्थाएँ कमर्शियल दबाव के बिना, समुदाय की आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुसार कार्यक्रम तैयार कर सकती हैं। स्वामित्व का यह मॉडल स्थानीय लोगों को नियंत्रण और जिम्मेदारी देता है, जिससे रेडियो की दिशा और सामग्री समुदाय के वास्तविक हितों के अनुरूप होती है। उदाहरण के लिए, यदि किसी क्षेत्र में जल संकट

या कृषि से संबंधित समस्या है, तो रेडियो उसी मुद्दे पर प्रोग्राम तैयार कर सकता है। स्वामित्व की यह संरचना पारदर्शिता और जवाबदेही भी सुनिश्चित करती है, क्योंकि निर्णय लेने की प्रक्रिया में समुदाय के सदस्य शामिल होते हैं। इससे रेडियो न केवल सूचना का स्रोत बनता है बल्कि समुदाय के विकास में सक्रिय साझेदार भी बनता है। इस तरह, सामुदायिक रेडियो के स्वामित्व का मॉडल स्थानीय जरूरतों और सामाजिक उद्देश्य को प्रमुखता देता है और इसे एक सशक्त सामाजिक माध्यम बनाता है।

2. भागीदारी

सामुदायिक रेडियो की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता इसकी उच्च स्तर की भागीदारी है। यहाँ श्रोता केवल passive उपभोक्ता नहीं होते, बल्कि वे प्रोग्राम निर्माण, संचालन और प्रबंधन में सक्रिय रूप से शामिल होते हैं। यह भागीदारी कई रूपों में होती है, जैसे कि स्थानीय मुद्दों पर चर्चा करना, समाचार और जानकारी साझा करना, और रेडियो कार्यक्रमों में स्वयं योगदान देना। इस प्रक्रिया से समुदाय के सदस्य अपनी संस्कृति, भाषा, और परंपराओं को कार्यक्रमों में शामिल कर सकते हैं। भागीदारी का यह मॉडल न केवल लोगों को सशक्त बनाता है, बल्कि उन्हें स्वामित्व की भावना भी देता है। जब स्थानीय लोग रेडियो के संचालन और सामग्री निर्माण में योगदान देते हैं, तो कार्यक्रम उनकी वास्तविक आवश्यकताओं और प्राथमिकताओं के अनुकूल बनते हैं। उदाहरण के लिए, किसान अपने कृषि अनुभव साझा कर सकते हैं, छात्र शैक्षणिक विषयों पर प्रोग्राम तैयार कर सकते हैं, और महिलाएँ स्वास्थ्य और शिक्षा से जुड़ी जानकारीयों प्रसारित कर सकती हैं। इस तरह, भागीदारी समुदाय और रेडियो के बीच विश्वास और सहयोग को मजबूत करती है। सामुदायिक रेडियो के इस पहलू से यह सुनिश्चित होता है कि हर सदस्य की आवाज़ सुनी जाए और कार्यक्रम स्थानीय और सामाजिक संदर्भ में अधिक प्रासंगिक और प्रभावी बनें।

3. प्रासंगिकता

सामुदायिक रेडियो की सफलता का एक प्रमुख कारण इसकी स्थानीय प्रासंगिकता है। ये स्टेशन आमतौर पर छोटे भौगोलिक क्षेत्रों जैसे किसी गाँव, कस्बा या नगर के हिस्से में संचालित होते हैं, जिससे उनका फोकस उस समुदाय की वास्तविक समस्याओं



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

और जरूरतों पर रहता है। राष्ट्रीय या वाणिज्यिक रेडियो अक्सर सामान्य और व्यापक दर्शकों के लिए कार्यक्रम बनाते हैं, लेकिन सामुदायिक रेडियो स्थानीय मुद्दों पर गहराई से ध्यान देता है। उदाहरण के लिए, किसी ग्रामीण क्षेत्र में जल प्रबंधन, कृषि पद्धतियों, स्थानीय स्वास्थ्य सेवाओं और शिक्षा के मुद्दों को सीधे संबोधित किया जा सकता है। यह प्रासंगिकता रेडियो के श्रोताओं को **सूचना, समाधान और जागरूकता** प्रदान करती है, जो उनके दैनिक जीवन को प्रभावित करती है। इसके अलावा, स्थानीय भाषा और बोलियों में प्रसारण इसे समुदाय के लिए अधिक समझने योग्य और स्वीकार्य बनाता है। प्रासंगिकता की यह विशेषता समुदाय के विश्वास और जुड़ाव को बढ़ाती है। जब लोग देखते हैं कि रेडियो उनकी वास्तविक समस्याओं को समझता है और समाधान पर ध्यान देता है, तो वे अधिक सक्रिय रूप से इसमें भाग लेते हैं। इस प्रकार, प्रासंगिकता सामुदायिक रेडियो को एक **सशक्त और असरदार माध्यम** बनाती है, जो केवल सूचना देने तक सीमित नहीं बल्कि समाज में सकारात्मक बदलाव लाने का काम करती है।

4. लोकतांत्रिक मंच

सामुदायिक रेडियो समाज में समान और लोकतांत्रिक संचार का एक माध्यम प्रदान करता है। यह विशेष रूप से उन वर्गों के लिए महत्वपूर्ण है जो मुख्यधारा के मीडिया में कम प्रतिनिधित्व रखते हैं, जैसे महिलाएँ, मजदूर, किसान, जनजातीय समूह और अन्य हाशिए पर पड़े समुदाय। रेडियो इन्हें अपनी आवाज़ उठाने और निर्णय प्रक्रिया में भाग लेने का अवसर देता है। यह संचार में शक्ति के विकेंद्रीकरण को सुनिश्चित करता है, जिससे केवल बड़े और प्रभावशाली समूहों का प्रभाव नहीं रहता। सामुदायिक रेडियो के इस पहलू से, सामाजिक मुद्दों पर खुला संवाद संभव होता है, विवादों को समझने और हल करने के अवसर मिलते हैं, और समुदाय के सभी सदस्यों की राय और अनुभव महत्व रखता है। उदाहरण के लिए, किसी ग्रामीण क्षेत्र में महिला समूह अपने स्वास्थ्य या शिक्षा से जुड़े मुद्दों को रेडियो पर चर्चा कर सकते हैं, और किसान कृषि समस्याओं पर सलाह साझा कर सकते हैं। यह मंच सूचना का लोकतंत्रीकरण करता है, जिससे समुदाय के कमजोर वर्ग भी निर्णय और विकास प्रक्रिया में भागीदार बनते हैं। इस प्रकार, सामुदायिक रेडियो एक सक्रिय लोकतांत्रिक

माध्यम बन जाता है जो समुदाय की आवाज़ को मुख्यधारा में लाता है और सामाजिक समानता और समावेशिता को बढ़ावा देता है।

5.2 सामुदायिक रेडियो: वैश्विक उद्भव और भारतीय विकास

सामुदायिक रेडियो की अवधारणा एक वैश्विक संचार आंदोलन के रूप में उभरी, जिसका मुख्य उद्देश्य लोकतांत्रिक और विकास-केंद्रित संचार को बढ़ावा देना था। यह आंदोलन विशेष रूप से विकासशील और तीसरी दुनिया के देशों में महत्वपूर्ण माना गया, जहाँ मीडिया पर कॉर्पोरेट और सरकारी नियंत्रण अधिक था और स्थानीय समुदायों की आवाज़ अक्सर दब जाती थी। सामुदायिक रेडियो ने ऐसे क्षेत्रों में स्थानीय जनता को सूचना, शिक्षा और सामाजिक चेतना का माध्यम प्रदान किया, जिससे समुदाय की सक्रिय भागीदारी और सामूहिक विकास को बढ़ावा मिला।

विश्व में सामुदायिक रेडियो का उद्भव

सामुदायिक रेडियो का इतिहास 1940 के दशक के उत्तरार्ध में शुरू होता है, लेकिन इसे वास्तविक गति 1960 और 1970 के दशकों में मिली। इस समय, वैश्विक स्तर पर मीडिया पर नियंत्रण के विरोध और सामुदायिक सहभागिता को बढ़ावा देने के प्रयास शुरू हुए।

1. लैटिन अमेरिका में शुरुआत

लैटिन अमेरिका को अक्सर सामुदायिक रेडियो आंदोलन का जन्मस्थान माना जाता है। इस क्षेत्र में 1947 में कोलंबिया में स्थापित रेडियो सूटेन्ज़ा का विशेष महत्व है। यह स्टेशन ग्रामीण शिक्षा और विकास पर केंद्रित था और इसका उद्देश्य समुदाय को सशक्त बनाना था। पूरे लैटिन अमेरिका में सामुदायिक रेडियो स्टेशन अक्सर चर्चों, किसान यूनियनों या सामाजिक संस्थाओं द्वारा संचालित होते थे। इनका मुख्य लक्ष्य सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को दूर करना और ग्रामीण समुदायों को शिक्षा, स्वास्थ्य और कृषि संबंधित जानकारी प्रदान करना था। इन स्टेशनों ने स्थानीय लोगों की सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा दिया और उन्हें न केवल श्रोता, बल्कि निर्णय प्रक्रिया और प्रोग्राम निर्माण का हिस्सा बनाया।



2. यूरोप और उत्तरी अमेरिका में वैकल्पिक मीडिया

1960 के दशक में यूरोप और उत्तरी अमेरिका में 'फ्री रेडियो' और 'पायरेट रेडियो' के रूप में एक नया आंदोलन शुरू हुआ। ये स्टेशन मुख्यधारा के मीडिया के कॉर्पोरेट नियंत्रण और सामग्री की एकरूपता के विरोध में थे। हालांकि ये अक्सर अवैध या अनधिकृत रूप से संचालित होते थे, लेकिन उन्होंने मीडिया की स्वतंत्रता और वैकल्पिक दृष्टिकोणों की आवश्यकता पर जोर दिया। इन स्टेशनों ने सामाजिक, राजनीतिक और सांस्कृतिक मुद्दों पर वैकल्पिक आवाज़ें प्रस्तुत कीं और युवा एवं नागरिक समूहों के लिए मंच प्रदान किया। इस प्रक्रिया ने सामुदायिक रेडियो के महत्व को वैश्विक स्तर पर उजागर किया और यह दिखाया कि मीडिया सिर्फ सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक बदलाव का उपकरण भी हो सकता है।

3. यूनेस्को की भूमिका

1990 के दशक में संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (UNESCO) ने सामुदायिक रेडियो को सक्रिय रूप से बढ़ावा देना शुरू किया। यूनेस्को ने इसे विकास संचार का एक महत्वपूर्ण माध्यम माना और वैश्विक स्तर पर इसके लिए कानूनी और नीतिगत ढांचे तैयार करने में विकासशील देशों की मदद की। इस पहल से सामुदायिक रेडियो ने शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, महिला सशक्तिकरण और पर्यावरण जागरूकता जैसे क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इसके अलावा, यूनेस्को की सहायता से विभिन्न देशों में स्थानीय भाषा संरक्षण और सांस्कृतिक विविधता को बढ़ावा मिला। आज, सामुदायिक रेडियो एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका में स्थानीय मुद्दों और आपदा प्रबंधन के लिए भी महत्वपूर्ण माध्यम बन गया है। यह न केवल सूचना का स्रोत है, बल्कि समाज के हाशिए पर पड़े वर्गों जैसे कि किसान, महिला समूह, आदिवासी और ग्रामीण समुदाय को अपनी आवाज़ प्रस्तुत करने का अवसर भी प्रदान करता है। सामुदायिक रेडियो ने वैश्विक स्तर पर यह सिद्ध कर दिया है कि यह सिर्फ तकनीकी माध्यम नहीं बल्कि समाज सुधार और विकास का एक सशक्त उपकरण है।

इस प्रकार, सामुदायिक रेडियो ने अपने वैश्विक उद्भव से लेकर भारतीय संदर्भ में विकास तक एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह स्थानीय समुदायों की सहभागिता,

सामाजिक चेतना और लोकतांत्रिक संचार को बढ़ावा देने वाला एक सशक्त माध्यम बन गया है, जो विश्व के विभिन्न हिस्सों में समान रूप से शिक्षा, विकास और सामाजिक समावेशन के लिए प्रयोग किया जा रहा है।

भारत में सामुदायिक रेडियो का विकास

भारत में सामुदायिक रेडियो का विकास एक लंबी और क्रमिक कानूनी, नीतिगत और सामाजिक यात्रा का परिणाम है। यह यात्रा मुख्य रूप से सरकारी प्रसारण पर लंबे समय तक मौजूद एकाधिकार को चुनौती देने और संचार को लोकतांत्रिक बनाने के प्रयासों से शुरू हुई। सामुदायिक रेडियो ने न केवल स्थानीय समुदायों को सूचना, शिक्षा और मनोरंजन का माध्यम प्रदान किया, बल्कि ग्रामीण और हाशिए पर पड़े वर्गों की आवाज़ को भी मुख्यधारा के विमर्श में शामिल किया। इसका विकास विभिन्न चरणों और महत्वपूर्ण घटनाओं के माध्यम से हुआ, जो भारतीय सामाजिक और कानूनी संदर्भ में इसे एक विशेष महत्व प्रदान करते हैं।

1. संघर्षपूर्ण शुरुआत (1995)

भारत में रेडियो प्रसारण पर सरकारी एकाधिकार काफी लंबे समय तक रहा। सार्वजनिक प्रसारण का पूरा नियंत्रण तब केंद्रीय सरकार के पास था, और निजी या सामुदायिक रेडियो स्टेशन स्थापित करने पर प्रतिबंध था। यह स्थिति लगभग सभी नागरिकों और संस्थाओं के लिए संचार और सूचना की स्वतंत्रता को सीमित करती थी। इस एकाधिकार को पहली बार 1995 में सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक निर्णय के माध्यम से चुनौती दी गई। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में स्पष्ट किया कि "वायु तरंगें सार्वजनिक संपत्ति हैं" और संचार का अधिकार संविधान के अनुच्छेद 19(1)(ए) के तहत अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का हिस्सा है। यह निर्णय भारत में सामुदायिक और निजी प्रसारण के लिए एक निर्णायक मोड़ साबित हुआ। कोर्ट के इस निर्णय ने न केवल कानूनी आधार तैयार किया, बल्कि समाज और नीति निर्माताओं को यह संदेश भी दिया कि सूचना और संचार का अधिकार केवल सरकारी नियंत्रण तक सीमित नहीं होना चाहिए। इस कदम ने सामुदायिक रेडियो के लिए पहली बार कानूनी रास्ता खोल दिया, जिससे स्थानीय लोगों और संस्थाओं को अपनी आवाज़ उठाने का अवसर मिला।



2. शैक्षणिक सामुदायिक रेडियो (2002)

1995 के सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद, सामुदायिक रेडियो की अवधारणा धीरे-धीरे विकसित होने लगी। प्रारंभिक वर्षों में, सरकार ने इसे शैक्षणिक संस्थानों तक सीमित रखा। इसका उद्देश्य रेडियो का प्रयोग शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए करना और छात्रों के सामुदायिक जुड़ाव को बढ़ावा देना था। 2002 में इस दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया गया, जब अन्ना विश्वविद्यालय, चेन्नई को भारत का पहला लाइसेंस प्राप्त सामुदायिक रेडियो स्टेशन स्थापित करने की अनुमति मिली। इस स्टेशन का मुख्य उद्देश्य विश्वविद्यालय परिसर और आसपास के क्षेत्र के छात्रों और स्थानीय समुदाय को सेवा प्रदान करना था। शैक्षणिक सामुदायिक रेडियो ने स्थानीय भाषा, संस्कृति और छात्रों की रचनात्मकता को बढ़ावा दिया। इस पहल से यह स्पष्ट हुआ कि रेडियो केवल मनोरंजन का माध्यम नहीं, बल्कि सामुदायिक शिक्षा और सामाजिक जागरूकता का एक प्रभावशाली उपकरण बन सकता है। शैक्षणिक सामुदायिक रेडियो ने स्थानीय छात्रों और समुदाय के सदस्यों को प्रशिक्षण और रेडियो संचालन में भागीदारी का अवसर दिया। इस तरह के स्टेशनों ने स्थानीय कृषि, स्वास्थ्य, पर्यावरण और शिक्षा से जुड़ी जानकारी का प्रसारण किया। इसके माध्यम से समुदाय को व्यावहारिक ज्ञान और सूचना प्रदान की गई, जिससे ग्रामीण और अर्ध-शहरी क्षेत्रों में जागरूकता बढ़ी। शैक्षणिक रेडियो के ये अनुभव आगे चलकर पूरे देश में सामुदायिक रेडियो आंदोलन का मार्ग प्रशस्त करने में सहायक साबित हुए।

3. स्वैच्छिक सामुदायिक रेडियो का लाइसेंस (2006)

सामुदायिक रेडियो आंदोलन में सबसे बड़ा बदलाव 2006 में आया, जब भारत सरकार ने स्वैच्छिक और गैर-लाभकारी संस्थाओं (NGOs), कृषि विज्ञान केंद्रों और अन्य सामाजिक संगठनों को सामुदायिक रेडियो स्टेशन स्थापित करने की अनुमति दी। यह नीति वास्तव में सामुदायिक रेडियो को “लोगों के रेडियो” में बदलने का निर्णायक कदम थी। इस बदलाव ने लाइसेंस शुल्क में कमी और प्रक्रिया को सरल बनाना शामिल किया, जिससे छोटे और मध्यम स्तर के संगठन भी इस माध्यम का लाभ उठा सके। 2006 के इस कदम से सामुदायिक रेडियो ने स्थानीय समुदायों के लिए प्रासंगिक कार्यक्रमों का प्रसारण शुरू किया।

इन कार्यक्रमों का उद्देश्य न केवल सूचना और मनोरंजन प्रदान करना था, बल्कि स्थानीय समस्याओं जैसे कृषि पद्धतियों, जल प्रबंधन, स्वास्थ्य, शिक्षा और सामाजिक जागरूकता को भी सीधे संबोधित करना था। NGOs और स्वैच्छिक संस्थाओं द्वारा संचालित ये स्टेशन समुदाय के लोगों को निर्णय प्रक्रिया, प्रोग्राम निर्माण और संचालन में सक्रिय भागीदारी का अवसर देते थे। इस पहल ने यह स्पष्ट कर दिया कि रेडियो केवल सूचना का माध्यम नहीं, बल्कि सामाजिक सशक्तिकरण और लोकतांत्रिक संवाद का भी एक महत्वपूर्ण उपकरण है।

4. वर्तमान स्थिति

वर्तमान में, भारत में सामुदायिक रेडियो अपने विकास के चरम पर है। 'एफ.एम. फेज-III' के विस्तार के बावजूद, सामुदायिक रेडियो ने स्थानीय स्तर पर अपनी गति और प्रभाव बनाए रखा है। आज भारत में सैकड़ों सामुदायिक रेडियो स्टेशन कार्यरत हैं, जो देश की भाषाई, सांस्कृतिक और सामाजिक विविधता को दर्शाते हैं। ये स्टेशन छोटे शहरों, अर्ध-शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में स्थानीय सूचना, मनोरंजन और शिक्षा प्रदान कर रहे हैं। सामुदायिक रेडियो ने कई क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। कृषि में यह किसानों को नवीनतम तकनीकों और मौसम संबंधी सूचनाओं से अवगत कराता है। स्वास्थ्य क्षेत्र में, यह लोगों को स्वच्छता, पोषण, रोग नियंत्रण और महिला स्वास्थ्य से संबंधित जानकारी प्रदान करता है। इसके अलावा, लैंगिक समानता, मतदाता जागरूकता और पर्यावरण संरक्षण जैसे सामाजिक मुद्दों पर भी रेडियो ने समुदाय को सकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। स्थानीय भाषा और सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से, सामुदायिक रेडियो ने स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और ज्ञान को संरक्षित करने और बढ़ावा देने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

आज भारत में सामुदायिक रेडियो न केवल सूचना और मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि यह सामाजिक विकास, लोकतांत्रिक भागीदारी और स्थानीय समुदाय के सशक्तिकरण का एक प्रभावशाली उपकरण बन गया है। यह ग्रामीण और हाशिए पर पड़े समुदायों को अपनी समस्याओं और जरूरतों के लिए आवाज़ उठाने का मंच देता है, जिससे संचार का लोकतंत्रीकरण संभव हुआ है। भारत में सामुदायिक रेडियो का यह विकास यात्रा कानूनी निर्णय, शैक्षणिक प्रयास और स्वैच्छिक संगठनों की सक्रिय भागीदारी का



परिणाम है, जिसने इसे समाज के लिए एक सशक्त, लोकतांत्रिक और प्रासंगिक माध्यम बनाया है। सामुदायिक रेडियो का भारतीय मॉडल वैश्विक अनुभवों से प्रेरित है, लेकिन इसमें स्थानीय संदर्भ और समाज की विविधता का विशेष ध्यान रखा गया है। यह स्पष्ट करता है कि संचार का अधिकार केवल शहरी और मुख्यधारा के मीडिया तक सीमित नहीं होना चाहिए, बल्कि हर नागरिक और समुदाय तक पहुँचना चाहिए। इस तरह, भारत में सामुदायिक रेडियो का विकास केवल तकनीकी और कानूनी उपलब्धि नहीं, बल्कि सामाजिक न्याय, शिक्षा और समुदाय के सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है।

5.2.2 सामुदायिक रेडियो की विशेषताएँ: स्थानीयता, स्वामित्व और प्रकृति

सामुदायिक रेडियो अपनी अद्वितीय विशेषताओं के कारण वाणिज्यिक और सार्वजनिक सेवा प्रसारण से अलग पहचान रखता है। यह न केवल सूचना और मनोरंजन का माध्यम है, बल्कि स्थानीय विकास, सामाजिक जागरूकता और लोकतांत्रिक सहभागिता का भी एक प्रभावशाली उपकरण बन गया है। सामुदायिक रेडियो की प्रभावशीलता और उपयोगिता इसके स्थानीय संदर्भ, स्वामित्व और कार्यक्रमों की प्रकृति से तय होती है। इन विशेषताओं के कारण यह मीडिया का एक ऐसा रूप है जो समुदाय की वास्तविक आवश्यकताओं और समस्याओं को सीधे संबोधित कर सकता है।

1. स्थानीय स्तर पर प्रसारण

सामुदायिक रेडियो की सबसे प्रमुख विशेषता इसकी स्थानीयता है। यह केवल किसी बड़े क्षेत्र या पूरे देश तक सीमित नहीं होता, बल्कि एक विशिष्ट भौगोलिक और सामाजिक समुदाय के भीतर प्रसारण करता है। इसकी कवरेज सीमा आमतौर पर 15-20 किलोमीटर तक सीमित होती है, जिससे यह स्थानीय मुद्दों, मौसम, बाजार और सामाजिक गतिविधियों पर केंद्रित कार्यक्रम प्रस्तुत कर सकता है।

अत्यधिक प्रासंगिक सामग्री:

चूँकि सामुदायिक रेडियो का प्रसारण क्षेत्र सीमित है, इसका ध्यान पूरी तरह स्थानीय समस्याओं और घटनाओं पर केंद्रित होता है। उदाहरण के लिए, किसी गाँव में कृषि

समुदाय के लिए यह स्टेशन विशिष्ट फसलों की खेती की तकनीक, स्थानीय कीटों या रोगों से निपटने के उपाय, और कृषि बाजार के मूल्य जैसी जानकारी तुरंत प्रसारित कर सकता है। इसके अलावा, पंचायतों के निर्णय, स्थानीय स्वास्थ्य अभियान, जल संरक्षण और सामाजिक योजनाओं की जानकारी भी श्रोताओं तक जल्दी पहुँचाई जा सकती है। राष्ट्रीय या वाणिज्यिक रेडियो पर ऐसी सूचनाएँ उपलब्ध कराना अक्सर संभव नहीं होता, क्योंकि उनका प्रसारण अधिक व्यापक दर्शकों के लिए सामान्य और सामान्यीकृत होता है। इस प्रकार, सामुदायिक रेडियो स्थानीय जनता की तत्काल और प्रासंगिक जानकारी तक पहुँच सुनिश्चित करता है।

स्थानीय भाषा और बोली का उपयोग:

सामुदायिक रेडियो का एक और महत्वपूर्ण पहलू इसका भाषाई समावेश है। ये स्टेशन स्थानीय भाषाओं और बोलियों में कार्यक्रम प्रसारित करते हैं, जैसे बुंदेलखंडी, अवधी, भीली, मैथिली या तेलगु। इस पहल का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि संदेश न केवल सुना जाए, बल्कि पूरी तरह से समझा भी जाए। यह विशेष रूप से उन समुदायों के लिए महत्वपूर्ण है जिनकी शिक्षा का स्तर कम है या जो मुख्यधारा की भाषाओं में सहज नहीं हैं। स्थानीय भाषा का उपयोग श्रोताओं को सहज, आत्मीय और भरोसेमंद अनुभव प्रदान करता है। यह रेडियो और श्रोताओं के बीच एक गहरा जुड़ाव स्थापित करता है, जिससे कार्यक्रम अधिक प्रभावशाली और स्वीकार्य बनते हैं।

संसाधनों का उपयोग:

सामुदायिक रेडियो अपने कार्यक्रमों में स्थानीय प्रतिभाओं और विशेषज्ञों का सक्रिय योगदान सुनिश्चित करता है। उदाहरण के लिए, किसान अपने अनुभव साझा कर सकते हैं, शिक्षक शैक्षणिक विषयों पर कार्यक्रम तैयार कर सकते हैं, और स्वास्थ्य कार्यकर्ता स्थानीय स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं और उपायों पर जानकारी दे सकते हैं। यह मॉडल न केवल प्रोग्रामिंग की लागत को कम करता है, बल्कि रेडियो स्टेशन की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता भी बढ़ाता है। जब स्थानीय लोग स्वयं कार्यक्रम निर्माण में शामिल होते हैं, तो कार्यक्रम समुदाय की वास्तविक आवश्यकताओं और सांस्कृतिक संदर्भ के अनुसार तैयार होते हैं। इसके अतिरिक्त, यह प्रक्रिया स्थानीय



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

प्रतिभाओं को प्रशिक्षण और कौशल विकास का अवसर भी प्रदान करती है, जिससे समाज में सशक्तिकरण और रोजगार के अवसर भी बढ़ते हैं।

2. स्वामित्व और भागीदारी

सामुदायिक रेडियो का एक और महत्वपूर्ण पहलू इसका स्वामित्व और श्रोता की सक्रिय भागीदारी है। यह व्यावसायिक रेडियो से अलग है, जहाँ निर्णय केवल कॉर्पोरेट हितों और विज्ञापन लाभ पर आधारित होते हैं। सामुदायिक रेडियो के संचालन और प्रबंधन में स्थानीय संगठन, गैर-लाभकारी संस्थाएँ, शैक्षणिक संस्थान और स्वयंसेवी समूह शामिल होते हैं। इसका उद्देश्य केवल प्रसारण करना नहीं, बल्कि समुदाय के लोगों को निर्णय प्रक्रिया और कार्यक्रम निर्माण में सक्रिय भागीदार बनाना है। स्वामित्व की यह संरचना समुदाय के सदस्यों को उत्तरदायित्व, पारदर्शिता और निर्णय में हिस्सेदारी का अनुभव कराती है। इससे रेडियो पर विश्वास बढ़ता है और श्रोता इसे अपने स्वतंत्र और लोकतांत्रिक माध्यम के रूप में अपनाते हैं। भागीदारी केवल तकनीकी या संचालन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि समुदाय के लोग सामग्री निर्माण, प्रोग्राम विचार और रेडियो कार्यक्रमों की प्रस्तुति में भी सक्रिय भूमिका निभाते हैं। इस तरह का मॉडल सामुदायिक रेडियो को वास्तविक विकास संचार का माध्यम बनाता है।

3. प्रोग्रामिंग की प्रकृति

सामुदायिक रेडियो की तीसरी महत्वपूर्ण विशेषता इसकी कार्यक्रमों की प्रकृति है। यह रेडियो केवल मनोरंजन का साधन नहीं है, बल्कि शिक्षा, सामाजिक जागरूकता, स्वास्थ्य और कृषि जानकारी का भी केंद्र है। स्थानीय मुद्दों और श्रोताओं की आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए, सामुदायिक रेडियो कार्यक्रम तैयार करता है, जो समुदाय के जीवन स्तर और निर्णय क्षमता को बढ़ाने में मदद करता है। कार्यक्रमों में स्थानीय गीत, संगीत, नाटक, कहानियाँ और सामाजिक संदेश शामिल होते हैं। यह न केवल श्रोताओं के लिए मनोरंजक होता है, बल्कि सांस्कृतिक पहचान और स्थानीय परंपराओं को संरक्षित करने का काम भी करता है। इसके अतिरिक्त, सामुदायिक रेडियो चुनाव, स्वास्थ्य अभियान, जल संरक्षण, पर्यावरण जागरूकता और महिला सशक्तिकरण जैसे विषयों पर सक्रिय रूप से जानकारी प्रदान करता है।

इससे रेडियो श्रोताओं के लिए सूचना का वास्तविक और व्यावहारिक स्रोत बन जाता है, जो केवल समाचार तक सीमित नहीं रहता।

4. लोकतांत्रिक और समावेशी मंच

सामुदायिक रेडियो का एक और विशेष पहलू इसका लोकतांत्रिक और समावेशी मंच होना है। यह रेडियो समाज के हाशिए पर पड़े वर्गों, जैसे महिलाएँ, आदिवासी, किसान और मजदूर, को अपनी आवाज़ उठाने और निर्णय प्रक्रिया में शामिल होने का अवसर प्रदान करता है। यह संचार में शक्ति के विकेंद्रीकरण को सुनिश्चित करता है, जिससे केवल मुख्यधारा के मीडिया या प्रभावशाली समूह ही संवाद का नियंत्रक नहीं रहते। समावेशिता और लोकतांत्रिकता के इस पहलू से समुदाय के सभी सदस्यों को **समान** अवसर और सम्मान मिलता है। कार्यक्रमों में स्थानीय समस्याओं और सुझावों को शामिल करना श्रोताओं को रेडियो के प्रति जुड़ा महसूस कराता है और उन्हें सामाजिक और राजनीतिक जागरूकता की दिशा में सक्रिय बनाता है।

समुदाय की भागीदारी

सामुदायिक रेडियो भागीदारी के सिद्धांत पर फलता-फूलता है। यह सामुदायिक सशक्तिकरण का एक मॉडल है।

1. **कार्यक्रमों का निर्माण:** श्रोताओं को सिर्फ कार्यक्रम सुनने के लिए नहीं कहा जाता है, बल्कि उन्हें कार्यक्रम बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। स्थानीय महिलाएं स्वास्थ्य और पोषण पर कार्यक्रम बना सकती हैं, जबकि छात्र शिक्षा और करियर पर चर्चा कर सकते हैं। यह सह-निर्माण सुनिश्चित करता है कि सामग्री सीधे समुदाय की आवश्यकताओं और हितों को दर्शाती है।
2. **निर्णय लेने में भूमिका:** स्टेशन के प्रबंधन और प्रोग्रामिंग के निर्णयों में समुदाय के प्रतिनिधियों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। एक सामुदायिक रेडियो का संचालन अक्सर एक संचालन समिति द्वारा किया जाता है, जिसमें विभिन्न सामाजिक-आर्थिक वर्गों के प्रतिनिधि शामिल होते हैं। यह लोकतांत्रिक प्रक्रिया सुनिश्चित करती है कि स्टेशन किसी एक व्यक्ति या संस्था के एजेंडे का पालन नहीं कर रहा है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

3. **उत्तरदायित्व और स्वामित्व:** भागीदारी की यह भावना स्टेशन के प्रति स्वामित्व की भावना पैदा करती है। समुदाय के सदस्य न केवल स्टेशन का समर्थन करते हैं बल्कि यह भी सुनिश्चित करते हैं कि यह अपने लक्ष्यों को पूरा करे, जिससे स्टेशन की स्थिरता और उत्तरदायित्व सुनिश्चित होता है।

गैर-व्यावसायिक प्रकृति

सामुदायिक रेडियो अपने व्यावसायिक लक्ष्यों की अनुपस्थिति से परिभाषित होता है।

1. **लाभ का उद्देश्य नहीं:** सामुदायिक रेडियो स्टेशन मुख्य रूप से गैर-लाभकारी मॉडल पर आधारित होते हैं। यद्यपि उन्हें अपने परिचालन लागत को पूरा करने के लिए प्रायोजन और विज्ञापन की अनुमति होती है, लेकिन इन विज्ञापनों का अनुपात सरकार द्वारा निर्धारित होता है (भारत में 5 मिनट प्रति घंटे तक सीमित)। यह सुनिश्चित करता है कि स्टेशन का मुख्य ध्यान प्रोग्रामिंग की गुणवत्ता और सामुदायिक सेवा पर बना रहे, न कि अधिकतम राजस्व कमाने पर।
2. **कम लागत पर संचालन:** सामुदायिक रेडियो स्टेशन आमतौर पर कम बिजली वाले ट्रांसमीटरों (Low-power Transmitters) का उपयोग करते हैं और स्थानीय, स्वयंसेवी श्रम पर अधिक निर्भर होते हैं। इससे उनकी परिचालन लागत कम रहती है, जिससे वे आर्थिक रूप से टिकाऊ बने रहते हैं, भले ही वे बड़े वाणिज्यिक बाजारों में प्रतिस्पर्धा न कर रहे हों।
3. **स्थिरता के लिए वैकल्पिक वित्तपोषण:** विज्ञापन के अलावा, सामुदायिक रेडियो स्टेशन सदस्यता शुल्क, गैर-सरकारी संगठनों से अनुदान, सरकारी योजनाओं से सहायता, और सामुदायिक दान जैसे वैकल्पिक वित्तपोषण मॉडल पर निर्भर करते हैं। यह गैर-व्यावसायिक प्रकृति सामुदायिक रेडियो को सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक दबावों से मुक्त रहकर स्वतंत्र और आलोचनात्मक सामग्री प्रसारित करने की स्वतंत्रता देती है।

सामुदायिक रेडियो की भूमिका

सामुदायिक रेडियो अपनी स्थानीय प्रकृति और भागीदारी मॉडल के कारण स्थानीय स्तर पर जागरूकता पैदा करने और समुदाय के सदस्यों को सशक्त बनाने में एक

अतुलनीय भूमिका निभाता है। यह समाज में सकारात्मक परिवर्तन लाने का एक सक्रिय साधन है।

स्थानीय मुद्दों पर जागरूकता

सामुदायिक रेडियो स्थानीय समस्याओं पर केंद्रित एक विश्वसनीय सूचना स्रोत के रूप में कार्य करता है।

1. **बुनियादी सूचना का प्रसार:** सामुदायिक रेडियो स्टेशन स्वास्थ्य, स्वच्छता, पोषण, और कृषि जैसे महत्वपूर्ण विषयों पर जानकारी को ऐसे तरीके से प्रसारित करते हैं जो स्थानीय लोगों के लिए समझने में आसान हो। उदाहरण के लिए, एक स्टेशन मौसमी बीमारियों की रोकथाम, सरकारी योजनाओं के लिए आवेदन करने की प्रक्रिया, या सुरक्षित पेयजल स्रोतों की जानकारी पर कार्यक्रम बना सकता है। यह विशेष रूप से उन समुदायों के लिए महत्वपूर्ण है जहाँ साक्षरता दर कम है या जहाँ मुख्यधारा के मीडिया की पहुँच कम है।
2. **प्राकृतिक आपदा और आपातकालीन संचार:** अपनी स्थानीय कवरेज और त्वरित पहुँच के कारण, सामुदायिक रेडियो प्राकृतिक आपदाओं जैसे बाढ़, तूफान या महामारी के दौरान एक जीवन-रक्षक भूमिका निभा सकता है। यह समुदाय को तत्काल चेतावनी, निकासी मार्ग और आश्रय स्थलों की जानकारी प्रदान करता है, जब बिजली और इंटरनेट जैसे संचार के अन्य साधन विफल हो सकते हैं।
3. **सामाजिक कुरीतियों पर विमर्श:** सामुदायिक रेडियो खुले मंच प्रदान करता है जहाँ लोग सामाजिक बुराइयों जैसे दहेज, बाल विवाह, लिंग आधारित भेदभाव या जातिगत असमानता पर खुलकर चर्चा कर सकते हैं। रेडियो जॉकी और समुदाय के नेता इन संवेदनशील विषयों पर संतुलित और प्रगतिशील दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं, जिससे रूढ़िवादी विचारों को चुनौती मिलती है और सामाजिक सुधार की दिशा में जागरूकता बढ़ती है।
4. **स्थानीय शासन में जवाबदेही:** सामुदायिक रेडियो स्थानीय सरकारी निकायों, जैसे ग्राम पंचायतों और नगरपालिका परिषदों, की गतिविधियों पर नज़र रखता है और उनके निर्णयों पर समुदाय की प्रतिक्रियाएँ प्रसारित करता है। यह एक द्विदिशीय संचार स्थापित करता है, जहाँ नागरिक अपने नेताओं से सवाल पूछ



सकते हैं, जिससे शासन में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित होती है।

सामुदायिक रेडियो की भूमिका: सामाजिक विकास का वाहक

सामुदायिक रेडियो सामाजिक और आर्थिक विकास के कई आयामों में एक उत्प्रेरक के रूप में कार्य करता है। यह समुदायों को अपनी समस्याओं का समाधान स्वयं खोजने के लिए उपकरण और ज्ञान प्रदान करता है।

सामाजिक विकास

1. **शिक्षा और कौशल विकास:** कई सामुदायिक रेडियो स्टेशन अनौपचारिक शिक्षा और कौशल विकास पर कार्यक्रम प्रसारित करते हैं। इसमें कृषि के सर्वोत्तम अभ्यास, पशुपालन, सिलाई-बुनाई जैसे व्यावसायिक प्रशिक्षण, या यहाँ तक कि स्कूली पाठ्यक्रम से संबंधित पूरक सामग्री शामिल हो सकती है। यह ज्ञान का प्रसार करता है और समुदाय के सदस्यों को अपने जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए नए कौशल सीखने में मदद करता है।
2. **स्वास्थ्य संवर्धन:** भारत के ग्रामीण और जनजातीय क्षेत्रों में, जहाँ स्वास्थ्य सेवाएँ दूर हैं, सामुदायिक रेडियो प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा और निवारक देखभाल पर जानकारी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। यह टीकाकरण अभियानों, मातृत्व स्वास्थ्य, एचआईवी/एड्स की रोकथाम और स्वच्छता आदतों पर जागरूकता फैलाता है। स्थानीय भाषा में डॉक्टर या स्वास्थ्य कार्यकर्ता से सीधा संवाद श्रोताओं के बीच विश्वास पैदा करता है और उन्हें सही निर्णय लेने के लिए प्रेरित करता है।
3. **महिला सशक्तिकरण:** सामुदायिक रेडियो महिला सशक्तिकरण का एक शक्तिशाली साधन है। यह महिलाओं को स्टेशन के संचालन, कार्यक्रम निर्माण और प्रस्तोता के रूप में सक्रिय भूमिकाएँ लेने के लिए प्रोत्साहित करता है। 'महिलाओं के लिए, महिलाओं द्वारा' बनाए गए कार्यक्रम लैंगिक हिंसा, संपत्ति के अधिकार और राजनीतिक भागीदारी जैसे मुद्दों पर चर्चा करते हैं, जिससे महिलाओं में आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास होता है।
4. **रोजगार और आर्थिक अवसर:** सामुदायिक रेडियो स्थानीय व्यवसायों, कारीगरों, और किसानों को अपने उत्पादों और सेवाओं का विज्ञापन करने के लिए एक किफायती मंच प्रदान करता है। यह स्थानीय बाजार की कीमतों, सरकारी

योजनाओं के तहत ऋण सुविधाओं, और रोजगार के अवसरों पर जानकारी प्रसारित करता है, जिससे समुदाय के सदस्यों को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने में मदद मिलती है। यह किसानों को अपनी उपज के लिए बेहतर मूल्य प्राप्त करने के लिए बाजार के रुझानों को समझने में भी सहायता करता है।

सांस्कृतिक संरक्षण एवं भाषाई संवर्धन

सामुदायिक रेडियो अपनी स्थानीय प्रकृति के कारण किसी भी समुदाय की अमूर्त सांस्कृतिक विरासत और भाषाई विविधता को संरक्षित करने में एक अत्यंत महत्वपूर्ण और सक्रिय भूमिका निभाता है।

सांस्कृतिक संरक्षण

1. **पारंपरिक कला और संगीत का मंचन:** वाणिज्यिक रेडियो अक्सर केवल मुख्यधारा के और लोकप्रिय संगीत पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिससे स्थानीय लोक संगीत, पारंपरिक कहानियाँ, और अनुष्ठानिक गीत हाशिए पर चले जाते हैं। सामुदायिक रेडियो इन पारंपरिक कला रूपों को प्रसारित करने के लिए एक समर्पित मंच प्रदान करता है। यह स्थानीय कलाकारों, कवियों और कथावाचकों को प्रोत्साहित करता है, जिससे उनकी कला जीवित रहती है और नई पीढ़ियों तक पहुँचती है।
2. **सांस्कृतिक पहचान का सुदृढ़ीकरण:** सामुदायिक रेडियो अपने कार्यक्रमों के माध्यम से समुदाय की साझा पहचान, मूल्यों और इतिहास का जश्न मनाता है। स्थानीय त्यौहारों, रीति-रिवाजों और ऐतिहासिक कथाओं पर केंद्रित विशेष प्रसारण सांस्कृतिक गौरव की भावना को मजबूत करते हैं। यह शहरीकरण और वैश्वीकरण के दबाव के कारण होने वाले सांस्कृतिक क्षरण को रोकने में मदद करता है।
3. **अंतर-पीढ़ीगत संवाद:** सामुदायिक रेडियो स्टेशन अक्सर बुजुर्गों को कहानियाँ सुनाने या पारंपरिक ज्ञान साझा करने के लिए आमंत्रित करते हैं, जिससे युवा और वृद्ध पीढ़ियों के बीच ज्ञान और मूल्यों का हस्तांतरण सुनिश्चित होता है। यह अंतर-पीढ़ीगत संवाद पारिवारिक और सामुदायिक संरचना को मजबूत करता है।



भाषाई संवर्धन

1. **स्थानीय बोलियों का पुनरुद्धार:** भारत जैसी बहुभाषी देश में, कई बोलियाँ और जनजातीय भाषाएँ विलुप्त होने के खतरे का सामना कर रही हैं। सामुदायिक रेडियो इन भाषाओं को प्रसारण का माध्यम बनाकर उनके अस्तित्व को सुनिश्चित करता है। बच्चों के लिए स्थानीय भाषा में कार्यक्रम बनाने से उन्हें अपनी मातृभाषा के प्रति जुड़ाव महसूस होता है और उसकी शब्दावली का विकास होता है।
2. **भाषा का मानकीकरण और दस्तावेज़ीकरण:** जब सामुदायिक रेडियो किसी स्थानीय बोली में नियमित रूप से कार्यक्रम प्रसारित करता है, तो यह उस बोली के उपयोग को बढ़ाता है और उसे मौखिक रूप से दस्तावेज़ित करता है। यह विद्वानों और भाषाविदों को भी इन बोलियों के अध्ययन और संरक्षण के लिए सामग्री प्रदान करता है। यह सुनिश्चित करता है कि भाषाएँ केवल घरों तक सीमित न रहें, बल्कि सार्वजनिक संचार का एक सक्रिय हिस्सा बनी रहें।
3. **शिक्षणात्मक सामग्री:** भाषाई संवर्धन में, सामुदायिक रेडियो साक्षरता कार्यक्रम, भाषा शिक्षण मॉड्यूल और उच्चारण सुधार अभ्यास को स्थानीय बोली के माध्यम से प्रसारित करता है, जिससे शिक्षा अधिक सुलभ और प्रभावी हो जाती है।

सामुदायिक रेडियो का महत्व आज के डिजिटल युग में भी कम नहीं हुआ है, बल्कि इसकी प्रासंगिकता और भी बढ़ गई है। जहाँ मुख्यधारा का मीडिया अक्सर सनसनीखेज खबरों और राजनीतिक ध्रुवीकरण पर केंद्रित रहता है, वहीं सामुदायिक रेडियो 'धीमी पत्रकारिता' और रचनात्मक विकास संचार का एक शांत, विश्वसनीय केंद्र बना हुआ है। इसकी गैर-व्यावसायिक प्रकृति इसे बाजार की ताकतों के प्रभाव से मुक्त रखती है, और इसकी भागीदारी आधारित संरचना इसे सच्चे अर्थों में लोकतांत्रिक बनाती है। भारत में, यह ग्रामीण और दूरस्थ क्षेत्रों के लिए एक जीवनरेखा है, जो सूचना के अंतर को पाटने, महिला सशक्तिकरण को बढ़ावा देने और स्थानीय सांस्कृतिक खजानों को संरक्षित करने का कार्य करता है। यह माध्यम संचार को एकतरफा सूचना प्रवाह के बजाय समुदाय-संचालित संवाद में बदलकर सशक्तिकरण का एक मॉडल प्रस्तुत करता है। सामुदायिक रेडियो भारत के लोकतंत्र, विकास और सांस्कृतिक विविधता की भावना को मजबूत करने में एक आवश्यक उपकरण बना हुआ है।

इकाई 5.3: फिल्म और डॉक्यूमेंट्री: पत्रकारिता में स्थान और उपयोग

5.3.1 फिल्म और डॉक्यूमेंट्री का परिचय

फिल्म और डॉक्यूमेंट्री (वृत्तचित्र), दोनों ही दृश्य-श्रव्य संचार माध्यम हैं, लेकिन उनका उद्देश्य, स्वरूप और यथार्थ से संबंध मौलिक रूप से भिन्न होता है। जहाँ एक ओर फिल्म, जिसे आमतौर पर कथात्मक या फीचर फिल्म के रूप में जाना जाता है, कल्पना, मनोरंजन और नाटकीयता पर आधारित होती है, वहीं डॉक्यूमेंट्री का मूल उद्देश्य यथार्थ का अन्वेषण, सूचना का प्रसार और सामाजिक विमर्श को प्रेरित करना होता है। इन दोनों माध्यमों ने आधुनिक समाज में न केवल मनोरंजन के साधन के रूप में, बल्कि इतिहास, संस्कृति और पत्रकारिता के सशक्त वाहक के रूप में अपनी अमिट छाप छोड़ी है। विशेष रूप से डॉक्यूमेंट्री, अपने खोजी और विश्लेषणात्मक स्वभाव के कारण, पत्रकारिता के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह न केवल तथ्यों और आँकड़ों को प्रस्तुत करती है, बल्कि यह दर्शकों को भावनात्मक और गहन तरीके से सामाजिक सच्चाइयों से जोड़ती है। यह आलेख इन दोनों माध्यमों की परिभाषा, उनके बीच के अंतर, पत्रकारिता में डॉक्यूमेंट्री की भूमिका और उनके जटिल निर्माण की प्रक्रिया का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करता है।

फिल्म और डॉक्यूमेंट्री: परिभाषा, प्रकार और स्वरूप

फिल्म और डॉक्यूमेंट्री दोनों ही चलती हुई छवियों और ध्वनि का उपयोग करते हैं, लेकिन उनकी परिभाषा और स्वरूप उनके उद्देश्य पर निर्भर करते हैं।

फिल्म (कथात्मक/फीचर फिल्म)

फिल्म या फीचर फिल्म वह दृश्य-श्रव्य रचना है जिसका प्राथमिक उद्देश्य कहानी कहना और मनोरंजन करना होता है। यह मुख्य रूप से कल्पना पर आधारित होती है, भले ही इसकी पृष्ठभूमि ऐतिहासिक या सामाजिक रूप से वास्तविक हो।

1. **परिभाषा और उद्देश्य:** फिल्म का उद्देश्य दर्शकों को एक काल्पनिक या पुनर्चित दुनिया में ले जाना, उन्हें भावनाओं से जोड़ना और एक निश्चित समय के



लिए मनोरंजन प्रदान करना होता है। इसका निर्माण व्यावसायिक लाभ या कलात्मक अभिव्यक्ति के लिए किया जाता है।

2. **स्वरूप और नाटकीयता:** कथात्मक फिल्मों में पटकथा, पात्रों का विकास, कथानक की संरचना, और नाटकीय संघर्ष अनिवार्य तत्व होते हैं। इसमें अभिनय का उपयोग किया जाता है और घटनाओं को अक्सर भव्यता और प्रभाव के लिए अतिरंजित किया जाता है।
3. **प्रकार:** फिल्मों के प्रकार बहुत विस्तृत हैं, जिनमें ड्रामा, कॉमेडी, थ्रिलर, साइंस फिक्शन, हॉरर, और ऐतिहासिक फिल्में शामिल हैं।

डॉक्यूमेंट्री (वृत्तचित्र)

डॉक्यूमेंट्री वह दृश्य-श्रव्य रचना है जिसका प्राथमिक उद्देश्य गैर-कल्पना सामग्री का उपयोग करके किसी वास्तविक विषय, घटना, व्यक्ति या सामाजिक मुद्दे का तथ्यात्मक अन्वेषण करना होता है।

1. **परिभाषा और उद्देश्य:** डॉक्यूमेंट्री का मूल उद्देश्य सूचना देना, शिक्षित करना, विश्लेषण करना और सामाजिक परिवर्तन को प्रेरित करना होता है। यह यथार्थ की खोज, प्रमाण जुटाने और विश्वसनीय स्रोतों के माध्यम से दर्शकों को सत्य से अवगत कराने के लिए प्रतिबद्ध होती है।
2. **स्वरूप और यथार्थ:** डॉक्यूमेंट्री में वास्तविक लोगों के साक्षात्कार, संग्रहीत फुटेज, लाइव घटनाओं की रिकॉर्डिंग, और तथ्यात्मक वॉयसओवर का उपयोग किया जाता है। यद्यपि इसमें संपादन और प्रस्तुति में कलात्मकता हो सकती है, लेकिन इसका मूल आधार हमेशा यथार्थ ही होता है।
3. **प्रकार:** डॉक्यूमेंट्री भी कई प्रकार की होती है, जिनमें एक्सपोजिटरी (Expository - वॉयसओवर आधारित), ऑब्जर्वेशनल (Observational - फ्लॉइ ऑन द वॉल), पार्टिसिपेटरी (Participatory - फिल्म निर्माता का शामिल होना), और रिफ्लेक्सिव (Reflexive - माध्यम पर ही विचार करना) शामिल हैं।

फिल्म और डॉक्यूमेंट्री में मौलिक अंतर

फिल्म और डॉक्यूमेंट्री के बीच के अंतर को समझना महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह दोनों माध्यमों के नैतिक और कार्यात्मक पहलुओं को परिभाषित करता है। यह अंतर मुख्य रूप से उनके यथार्थ के प्रति समर्पण और उद्देश्य की प्रकृति में निहित है।

यथार्थ बनाम कल्पना

1. **मूल आधार:** फिल्म का मूल आधार कल्पना है। इसमें अभिनेता एक पटकथा के अनुसार काम करते हैं, सेट और प्रॉप्स का उपयोग किया जाता है, और पूरी कहानी निर्देशक की रचनात्मक दृष्टि से नियंत्रित होती है। इसका लक्ष्य एक विश्वसनीय *काल्पनिक* दुनिया बनाना होता है। इसके विपरीत, डॉक्यूमेंट्री का मूल आधार यथार्थ और तथ्य है। फिल्म निर्माता किसी वास्तविक घटना को रिकॉर्ड करता है, वास्तविक लोगों के अनुभवों को प्रस्तुत करता है, और घटनाएँ स्वाभाविक रूप से घटित होती हैं (कम से कम ऑब्जर्वेशनल शैली में)।
2. **नैतिक जिम्मेदारी:** डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माता की दर्शक के प्रति एक **तथ्यात्मक और नैतिक जिम्मेदारी** होती है। उसे सामग्री की सत्यता और प्रामाणिकता सुनिश्चित करनी होती है। वह जानबूझकर तथ्यों को विकृत या गलत तरीके से प्रस्तुत नहीं कर सकता। फीचर फिल्म की ऐसी कोई तथ्यात्मक जिम्मेदारी नहीं होती; उसकी जिम्मेदारी कहानी को प्रभावी ढंग से कहने तक सीमित होती है।

उद्देश्य और व्यावसायिकता

1. **प्राथमिक उद्देश्य:** फीचर फिल्म का प्राथमिक उद्देश्य मनोरंजन और व्यावसायिक सफलता प्राप्त करना होता है। फिल्म की मार्केटिंग, डिस्ट्रीब्यूशन और कंटेंट की संरचना बड़े पैमाने पर दर्शकों को आकर्षित करने और बॉक्स ऑफिस पर सफलता प्राप्त करने पर केंद्रित होती है। डॉक्यूमेंट्री का प्राथमिक उद्देश्य जागरूकता, शिक्षा और सामाजिक विमर्श को बढ़ावा देना है। इसका मूल्य इसके द्वारा प्रदान की गई अंतर्दृष्टि और इसके द्वारा लाए गए सामाजिक प्रभाव में मापा जाता है।



2. **संरचनात्मक स्वतंत्रता:** डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माताओं के पास कथात्मक फिल्मों की तुलना में प्रारूप और संरचना के साथ अधिक स्वतंत्रता होती है। वे एक रेखीय या गैर-रेखीय दृष्टिकोण अपना सकते हैं और अपने विषय की प्रकृति के अनुसार रचनात्मक तरीके से सामग्री को व्यवस्थित कर सकते हैं, जबकि फीचर फिल्म आमतौर पर तीन-अधिनियम संरचना का पालन करती है।

विशेषता	फिल्म (कथात्मक/फीचर)	डॉक्यूमेंट्री (वृत्तचित्र)
आधार	कल्पना (Fiction) और नाटकीयता	यथार्थ (Reality) और तथ्य
उद्देश्य	मनोरंजन, कलात्मक अभिव्यक्ति, व्यावसायिक लाभ	सूचना, शिक्षा, जागरूकता, सामाजिक परिवर्तन
पात्र	अभिनेता, जो काल्पनिक भूमिका निभाते हैं	वास्तविक लोग, विशेषज्ञ, साक्षी
नैतिकता	रचनात्मक स्वतंत्रता, कहानी की विश्वसनीयता पर ध्यान	तथ्यात्मक सत्यता और प्रामाणिकता की जिम्मेदारी
वित्तीय मॉडल	बॉक्स ऑफिस, बड़े बजट, विज्ञापन राजस्व	अनुदान, सार्वजनिक धन, शिक्षा और प्रसार

5.3.2 पत्रकारिता में डॉक्यूमेंट्री का स्थान: सूचना प्रसार का माध्यम

डॉक्यूमेंट्री फिल्म पत्रकारिता और जनसंचार के क्षेत्र में एक शक्तिशाली और अपरिहार्य उपकरण है। अपनी दृश्य-श्रव्य प्रकृति के कारण, यह पारंपरिक प्रिंट या टेलीविज़न समाचारों की तुलना में सूचना का प्रसार अधिक गहराई, संदर्भ और भावनात्मक जुड़ाव के साथ करती है।

डॉक्यूमेंट्री बनाम पारंपरिक पत्रकारिता

1. **गहनता और संदर्भ:** पारंपरिक पत्रकारिता (जैसे दैनिक समाचार) समय और स्थान की बाधाओं से सीमित होती है, जिसके कारण वह अक्सर किसी घटना के 'क्या' और 'कब' तक सीमित रह जाती है। इसके विपरीत, डॉक्यूमेंट्री को किसी विषय पर गहराई से गोता लगाने के लिए अधिक समय मिलता है। यह किसी जटिल सामाजिक मुद्दे के 'क्यों' और 'कैसे' को खोजती है।

डॉक्यूमेंट्री किसी समस्या के ऐतिहासिक संदर्भ, विभिन्न हितधारकों के दृष्टिकोण और उसके दीर्घकालिक प्रभावों को कई साक्षात्कारों और प्रमाणों के माध्यम से एक साथ प्रस्तुत करके एक पूर्ण तस्वीर प्रदान करती है।

2. **अन्वेषणात्मक पत्रकारिता का वाहक:** एक्सपोज़िटरी और अन्वेषणात्मक डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माताओं ने कई महत्वपूर्ण सामाजिक, राजनीतिक और कॉर्पोरेट घोटालों को उजागर किया है। एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माता वर्षों तक एक ही विषय पर शोध कर सकता है, गोपनीय दस्तावेजों को एकत्र कर सकता है, और जोखिम भरे स्थानों पर जाकर साक्ष्य रिकॉर्ड कर सकता है। यह क्षमता डॉक्यूमेंट्री को सार्वजनिक जवाबदेही और न्याय के लिए एक आवश्यक हथियार बनाती है, जो अक्सर तात्कालिक समाचार रिपोर्टिंग के दायरे से बाहर होता है।
3. **भावनात्मक जुड़ाव और याद रखने योग्य सामग्री:** दृश्य-श्रव्य माध्यम होने के कारण, डॉक्यूमेंट्री दर्शकों को कहानी में शामिल वास्तविक लोगों के साथ भावनात्मक रूप से जोड़ती है। किसी पीड़ित व्यक्ति के चेहरे के भाव, किसी साक्षी की आवाज़ का उतार-चढ़ाव या किसी स्थान का यथार्थवादी चित्रण केवल शब्दों की तुलना में कहीं अधिक शक्तिशाली होता है। यह भावनात्मक जुड़ाव सुनिश्चित करता है कि सूचना दर्शकों के मन में लंबे समय तक बनी रहे और उन्हें उस मुद्दे पर कार्रवाई करने के लिए प्रेरित करे।
4. **सार्वजनिक विमर्श का निर्माण:** एक सफल डॉक्यूमेंट्री अक्सर किसी मुद्दे को राष्ट्रीय या अंतर्राष्ट्रीय विमर्श के केंद्र में ले आती है। जब कोई महत्वपूर्ण डॉक्यूमेंट्री सार्वजनिक रूप से प्रसारित होती है, तो यह मीडिया, नीति निर्माताओं और आम जनता के बीच चर्चा को प्रेरित करती है, जिससे कानून में बदलाव, सरकारी नीति में संशोधन, या सामाजिक आंदोलनों की शुरुआत हो सकती है। इस प्रकार, डॉक्यूमेंट्री केवल सूचना का प्रसार नहीं करती, बल्कि यह **ज्ञान-आधारित विमर्श** की नींव रखती है।

सामाजिक मुद्दों का चित्रण और जागरूकता निर्माण

डॉक्यूमेंट्री फिल्म की सबसे महत्वपूर्ण भूमिकाओं में से एक समाज के हाशिए पर पड़े और अनदेखे मुद्दों को मुख्यधारा में लाना है।



यह एक दर्पण का काम करती है, जो समाज को उसकी अपनी सच्चाइयों और विफलताओं को दिखाती है।

वंचितों की आवाज़

1. **मानवाधिकार और सामाजिक न्याय:** डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माताओं ने दुनिया भर में मानवाधिकारों के उल्लंघन, गरीबी, बाल श्रम, और जातीय संघर्ष जैसे मुद्दों को उजागर करने में अग्रणी भूमिका निभाई है। वे उन समुदायों की आवाज़ बनते हैं जिन्हें मुख्यधारा का मीडिया अक्सर अनदेखा कर देता है। डॉक्यूमेंट्री में, किसान, मजदूर, जनजातीय समूह और यौनकर्म अपनी कहानियाँ और अपने संघर्ष सीधे दर्शकों के सामने रखते हैं, जिससे एक मजबूत मानवीय अपील पैदा होती है।
2. **स्वास्थ्य और शिक्षा जागरूकता:** विकासशील देशों में, डॉक्यूमेंट्री का उपयोग सार्वजनिक स्वास्थ्य अभियानों और शैक्षिक पहलों के लिए एक प्रभावी उपकरण के रूप में किया जाता है। टीबी, एचआईवी/एड्स, मलेरिया, और कुपोषण जैसे विषयों पर डॉक्यूमेंट्री न केवल बीमारी के बारे में जानकारी देती है, बल्कि सामाजिक कलंक (Social Stigma) और अंधविश्वासों को भी दूर करती है, जिससे लोगों को सहायता प्राप्त करने के लिए प्रेरित किया जाता है।
3. **पर्यावरण और जलवायु परिवर्तन:** डॉक्यूमेंट्री ने पर्यावरण क्षरण और जलवायु परिवर्तन के तात्कालिक खतरे पर जागरूकता बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 'एन इनकनवीनिंगेंट ट्रुथ' जैसी फिल्मों ने जटिल वैज्ञानिक डेटा को एक सुलभ और प्रभावशाली कथा में बदलकर वैश्विक नीतिगत चर्चाओं को प्रभावित किया है। ये फिल्में दर्शकों को प्राकृतिक दुनिया और मानव गतिविधियों के बीच के महत्वपूर्ण संबंध को समझने में मदद करती हैं।
4. **प्रोत्साहन और आशावाद:** डॉक्यूमेंट्री हमेशा समस्याओं को ही नहीं दर्शाती। वे अक्सर आशा, लचीलापन, और सामाजिक नवाचार की कहानियाँ भी प्रस्तुत करती हैं। सफल सामुदायिक पहल, स्थानीय नायकों और सकारात्मक परिवर्तनों पर बनी डॉक्यूमेंट्री दर्शकों को प्रेरित करती है कि परिवर्तन संभव है और वे स्वयं इसका हिस्सा बन सकते हैं। यह माध्यम न केवल समस्या को पहचानता है, बल्कि समाधान की ओर भी इशारा करता है, जिससे यह सामाजिक परिवर्तन के लिए एक शक्तिशाली प्रेरक शक्ति बन जाता है।

5.3.3 निर्माण प्रक्रिया: प्री-प्रोडक्शन से पोस्ट-प्रोडक्शन तक

किसी भी डॉक्यूमेंट्री या फिल्म का निर्माण एक जटिल, बहु-चरणीय प्रक्रिया है जिसके लिए कठोर योजना, रचनात्मकता और तकनीकी विशेषज्ञता की आवश्यकता होती है। इस प्रक्रिया को तीन मुख्य चरणों में विभाजित किया जा सकता है: प्री-प्रोडक्शन, प्रोडक्शन (शूटिंग), और पोस्ट-प्रोडक्शन।

प्री-प्रोडक्शन: योजना और शोध का चरण

प्री-प्रोडक्शन फिल्म निर्माण की सबसे महत्वपूर्ण और नींव रखने वाली प्रक्रिया है। इसे निर्माण प्रक्रिया का आधार माना जाता है क्योंकि इस चरण में लिए गए निर्णयों का प्रभाव पूरी फिल्म, विशेष रूप से डॉक्यूमेंट्री, पर स्पष्ट रूप से पड़ता है। प्री-प्रोडक्शन केवल तकनीकी तैयारियों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसमें रचनात्मक दृष्टिकोण, योजना, शोध और संगठनात्मक प्रबंधन सभी शामिल होते हैं। डॉक्यूमेंट्री निर्माण के लिए यह चरण विशेष रूप से महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि वास्तविक तथ्यों और सामाजिक या ऐतिहासिक घटनाओं पर आधारित सामग्री के लिए गहन तैयारी आवश्यक होती है।

1. विषय का चयन और अवधारणा का विकास

प्री-प्रोडक्शन की शुरुआत फिल्म निर्माता द्वारा विषय (Theme) या विचार (Concept) का चयन करने से होती है। यह कदम बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि पूरे निर्माण की दिशा इसी से तय होती है। डॉक्यूमेंट्री फिल्मों में, विषय अक्सर किसी विशेष सामाजिक समस्या, ऐतिहासिक घटना, सांस्कृतिक परंपरा या किसी व्यक्ति के जीवन पर केंद्रित होता है। विषय चयन के दौरान फिल्म निर्माता यह तय करता है कि कहानी किस दृष्टिकोण से प्रस्तुत की जाएगी, और दर्शकों को कौन सा संदेश या जानकारी दी जाएगी। विषय का चयन करते समय फिल्म निर्माता को यह भी ध्यान रखना होता है कि विषय पर्याप्त गहराई और रुचि रखता हो, और दर्शकों के लिए अर्थपूर्ण तथा प्रासंगिक हो। इस चरण में कहानी की रूपरेखा, मुख्य उद्देश्य और संभावित दृष्टिकोण तय किए जाते हैं, जिससे पूरी डॉक्यूमेंट्री की नींव मजबूत बनती है।



2. गहन शोध

विषय चयन के बाद प्री-प्रोडक्शन का अगला महत्वपूर्ण चरण गहन शोध है। डॉक्यूमेंट्री निर्माण में तथ्यात्मक सटीकता अत्यंत आवश्यक होती है, इसलिए फिल्म निर्माता को विषय से संबंधित सभी उपलब्ध जानकारी इकट्ठा करनी होती है। इसमें संग्रहीत सामग्री, आधिकारिक रिपोर्ट, समाचार पत्रों और पत्रिकाओं का अध्ययन, और प्रासंगिक पृष्ठभूमि की कहानियों का संग्रह शामिल होता है। शोध का उद्देश्य केवल जानकारी प्राप्त करना नहीं, बल्कि यह समझना भी है कि विषय के विभिन्न पहलुओं को कैसे प्रस्तुत किया जा सकता है और कौन-कौन से प्रमुख पात्र या साक्ष्य कहानी में शामिल किए जा सकते हैं। गहन शोध से फिल्म निर्माता को यह भी स्पष्ट होता है कि कहानी की संरचना कैसी होगी, किन दृश्यों को प्राथमिकता दी जाएगी, और दर्शकों को संदेश किस रूप में प्रस्तुत किया जाएगा। शोध प्रक्रिया डॉक्यूमेंट्री की विश्वसनीयता और प्रभावशीलता सुनिश्चित करती है।

3. पटकथा या उपचार का विकास

शोध पूरा होने के बाद, अगला कदम पटकथा या उपचार का विकास है। फीचर फिल्म के लिए विस्तृत पटकथा लिखी जाती है, जबकि डॉक्यूमेंट्री के लिए उपचार तैयार किया जाता है। उपचार एक विस्तृत दस्तावेज़ होता है जिसमें डॉक्यूमेंट्री के उद्देश्य, शैली, संभावित दृश्यों, साक्षात्कारों की सूची और कथा संरचना शामिल होती है। यह दस्तावेज़ फिल्म निर्माता, कू और वित्तपोषकों के लिए मार्गदर्शन का कार्य करता है। उपचार में यह स्पष्ट किया जाता है कि प्रत्येक दृश्य का उद्देश्य क्या है, साक्षात्कार किस प्रकार आयोजित किए जाएंगे, और कहानी की लय या प्रवाह किस तरह का होगा। यह चरण फिल्म निर्माता को सृजनात्मक दिशा प्रदान करता है और शूटिंग की प्रक्रिया को व्यवस्थित और लक्षित बनाता है।

4. बजट और वित्तपोषण

प्री-प्रोडक्शन में बजट और वित्तपोषण एक अनिवार्य चरण है। डॉक्यूमेंट्री निर्माण में लागत का अनुमान लगाना आवश्यक होता है, जिसमें कैमरा, ध्वनि उपकरण, यात्रा, लोकेशन परमिट, कू भुगतान, संपादन और पोस्ट-प्रोडक्शन खर्च शामिल होते हैं।

बजट तय करने के बाद, फिल्म निर्माता अनुदान (Grants), प्रायोजक, या स्टूडियो वित्तपोषण के माध्यम से धन जुटाते हैं। वित्तपोषण सुनिश्चित होने से निर्माण प्रक्रिया में व्यवधान नहीं आता और सभी रचनात्मक और तकनीकी पहलुओं को योजना के अनुसार पूरा किया जा सकता है। बजट का यह चरण विशेष रूप से महत्वपूर्ण है क्योंकि सीमित संसाधनों में प्राथमिकताओं का निर्धारण और लागत-प्रभावशीलता सुनिश्चित करनी होती है।

5. क्रू और स्थान की पहचान

प्री-प्रोडक्शन का अंतिम लेकिन अत्यंत महत्वपूर्ण चरण है क्रू और स्थान की पहचान। निर्देशक, छायाकार, साउंड रिकॉर्डिस्ट, संपादक और अन्य तकनीकी टीम के सदस्यों का चयन इस चरण में किया जाता है। प्रत्येक सदस्य की भूमिका और जिम्मेदारी स्पष्ट रूप से तय की जाती है ताकि शूटिंग के दौरान कोई व्यवधान न हो। इसके साथ ही शूटिंग के स्थानों का निरीक्षण और आवश्यक परमिट प्राप्त करना भी इसी चरण का हिस्सा है। स्थान चयन के दौरान फिल्म निर्माता यह सुनिश्चित करता है कि लोकेशन कहानी के लिए उपयुक्त हो, शूटिंग के लिए तकनीकी सुविधाएँ उपलब्ध हों, और सुरक्षा व कानूनी आवश्यकताएँ पूरी हों। सामान्यतः, प्री-प्रोडक्शन फिल्म निर्माण की नींव रखने वाला चरण है। यह चरण डॉक्यूमेंट्री की सृजनात्मक दिशा, तथ्यात्मक विश्वसनीयता, संगठनात्मक तैयारी और वित्तीय स्थिरता सुनिश्चित करता है।

विषय चयन और अवधारणा का विकास कहानी की दिशा तय करता है, गहन शोध तथ्यात्मक सटीकता सुनिश्चित करता है, उपचार या पटकथा संरचना और शैली तय करती है, बजट और वित्तपोषण निर्माण की आर्थिक व्यवहार्यता सुनिश्चित करता है, और क्रू व स्थान की पहचान तकनीकी और उत्पादन संबंधी तैयारियों को पूर्ण करती है। प्री-प्रोडक्शन के बिना, शूटिंग और पोस्ट-प्रोडक्शन की प्रक्रिया अव्यवस्थित, असंगठित और समय-साध्य हो सकती है। इसलिए इसे डॉक्यूमेंट्री निर्माण में सबसे महत्वपूर्ण चरण माना जाता है। यह न केवल योजना और तैयारी का समय है, बल्कि कहानी को वास्तविकता और प्रभावशीलता देने का अवसर भी है।



प्रोडक्शन: शूटिंग का चरण

फिल्म निर्माण में प्रोडक्शन चरण वह समय होता है जब वास्तविक सामग्री को कैमरे में कैद किया जाता है। इसे फिल्म निर्माण की प्रक्रिया का सबसे सक्रिय और दृश्यात्मक हिस्सा माना जाता है। इस चरण में प्री-प्रोडक्शन में तैयार की गई योजना, शोध और पटकथा या उपचार का वास्तविक रूप में क्रियान्वयन किया जाता है। प्रोडक्शन चरण में फिल्म निर्माता और तकनीकी टीम मिलकर दृश्यों, साक्षात्कारों और अन्य महत्वपूर्ण सामग्री को रिकॉर्ड करते हैं, ताकि फिल्म का मुख्य भाव और उद्देश्य प्रभावशाली ढंग से दर्शकों तक पहुँच सके। विशेष रूप से डॉक्यूमेंट्री के लिए, यह चरण बहुत ही संवेदनशील और अप्रत्याशित हो सकता है क्योंकि इसमें वास्तविक जीवन की घटनाओं और पात्रों को पकड़ना आवश्यक होता है।

1. फिल्मांकन

फिल्मांकन प्रोडक्शन का मुख्य हिस्सा है। इसमें फिल्म निर्माता और क्यू, प्री-प्रोडक्शन में तैयार की गई पटकथा या उपचार का पालन करते हुए आवश्यक दृश्यों को रिकॉर्ड करते हैं। डॉक्यूमेंट्री में फिल्मांकन अक्सर पारंपरिक फिल्मों की तुलना में अधिक अनिश्चित और गतिशील होता है, क्योंकि वास्तविक समय की घटनाओं को पकड़ने के लिए शूटिंग के दौरान परिस्थितियों में बदलाव आ सकते हैं।

डॉक्यूमेंट्री में फिल्मांकन कई प्रकार से किया जा सकता है।

- **‘फ्लाई-ऑन-द-वॉल’** ऑब्जर्वेशनल रिकॉर्डिंग: इस तकनीक में फिल्म निर्माता घटना या प्रक्रिया को बिना हस्तक्षेप के कैमरे में कैद करता है। इसका उद्देश्य दर्शकों को यह अनुभव देना होता है कि वे सीधे घटनास्थल पर उपस्थित हैं। उदाहरण के लिए, किसी गाँव के पंचायत बैठक या कृषि प्रशिक्षण सत्र को इस शैली में रिकॉर्ड किया जा सकता है।
- **री-एनक्टमेंट्स:** कभी-कभी डॉक्यूमेंट्री में घटनाओं के दृश्य रिकॉर्ड करने के लिए उन्हें पुनः प्रस्तुत किया जाता है। यह विशेष रूप से उन घटनाओं के लिए उपयोगी होता है, जिनका लाइव रिकॉर्डिंग संभव नहीं है।

री-एनक्टमेंट्स वास्तविक घटनाओं की **सटीकता और दृश्यात्मकता** प्रदान करने का एक तरीका हैं।

- **स्थापित साक्षात्कार:** डॉक्यूमेंट्री में पात्रों और विशेषज्ञों के साथ पूर्व निर्धारित स्थान पर रिकॉर्ड किए जाने वाले दृश्य भी शामिल हो सकते हैं। इन साक्षात्कारों का उद्देश्य कहानी के महत्वपूर्ण पहलुओं और विशेषज्ञ दृष्टिकोण को दर्शकों तक पहुँचाना होता है। फिल्मांकन के दौरान कैमरा एंगल, लाइटिंग, ध्वनि रिकॉर्डिंग और तकनीकी विवरणों का विशेष ध्यान रखा जाता है। यह सुनिश्चित करता है कि रिकॉर्डेड सामग्री साफ, स्पष्ट और पेशेवर स्तर की हो।

2. साक्षात्कार

डॉक्यूमेंट्री का एक प्रमुख तत्व साक्षात्कार हैं। ये वास्तविक लोगों, विशेषज्ञों और गवाहों के विचारों, अनुभवों और दृष्टिकोणों को फिल्म में प्रस्तुत करने का माध्यम होते हैं। साक्षात्कारों को आमतौर पर दो प्रकार में रिकॉर्ड किया जाता है:

- **संरचित:** इस प्रकार के साक्षात्कार में प्रश्नों की सूची पहले से तय होती है और प्रतिभागी केवल उसी क्रम में जवाब देते हैं। यह विशेष रूप से उन मामलों में उपयोगी है जहाँ तथ्यों की सटीकता और विश्लेषणात्मक जानकारी आवश्यक होती है।
- **अर्ध-संरचित:** इसमें कुछ मुख्य प्रश्न तय होते हैं, लेकिन प्रतिभागी को अपनी बात व्यक्त करने की पूरी स्वतंत्रता होती है। यह शैली प्राकृतिक और वास्तविक भावनाओं को पकड़ने में मदद करती है और कहानी में मानव तत्व को जोड़ती है।

साक्षात्कार प्रोडक्शन का वह हिस्सा है जो डॉक्यूमेंट्री की विश्वसनीयता, सजीवता और भावनात्मक गहराई बढ़ाता है। विशेषज्ञों, स्थानीय लोगों और गवाहों के विचारों को शामिल करके फिल्म में वास्तविकता और तथ्यात्मक प्रमाण सुनिश्चित किया जाता है।

3. संग्रहीत फुटेज का संग्रह

कई बार, डॉक्यूमेंट्री में ऐतिहासिक संदर्भ और पृष्ठभूमि प्रस्तुत करने के लिए पुरानी सामग्री की आवश्यकता होती है। इसके लिए, फिल्म निर्माता संग्रहीत फुटेज, तस्वीरें,



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

वीडियो क्लिप और ऑडियो रिकॉर्डिंग इकट्ठा करते हैं। ये सामग्री अक्सर पुस्तकालयों, अभिलेखागार, समाचार पत्रों, टीवी चैनलों और अन्य स्रोतों से प्राप्त की जाती है।

संग्रहीत फुटेज का प्रयोग डॉक्यूमेंट्री में निम्नलिखित उद्देश्यों के लिए किया जाता है:

- विषय के ऐतिहासिक विकास को दिखाना।
- वर्तमान घटनाओं और पुराने घटनाओं के बीच तुलना करना।
- कहानी में विश्वसनीयता और संदर्भ जोड़ना।

संग्रहीत फुटेज का चयन और रिकॉर्डिंग प्रक्रिया बहुत सावधानी से की जाती है, क्योंकि इसका गुणवत्ता, प्रारूप और कानूनी अधिकार फिल्म की पूरी प्रस्तुति को प्रभावित कर सकते हैं।

प्रोडक्शन चरण में फिल्म निर्माता और कू मिलकर सभी दृश्य, साक्षात्कार और संग्रहित सामग्री को रिकॉर्ड करते हैं। फिल्मांकन, साक्षात्कार और संग्रहीत फुटेज का समन्वय एक संतुलित और प्रभावशाली डॉक्यूमेंट्री बनाने के लिए आवश्यक है। यह चरण फिल्म को वास्तविकता, गहराई और भावनात्मक ताकत प्रदान करता है। डॉक्यूमेंट्री के लिए प्रोडक्शन केवल शूटिंग नहीं, बल्कि कहानियों और पात्रों को जीवंत बनाना है। प्रत्येक दृश्य, प्रत्येक साक्षात्कार और प्रत्येक फुटेज का उद्देश्य दर्शकों को कहानी के वास्तविक अनुभव और भावनात्मक जुड़ाव से जोड़ना होता है। इस कारण से प्रोडक्शन चरण डॉक्यूमेंट्री निर्माण की सबसे सक्रिय, चुनौतीपूर्ण और महत्वपूर्ण प्रक्रिया माना जाता है।

पोस्ट-प्रोडक्शन: संपादन और परिष्करण

यह वह चरण है जहाँ कच्ची सामग्री को एक सुसंगत और प्रभावशाली अंतिम उत्पाद में बदला जाता है।

1. **संपादन:** संपादन सबसे रचनात्मक और समय लेने वाला चरण है। संपादक सभी फुटेज को छाँटता है, उन्हें तार्किक और भावनात्मक रूप से प्रभावशाली क्रम में व्यवस्थित करता है, और फिल्म की गति और लय निर्धारित करता है।

डॉक्यूमेंट्री में, संपादक अक्सर कहानी की वास्तविक संरचना को इसी चरण में अंतिम रूप देता है।

2. **ध्वनि डिजाइन:** इसमें संवादों की सफाई, पृष्ठभूमि संगीत जोड़ना, और ध्वनि प्रभाव शामिल हैं। अच्छी ध्वनि गुणवत्ता कहानी के प्रभाव को कई गुना बढ़ा देती है।
3. **रंग सुधार और ग्राफिक्स:** फुटेज के रंग को ठीक किया जाता है और दृश्य की गुणवत्ता को बढ़ाया जाता है। यदि आवश्यक हो, तो ग्राफिक्स, टाइटल्स और एनिमेशन जोड़े जाते हैं।
4. **प्रसारण के लिए वितरण:** अंतिम फिल्म या डॉक्यूमेंट्री को फेस्टिवल, थिएटर, टेलीविजन प्रसारण या डिजिटल स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म के माध्यम से दर्शकों तक पहुँचाया जाता है।

निर्माण के महत्वपूर्ण चरण: शोध, शूटिंग और संपादन (एडिटिंग)

प्री-प्रोडक्शन, प्रोडक्शन और पोस्ट-प्रोडक्शन के इन तीन मुख्य चरणों में, शोध, शूटिंग और संपादन (एडिटिंग) किसी भी फिल्म या डॉक्यूमेंट्री की सफलता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण, अपरिहार्य स्तंभ हैं।

1. शोध: विश्वसनीयता की नींव

शोध वह चरण है जो किसी डॉक्यूमेंट्री की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता को सुनिश्चित करता है।

1. **तथ्यात्मक सटीकता:** डॉक्यूमेंट्री का आधार सत्य होता है। शोधकर्ता और निर्देशक को यह सुनिश्चित करना होता है कि प्रस्तुत किए गए सभी आँकड़े, घटनाएँ और ऐतिहासिक संदर्भ 100% सटीक हों। त्रुटियों से न केवल फिल्म की साख को नुकसान पहुँचता है, बल्कि इससे कानूनी समस्याएँ भी हो सकती हैं।
2. **कहानी की गहराई:** शोध केवल तथ्यों को इकट्ठा करने तक सीमित नहीं है; यह कहानी के विभिन्न आयामों और जटिलताओं को उजागर करता है। सफल शोध से



ही ऐसे पात्रों, स्थानों और संग्रहीत फुटेज की पहचान होती है जो कहानी को शक्तिशाली और बहुआयामी बनाते हैं।

3. **संरचना का मार्गदर्शन:** डॉक्यूमेंट्री में पटकथा अक्सर शोध के दौरान विकसित होती है। शोध के निष्कर्ष ही यह निर्धारित करते हैं कि कहानी कहाँ से शुरू होगी, मुख्य संघर्ष क्या होगा, और इसका निष्कर्ष क्या हो सकता है। शोध कहानी को भावनात्मक रूप से आकर्षक बनाने के लिए आवश्यक नाटकीय चाप खोजने में भी मदद करता है।

2. शूटिंग: दृश्य प्रमाण का संग्रह

शूटिंग, या प्रिंसिपल फोटोग्राफी, वह चरण है जहाँ शोध और योजना को दृश्य और श्रव्य प्रमाण में परिवर्तित किया जाता है।

1. **यथार्थवादी चित्रण:** डॉक्यूमेंट्री के लिए, शूटिंग का उद्देश्य घटनाओं को यथासंभव स्वाभाविक रूप से कैप्चर करना होता है। ऑब्जर्वेशनल डॉक्यूमेंट्री में, क्यू को कैमरे की उपस्थिति को कम करना होता है ताकि पात्र अपनी सामान्य दिनचर्या में लगे रहें।
2. **साक्षात्कार की कला:** अच्छे साक्षात्कार रिकॉर्ड करना केवल सवाल पूछने से कहीं अधिक है। इसमें वक्ता के साथ विश्वास बनाना, सही प्रकाश और ध्वनि वातावरण बनाना, और वक्ता को भावनात्मक रूप से खुलने के लिए सहज महसूस कराना शामिल है। एक अच्छी तरह से आयोजित साक्षात्कार अक्सर डॉक्यूमेंट्री का मुख्य आधार बन जाता है।
3. **सिनेमैटोग्राफी और लाइटिंग:** शूटिंग में उच्च-गुणवत्ता वाली सिनेमैटोग्राफी और लाइटिंग का उपयोग किया जाता है ताकि विषय के मूड और संदेश को बढ़ाया जा सके। डॉक्यूमेंट्री में सौंदर्यशास्त्र सूचना को अधिक प्रभावी ढंग से संवाद करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

3. संपादन: कहानी का निर्माण

संपादन वह जादुई चरण है जहाँ फुटेज के हजारों घंटों को एक सुसंगत और प्रभावशाली कथा में ढाला जाता है। संपादन को अक्सर 'अंतिम लेखन' के रूप में जाना जाता है।

1. कथा का प्रवाह

फिल्म संपादन का सबसे महत्वपूर्ण पहलू कथा का प्रवाह है। एक संपादक फुटेज को इस तरह से जोड़ता है कि वह एक तार्किक और आकर्षक कहानी प्रस्तुत करे। यह केवल दृश्यों को एक क्रम में रखना नहीं है, बल्कि यह सुनिश्चित करना है कि दर्शक हर क्षण में कहानी के साथ जुड़ा महसूस करें। संपादक इस बात का ध्यान रखता है कि प्रत्येक दृश्य कहानी में अपनी भूमिका निभाए और कोई भी दृश्य बिना कारण के छोड़ न दिया जाए। कथा का प्रवाह सुनिश्चित करता है कि दर्शक जानकारी की अधिकता से अभिभूत न हों, और कहानी का आनंद लें। संपादन के दौरान, संपादक फुटेज की रफ्तार, दृश्य की लंबाई और संक्रमण का चयन करके कथा को सहज बनाता है।

कथा प्रवाह के निर्माण में संपादक विभिन्न तकनीकों का उपयोग करता है। उदाहरण स्वरूप, फ्लैशबैक का उपयोग करके कहानी में गहराई और परतें जोड़ी जा सकती हैं। इसके अलावा, क्रॉस-कटिंग तकनीक का प्रयोग करके एक ही समय में दो या अधिक घटनाओं को दर्शाया जा सकता है, जिससे कहानी में रोचकता और गहनता आती है। संपादन यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक दृश्य एक दूसरे से जुड़ा हुआ प्रतीत हो और कहानी में प्राकृतिक प्रगति बनी रहे। संपादक के लिए यह समझना आवश्यक है कि दर्शक का ध्यान कैसे बनाए रखा जाए। उदाहरण के लिए, यदि किसी दृश्य में लंबी बातचीत है, तो संपादक इसे छोटे हिस्सों में काट सकता है और महत्वपूर्ण प्रतिक्रियाओं पर ध्यान केंद्रित कर सकता है। इस तरह, कथा का प्रवाह न केवल तार्किक होता है बल्कि दर्शक की भावनाओं और जिज्ञासा को भी बनाए रखता है। संपादन के द्वारा कहानी को संतुलित करना और दृश्य की गति को नियंत्रित करना संपादक की जिम्मेदारी होती है।



2. भावनात्मक प्रभाव का नियंत्रण

फिल्म संपादन भावनात्मक प्रभाव को नियंत्रित करने में एक शक्तिशाली उपकरण है। एक ही फुटेज को अलग-अलग तरीके से संपादित करके संपादक दर्शक में विभिन्न भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ उत्पन्न कर सकता है। संपादक दृश्यों की अवधि, संगीत का चयन, और अनुक्रम के माध्यम से फिल्म के मूड और टोन को नियंत्रित करता है। उदाहरण के लिए, धीमी गति से कट किए गए दृश्यों के साथ उदास और मर्मस्पर्शी संगीत दर्शक में उदासी की भावना उत्पन्न कर सकता है, जबकि तेज कट और ऊर्जावान संगीत खुशी या रोमांच की भावना पैदा कर सकता है। संपादन में संगीत और ध्वनि प्रभावों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण होती है। साउंडट्रैक और बैकग्राउंड स्कोर भावनात्मक अनुभव को बढ़ाते हैं। संपादक दृश्य और संगीत के तालमेल को इस तरह से स्थापित करता है कि दर्शक दृश्य के भावनात्मक संदेश को आसानी से समझ सकें। इसके अलावा, संपादक क्लोज़-अप शॉट्स और रिएक्शन शॉट्स का उपयोग करके पात्रों की भावनाओं को प्रमुखता से प्रस्तुत कर सकता है। भावनात्मक प्रभाव का नियंत्रण केवल दृश्य और संगीत तक सीमित नहीं है। संपादक संवादों के कट और रिदम के माध्यम से भी भावनाओं को नियंत्रित करता है। कभी-कभी एक महत्वपूर्ण संवाद को लंबे शॉट में दिखाना या तेजी से कट करना दृश्य की भावनात्मक तीव्रता को बढ़ा सकता है। संपादन के माध्यम से फिल्म में उत्साह, तनाव, डर, या रोमांच जैसी भावनाओं को दर्शक तक प्रभावी रूप से पहुंचाया जा सकता है।

3. समय और स्थान का संक्षेपण

फिल्म संपादन का एक और महत्वपूर्ण उद्देश्य समय और स्थान का संक्षेपण है। वास्तविक जीवन की घटनाएँ अक्सर लंबी और असंगठित होती हैं, और उनका सीधे-सीधे फिल्म में प्रदर्शन दर्शकों के लिए बोझिल हो सकता है। संपादक अनावश्यक दृश्यों को हटाकर और महत्वपूर्ण घटनाओं पर ध्यान केंद्रित करके कहानी को संघनित करता है। इससे कहानी की गति बढ़ती है और दर्शक की रुचि बनी रहती है। संपादन समय और स्थान के संक्षेपण में विशेष तकनीकों का उपयोग करता है। उदाहरण स्वरूप, टाइम-लैप्स (Time-lapse) या फास्ट-मोशन तकनीक का उपयोग करके लंबे समय की घटनाओं को संक्षेप में दिखाया जा सकता है।

इसके अलावा, लोकेशन शिफ्टिंग के दौरान कटिंग तकनीक दर्शक को यह महसूस कराती है कि कहानी विभिन्न स्थानों पर बिना बाधा के आगे बढ़ रही है।

डॉक्यूमेंट्री फिल्म में संपादन का यह पहलू और भी महत्वपूर्ण हो जाता है। संपादक वॉयसओवर, साक्षात्कार और संग्रहित सामग्री को इस तरह से जोड़ता है कि वे एक सम्मोहक और प्रेरक तर्क (Argument) प्रस्तुत करें। उदाहरण के लिए, वैज्ञानिक डॉक्यूमेंट्री में शोध डेटा और इंटरव्यू क्लिप को इस तरह संपादित किया जाता है कि दर्शक न केवल जानकारी प्राप्त करें बल्कि विषय में गहन रुचि भी विकसित करें। संपादन दर्शक के अनुभव को संरचित और समेकित बनाता है, जिससे कहानी अधिक प्रभावशाली और यादगार हो जाती है।

4. दृश्य और रिदम का संतुलन

संपादक को यह सुनिश्चित करना होता है कि फिल्म में दृश्य और रिदम का संतुलन बना रहे। प्रत्येक दृश्य की लंबाई और कटिंग की गति कहानी की गति को प्रभावित करती है। तेज कटिंग एक्शन या तनावपूर्ण दृश्यों में दर्शक की उत्तेजना बढ़ाती है, जबकि धीमी कटिंग भावनात्मक या मर्मस्पर्शी दृश्यों में गहराई जोड़ती है। रिदम संतुलन कहानी के प्रवाह को सहज और आकर्षक बनाता है। संपादक रिदम संतुलन के लिए विभिन्न तकनीकों का उपयोग करता है। उदाहरण के लिए, जंप कट्स और मैच कट्स का चयन दृश्य के गति और प्रवाह को नियंत्रित करता है। संगीत की ताल और दृश्य की कटिंग के तालमेल से फिल्म का रिदम प्रभावित होता है। संपादन यह सुनिश्चित करता है कि प्रत्येक दृश्य का समय और गति कहानी के भावनात्मक और कथात्मक उद्देश्य के अनुसार हो।

5. दृष्टिकोण और दृष्टि

संपादक दर्शक के दृष्टिकोण को नियंत्रित करता है। दृश्य का कोण और शॉट का प्रकार दर्शक को पात्रों और घटनाओं के प्रति एक विशेष दृष्टि प्रदान करता है। क्लोज़-अप शॉट्स दर्शक को पात्र की भावनाओं के करीब लाते हैं, जबकि वाइड शॉट्स कहानी के भौगोलिक और सामाजिक संदर्भ को स्पष्ट करते हैं। संपादन के दौरान, फुटेज के चयन और क्रमबद्धता से दृष्टिकोण को मजबूती दी जाती है।



उदाहरण स्वरूप, यदि कहानी का उद्देश्य किसी पात्र के अनुभव को प्राथमिकता देना है, तो संपादक उस पात्र के दृष्टिकोण से दृश्यों को व्यवस्थित करता है। इससे दर्शक कहानी में उस पात्र के साथ अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं।

6. संक्रमण और दृश्य प्रभाव

संपादक विभिन्न संक्रमण तकनीकों और दृश्य प्रभावों का उपयोग करके फिल्म के प्रवाह और दृश्य अनुभव को समृद्ध बनाता है। संक्रमण केवल दृश्यों के बीच बदलाव नहीं है, बल्कि यह कहानी के मूड और टोन को भी प्रभावित करता है। फेड इन/आउट, डिऑल्व, वाइप जैसे पारंपरिक संक्रमण तकनीकों के अलावा डिजिटल प्रभावों का उपयोग भी किया जाता है। ये तकनीकें दर्शक को कहानी में अधिक सहजता से जोड़ती हैं और दृश्य अनुभव को अधिक आकर्षक बनाती हैं। दृश्य प्रभाव कहानी की थीम और शैली को मजबूत करते हैं।

7. संवाद और ध्वनि संपादन

संपादन का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू संवाद और ध्वनि का नियंत्रण है। संवाद का स्पष्ट और संतुलित होना आवश्यक है ताकि दर्शक कहानी को आसानी से समझ सकें। ध्वनि प्रभाव और बैकग्राउंड संगीत भावनात्मक और कथात्मक प्रभाव को बढ़ाते हैं। संपादक संवाद के टोन, आवाज़ की मात्रा, और ध्वनि की गुणवत्ता पर ध्यान देता है। आवश्यकतानुसार, संपादक पृष्ठभूमि शोर को हटाता है और महत्वपूर्ण संवाद को प्रमुखता देता है। ध्वनि संपादन दृश्य और कहानी के साथ तालमेल बनाए रखता है।

8. दर्शक अनुभव और प्रतिक्रिया

अंततः, फिल्म संपादन का उद्देश्य दर्शक अनुभव को बेहतर बनाना है। संपादक इस बात का मूल्यांकन करता है कि दर्शक कहानी को कैसे ग्रहण करेंगे और उनके भावनात्मक और मानसिक प्रतिक्रियाओं को कैसे प्रभावित किया जा सकता है। संपादन के माध्यम से दृश्य, संगीत, संवाद और गति का संयोजन इस प्रकार किया जाता है कि दर्शक पूरी फिल्म में आकर्षित और व्यस्त रहें। संपादक विभिन्न परीक्षण स्क्रीनिंग और प्रतिक्रिया विश्लेषण के माध्यम से यह सुनिश्चित करता है कि फिल्म का

संदेश प्रभावी रूप से संप्रेषित हो रहा है। दर्शक की प्रतिक्रिया के आधार पर संपादक आवश्यक बदलाव करता है ताकि फिल्म अधिक सम्मोहक और प्रभावशाली बने। यह प्रक्रिया कहानी के प्रवाह, भावनात्मक प्रभाव, और समय-संक्षेपण को संतुलित करते हुए अंतिम फिल्म को परिपूर्ण बनाती है।

फिल्म और डॉक्यूमेंट्री का समकालीन प्रभाव

फिल्म और डॉक्यूमेंट्री, अपनी भिन्न प्रकृति के बावजूद, समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। फिल्म दर्शकों को पलायनवाद और सामूहिक मनोरंजन प्रदान करती है, जो सामाजिक जीवन के लिए आवश्यक है, जबकि डॉक्यूमेंट्री आलोचनात्मक विचार और नागरिक सहभागिता को बढ़ावा देती है। डिजिटल क्रांति ने इन दोनों माध्यमों के निर्माण और वितरण को लोकतांत्रिक बना दिया है। कम लागत वाले उपकरण और ऑनलाइन स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्म के उदय ने फिल्म निर्माताओं और डॉक्यूमेंट्री फिल्म निर्माताओं को अपने काम को दुनिया भर के दर्शकों तक पहुँचाने में सक्षम बनाया है, जिससे सेंसरशिप और वितरण की पारंपरिक बाधाएँ कम हुई हैं। विशेष रूप से डॉक्यूमेंट्री, पत्रकारिता के सिद्धांतों का पालन करते हुए, आज भी सबसे जटिल वैश्विक और स्थानीय सच्चाइयों को उजागर करने वाला सबसे प्रभावी दृश्य माध्यम बनी हुई है। जैसे-जैसे मीडिया का परिदृश्य बदल रहा है, तथ्यात्मक और कलात्मक अभिव्यक्ति के इन रूपों का महत्व मनोरंजन और सूचना के क्षेत्र में अपरिहार्य बना रहेगा।



इकाई 5.4: नवीन तकनीक: डिजिटल मीडिया, इंटरनेट और मोबाइल पत्रकारिता का समावेश

5.4.1 डिजिटल मीडिया

डिजिटल मीडिया से तात्पर्य उस संपूर्ण संचार माध्यम से है जो बाइनरी कोड (0 और 1) के रूप में संरचित, संसाधित और प्रसारित होता है। यह पारंपरिक मीडिया (प्रिंट, रेडियो, टेलीविजन) से मौलिक रूप से भिन्न है क्योंकि यह सूचना, सामग्री और अनुभव को संख्यात्मक प्रारूप में बदल देता है। इस माध्यम का अर्थ केवल इतना ही नहीं है कि सामग्री को कंप्यूटर या स्मार्टफोन पर देखा जाता है, बल्कि यह इस बात पर केंद्रित है कि सामग्री का उत्पादन, वितरण और उपभोग किस प्रकार होता है। डिजिटल मीडिया का सबसे महत्वपूर्ण पहलू अभिसरण है, जहाँ विभिन्न मीडिया रूप पाठ्य सामग्री, ऑडियो, वीडियो और ग्राफिक्स एक ही प्लेटफॉर्म पर, जैसे कि इंटरनेट, पर मिलते हैं और परस्पर क्रिया करते हैं। इसका स्वरूप गतिशीलता, गैर-रैखिकता, और अत्यंत उच्च अंतःक्रियाशीलता से चिह्नित होता है।

जहाँ पारंपरिक मीडिया में संचार एकतरफ़ा होता था, वहीं डिजिटल मीडिया ने इसे द्विदिशीय बना दिया है, जिससे सामग्री उपभोक्ता अब सक्रिय भागीदार और निर्माता भी बन गए हैं। सूचना अब अनंत है और उसका प्रसार किसी भौतिक सीमा से बंधा नहीं है, जिससे सूचना का लोकतांत्रिकरण हुआ है। इसके स्वरूप में अति-पाठ्य और बहुमाध्यमीयता का समावेश है, जिसने किसी भी विषय की जटिलताओं को समझने और उपयोगकर्ता को अपनी रुचि के अनुसार जानकारी की गहराई में जाने की स्वतंत्रता दी है, जिसे गैर-रैखिक नेविगेशन कहा जाता है।

इसका अर्थ यह भी है कि सूचना और मनोरंजन के बीच की रेखाएँ धुंधली हो गई हैं, और हर प्रकार की सामग्री व्यक्तिगत प्राथमिकताओं और एल्गोरिथम सुझावों के आधार पर अत्यधिक व्यक्तिगत हो गई है। यह माध्यम तत्काल प्रतिक्रिया की अपेक्षा रखता है और इसी के कारण इसकी विषय-वस्तु निरंतर परिवर्तनशील और अद्यतन होती रहती है, जो कि इसकी मूलभूत विशेषता है।

डिजिटल मीडिया के प्रकार

डिजिटल मीडिया के प्रकार उसकी सामग्री के वितरण के प्लेटफॉर्म और प्रारूप के आधार पर वर्गीकृत किए जा सकते हैं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी विशिष्ट कार्यप्रणाली और प्रभावशीलता है। सबसे प्राथमिक प्रकार वेबसाइट आधारित डिजिटल मीडिया है, जिसमें ऑनलाइन न्यूज़ पोर्टल्स, ई-कॉमर्स साइट्स और व्यक्तिगत वेबसाइट्स शामिल हैं, जो स्थिर और गतिशील दोनों प्रकार की सामग्री की मेजबानी करते हैं और ब्राउज़र के माध्यम से एक्सेस किए जाते हैं। दूसरा महत्वपूर्ण प्रकार मोबाइल मीडिया है, जो स्मार्टफोन और टैबलेट के माध्यम से उपयोग किया जाता है और इसमें विशिष्ट रूप से मोबाइल एप्लिकेशन (Apps) का प्रभुत्व होता है; ये ऐप्स उपयोगकर्ताओं को तेज़, सुविधाजनक और अत्यधिक अनुकूलित अनुभव प्रदान करते हैं, जैसे कि सोशल मीडिया ऐप्स, मैसेजिंग ऐप्स या विशिष्ट न्यूज़ ऐप्स। तीसरा प्रमुख प्रकार सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म हैं, जिनमें फेसबुक, एक्स (ट्विटर), इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसी साइट्स शामिल हैं, जो मुख्य रूप से उपयोगकर्ता-जनित सामग्री (UGC) पर आधारित होते हैं और सूचना के त्वरित, वायरल प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे वे डिजिटल पत्रकारिता के लिए प्राथमिक स्रोत और वितरण केंद्र बन गए हैं। इसके अतिरिक्त, स्ट्रीमिंग मीडिया (जैसे ओटीटी प्लेटफॉर्म) और पॉडकास्ट जैसे ऑडियो-आधारित डिजिटल मीडिया भी हैं, जो वीडियो और ऑडियो सामग्री को मांग पर उपलब्ध कराते हैं और दर्शकों तथा श्रोताओं को एक समय-शिफ्टेड उपभोग की स्वतंत्रता देते हैं। इन सभी प्रकारों में, सामग्री का भंडारण और प्रोसेसिंग क्लाउड कंप्यूटिंग के माध्यम से होती है, जिससे डेटा की मात्रा असीमित रूप से बढ़ सकती है और इसे दुनिया के किसी भी कोने से एक्सेस किया जा सकता है। यह बहुआयामी वर्गीकरण दर्शाता है कि डिजिटल मीडिया एक एकल इकाई न होकर, विभिन्न तकनीकों, प्लेटफॉर्म और उपयोगकर्ता आदतों का एक जटिल नेटवर्क है, जो एक दूसरे को प्रभावित करते हुए विकसित हो रहा है।

5.4.2 इंटरनेट पत्रकारिता

इंटरनेट पत्रकारिता, जिसे साइबर पत्रकारिता या वेब पत्रकारिता भी कहा जाता है, सूचना, समाचार और विश्लेषण को इंटरनेट के माध्यम से प्रस्तुत करने की प्रक्रिया है।



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

यह पत्रकारिता का वह रूप है जो इंटरनेट की विशिष्ट विशेषताओं अति-पाठ्य, बहुमाध्यमीयता, और अंतःक्रियाशीलता का अधिकतम उपयोग करता है। इंटरनेट पत्रकारिता का अर्थ केवल अखबारों या चैनलों की सामग्री को ऑनलाइन प्रकाशित करना नहीं है, बल्कि यह मूल रूप से डिजिटल सामग्री का सृजन है जो टेक्स्ट, ग्राफिक्स, ऑडियो और वीडियो को एक सहज अनुभव में एकीकृत करता है। पारंपरिक पत्रकारिता में जहाँ सामग्री की सीमा पृष्ठ संख्या या प्रसारण समय द्वारा निर्धारित होती थी, वहीं इंटरनेट पत्रकारिता में यह सीमा लगभग समाप्त हो जाती है, जिससे पत्रकारों को किसी भी विषय की असीमित गहराई में जाने की अनुमति मिलती है। इसका सबसे बड़ा बदलाव इसकी गति है; समाचार को घटना के होते ही लगभग तुरंत प्रकाशित किया जा सकता है, जिससे समाचार चक्र निरंतर हो जाता है (24x7)। इसके अतिरिक्त, इंटरनेट पत्रकारिता पाठक को न केवल सामग्री को पढ़ने या देखने की अनुमति देती है, बल्कि उस पर टिप्पणी करने, उसे साझा करने और सीधे रिपोर्टर या संपादक से सवाल पूछने की भी सुविधा देती है, जो पत्रकारिता को एक संवादमूलक प्रक्रिया में बदल देता है। यह पारदर्शिता और जवाबदेही को बढ़ाता है, क्योंकि गलतियों को तुरंत सुधारा जा सकता है और पाठक की प्रतिक्रिया सीधे तौर पर दिखाई देती है। इसी कारण, पत्रकार की भूमिका गेटकीपर (जो तय करता है कि क्या प्रकाशित होगा) से बदलकर गेट-वॉचर (जो सूचना के विशाल प्रवाह की निगरानी और सत्यापन करता है) की हो गई है, जिससे सत्यापन और सटीकता एक बड़ी नैतिक चुनौती बन गई है।

ऑनलाइन न्यूज़ पोर्टल

ऑनलाइन न्यूज़ पोर्टल्स, इंटरनेट पत्रकारिता के केंद्र बिंदु हैं और ये पेशेवर समाचार संगठनों द्वारा संचालित डिजिटल मंच होते हैं। ये पोर्टल पारंपरिक मीडिया घरानों के डिजिटल विस्तार हो सकते हैं (जैसे कि किसी स्थापित समाचार पत्र का वेब संस्करण) या पूरी तरह से डिजिटल-मूल संस्थान हो सकते हैं जिनका अस्तित्व केवल इंटरनेट पर है। इन पोर्टल्स का मुख्य कार्य ब्रेकिंग न्यूज़, विस्तृत रिपोर्टिंग, विश्लेषण और राय को एक आकर्षक डिजिटल लेआउट में प्रस्तुत करना है, जो डेस्कटॉप और मोबाइल डिवाइस दोनों के लिए अनुकूलित हो। इन पोर्टल्स की एक महत्वपूर्ण विशेषता निरंतर अद्यतन है; ये अखबार की तरह सुबह तक का इंतजार नहीं करते, बल्कि हर सेकंड

जानकारी मिलते ही अपनी सामग्री को संशोधित और ताज़ा करते रहते हैं। ये पोर्टल बहुमाध्यमीयता का सर्वोत्तम उदाहरण प्रस्तुत करते हैं, जहाँ एक ही खबर में टेक्स्ट, एम्बेडेड वीडियो क्लिप, इंटरैक्टिव ग्राफिक्स, डेटा विज़ुअलाइज़ेशन और फोटो गैलरी शामिल हो सकती हैं। राजस्व के दृष्टिकोण से, ऑनलाइन न्यूज़ पोर्टल्स मुख्य रूप से विज्ञापन-आधारित मॉडल (प्रदर्शन विज्ञापन, नेटिव विज्ञापन) और सब्सक्रिप्शन-आधारित मॉडल (पेवॉल और प्रीमियम सामग्री) पर निर्भर करते हैं। इन्हें पारंपरिक पत्रकारिता के संपादकीय नियंत्रण और विश्वसनीयता का लाभ प्राप्त होता है, लेकिन इन्हें सोशल मीडिया की त्वरित गति और ब्लॉग की विशिष्ट गहराई के साथ भी प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है। इनकी सफलता उपयोगकर्ता अनुभव, पेज लोडिंग गति, और खोज इंजन अनुकूलन (SEO) पर निर्भर करती है, जिससे यह सुनिश्चित हो सके कि उनकी सामग्री आसानी से खोजी जा सके और पढ़ी जा सके।

ब्लॉग और वेब पत्रकारिता

ब्लॉग और वेब पत्रकारिता (स्वतंत्र प्रकाशन के संदर्भ में) ने पत्रकारिता के क्षेत्र में लोकतंत्रिकरण की एक लहर ला दी है। ब्लॉग, विशेष रूप से, एक ऐसी प्रणाली है जिसने किसी भी व्यक्ति को, बिना किसी बड़े प्रकाशन गृह के अनुमोदन के, एक वैश्विक मंच पर अपनी आवाज़ उठाने की अनुमति दी है। ब्लॉगिंग ने विशेषज्ञता-आधारित पत्रकारिता को बढ़ावा दिया है, जहाँ एक व्यक्ति किसी अत्यंत विशिष्ट विषय (जैसे तकनीकी विश्लेषण, विशिष्ट खेल, या एक क्षेत्रीय मुद्दा) पर अत्यधिक गहराई और विशेषज्ञता के साथ लिख सकता है, जिसे मुख्यधारा का मीडिया अक्सर नज़रअंदाज़ कर देता है। वेब पत्रकारिता, इस संदर्भ में, ब्लॉगिंग का एक अधिक औपचारिक और विस्तृत रूप हो सकती है, जिसमें व्यक्ति या छोटे समूह एक समर्पित वेबसाइट के माध्यम से रिपोर्टिंग, विश्लेषण और राय प्रस्तुत करते हैं। ब्लॉग्स की सामग्री की मुख्य पहचान उनकी व्यक्तिपरक आवाज़ और राय-आधारित सामग्री होती है, जो उन्हें ऑनलाइन न्यूज़ पोर्टल्स की वस्तुनिष्ठता से अलग करती है। हालाँकि, इस स्वतंत्रता के साथ ही जवाबदेही की कमी भी जुड़ी होती है; ब्लॉगर्स को अक्सर पेशेवर पत्रकारों के समान नैतिक कोड या संपादकीय निरीक्षण का पालन नहीं करना पड़ता है, जिससे तथ्यात्मक त्रुटियों और भ्रामक जानकारी का जोखिम बढ़ जाता है। फिर भी, ब्लॉग्स ने पारंपरिक मीडिया को चुनौती दी है और कई मौकों पर, नागरिक पत्रकारों और



ब्लॉगर्स ने ऐसी महत्वपूर्ण कहानियों को उजागर किया है जिन्हें स्थापित मीडिया ने छोड़ दिया था। संक्षेप में, ब्लॉग और वेब पत्रकारिता ने सूचना के प्रवाह को नीचे से ऊपर की ओर धकेल दिया है, जिससे मुख्यधारा के मीडिया को भी अपने एजेंडे और कवरेज में जनता की आवाज़ को अधिक महत्व देना पड़ा है।

सोशल मीडिया

सोशल मीडिया ने पत्रकारिता के वितरण, उपभोग और स्रोत के तरीके को पूरी तरह से बदल दिया है, यह वर्तमान डिजिटल मीडिया परिदृश्य का एक अपरिहार्य हिस्सा बन चुका है। फेसबुक, एक्स (ट्विटर), इंस्टाग्राम और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म अब केवल सामाजिक मेलजोल के साधन नहीं रहे, बल्कि ये तेज़ और तात्कालिक समाचार वितरण के प्राथमिक माध्यम बन गए हैं। पत्रकारिता के लिए सोशल मीडिया की भूमिका बहुआयामी है: पहला, यह ब्रेकिंग न्यूज़ के स्रोत के रूप में कार्य करता है, जहाँ नागरिक किसी घटना के बारे में सबसे पहले रिपोर्ट करते हैं (नागरिक पत्रकारिता का एक रूप); पत्रकार अब अक्सर किसी घटना के तथ्यों को सत्यापित करने के लिए सोशल मीडिया फ़ीड्स पर निर्भर रहते हैं। दूसरा, यह सामग्री वितरण का इंजन है, जहाँ न्यूज़ संगठन अपनी सामग्री को तत्काल लाखों उपयोगकर्ताओं तक पहुँचाते हैं और अपनी वेबसाइटों पर ट्रैफ़िक लाते हैं। तीसरा, यह दर्शक जुड़ाव और जनमत संग्रह का मंच है, जहाँ पत्रकार सीधे दर्शकों के साथ संवाद करते हैं, उनकी राय जानते हैं और उनकी टिप्पणियों के माध्यम से अपनी रिपोर्टिंग को बेहतर बनाते हैं। हालाँकि, सोशल मीडिया की सबसे बड़ी चुनौती इसकी झूठी और भ्रामक खबरों के प्रसार की क्षमता है। सूचना की उच्च गति और सत्यापन की कमी अक्सर अफवाहों और दुष्प्रचार को वायरल कर देती है, जिससे पत्रकारों पर तथ्य-जाँच का भारी दबाव पड़ता है। इसके अलावा, इको चैंबर्स (जहाँ उपयोगकर्ता केवल अपनी मान्यताओं की पुष्टि करने वाली सामग्री देखते हैं) का निर्माण भी हुआ है, जिसने पत्रकारिता के माध्यम से निष्पक्ष और संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करने के कार्य को और अधिक जटिल बना दिया है।

5.4.3 मोबाइल पत्रकारिता और नवीन तकनीक के प्रभाव

मोबाइल पत्रकारिता ने पत्रकारिता के उपकरणों और कार्यप्रणाली में क्रांति ला दी है। इसका मूल सिद्धांत यह है कि एक पत्रकार केवल एक स्मार्टफोन का उपयोग

करके जिसमें उच्च-गुणवत्ता वाले कैमरे, माइक्रोफ़ोन और संपादन क्षमताएं होती हैं पूरी न्यूज़ रिपोर्ट को शूट, एडिट और प्रसारित कर सकता है। इसने रिपोर्टिंग को अविश्वसनीय रूप से पोर्टेबल, लागत-प्रभावी और त्वरित बना दिया है। पत्रकार अब भारी-भरकम कैमरों या वैन पर निर्भर नहीं हैं, जिससे वे अप्रत्याशित या दूरदराज के स्थानों से भी तत्काल लाइव कवरेज दे सकते हैं। विभिन्न मोबाइल एप्लिकेशन (जैसे कि वीडियो एडिटिंग, लाइव स्ट्रीमिंग और एन्क्रिप्टेड मैसेजिंग ऐप्स) इस प्रक्रिया को और सशक्त बनाते हैं। नागरिक पत्रकारिता मोबाइल पत्रकारिता की एक उप-शाखा है, जहाँ सामान्य नागरिक अपने स्मार्टफोन का उपयोग करके घटनाओं को रिकॉर्ड करते हैं और उसे सोशल मीडिया या न्यूज़ आउटलेट्स को भेजते हैं, जिससे वे सामूहिक रूप से सूचना संग्रह में भागीदार बनते हैं।

नवीन तकनीक के प्रभाव: संभावनाएँ और चुनौतियाँ

मोबाइल और डिजिटल मीडिया के आगमन के बाद, नवीन तकनीकें पत्रकारिता के भविष्य को आकार दे रही हैं। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) का उपयोग अब डेटा माइनिंग, स्वचालित रिपोर्टिंग (जैसे स्टॉक मार्केट या स्पोर्ट्स स्कोर की स्वचालित रिपोर्ट), और दर्शकों की प्राथमिकताओं के आधार पर समाचारों को व्यक्तिगत बनाने के लिए किया जा रहा है। संवर्धित वास्तविकता (AR) और आभासी वास्तविकता (VR) पत्रकारिता को अभिनव कहानी कहने की दिशा में ले जा रही हैं, जहाँ दर्शक स्वयं को किसी कहानी या घटना के केंद्र में महसूस कर सकते हैं। उदाहरण के लिए, एक वीआर रिपोर्टिंग दर्शक को युद्धग्रस्त क्षेत्र या एक प्राकृतिक आपदा स्थल पर "उपस्थित" होने का अनुभव दे सकती है।

इन नवीन तकनीकों के साथ बड़ी संभावनाएँ जुड़ी हैं, जिनमें समाचार की सटीकता को बेहतर बनाने के लिए एआई-आधारित तथ्य-जाँच उपकरण, जटिल डेटा सेट को समझने के लिए इंटरैक्टिव विजुअलाइज़ेशन, और लाखों उपयोगकर्ताओं के लिए अत्यधिक वैयक्तिकृत समाचार फ़ीड का निर्माण शामिल है। हालाँकि, कई चुनौतियाँ भी हैं। इनमें सबसे प्रमुख है नैतिकता और एल्गोरिथम पूर्वाग्रह; यदि एआई को पक्षपाती डेटा पर प्रशिक्षित किया जाता है, तो यह पूर्वाग्रहों को अनजाने में रिपोर्टिंग में दोहरा सकता है। दूसरा, रोजगार और कौशल अंतराल की चुनौती है, जहाँ पारंपरिक



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

पत्रकारों को नई तकनीक और डेटा कौशल सीखने की आवश्यकता है। तीसरा, राजस्व मॉडल की अस्थिरता है, क्योंकि डिजिटल विज्ञापन बाज़ार पर बड़ी तकनीकी कंपनियों का प्रभुत्व है, और स्थानीय समाचार आउटलेट्स के लिए पर्याप्त आय अर्जित करना मुश्किल हो रहा है।

भविष्य की दिशाएँ

भविष्य में डिजिटल पत्रकारिता मुख्य रूप से हाइपर-पर्सनलाइज़ेशन और सत्यापन पर केंद्रित होगी। हम देखेंगे कि ब्लॉकचेन तकनीक का उपयोग सामग्री की उत्पत्ति और प्रामाणिकता को ट्रैक करने के लिए किया जाएगा, जिससे फेक न्यूज़ की समस्या का मुकाबला किया जा सके। डेटा पत्रकारिता और इंटरैक्टिव स्टोरीटेलिंग मुख्यधारा बन जाएंगे, जिससे जटिल कहानियों को आसानी से समझा जा सकेगा। माइक्रो-सब्सक्रिप्शन (छोटी, विशिष्ट सामग्री के लिए भुगतान) और सदस्यता-आधारित मॉडल विज्ञापन-आधारित मॉडल की जगह लेंगे, जिससे गुणवत्तापूर्ण पत्रकारिता को सीधे दर्शकों से समर्थन मिल सकेगा। पत्रकारिता का भविष्य स्पष्ट रूप से तकनीकी रूप से उन्नत, अत्यधिक वैयक्तिकृत और नैतिक रूप से जागरूक होगा, जहाँ मनुष्य और मशीन एक-दूसरे के पूरक के रूप में कार्य करेंगे।

5.5 स्व-मूल्यांकन प्रश्न

5.5.1 बहुविकल्पीय प्रश्न

1. FM का पूरा रूप क्या है?

- a) Fast Modulation
- b) Frequency Modulation
- c) Free Medium
- d) Formal Media

2. भारत में पहली बार एफ.एम. प्रसारण कब शुरू हुआ?

- a) 1977
- b) 1993
- c) 2000
- d) 2005

3. सामुदायिक रेडियो की मुख्य विशेषता है:

- a) व्यावसायिक लाभ
- b) स्थानीय समुदाय की भागीदारी
- c) राष्ट्रीय प्रसारण
- d) केवल मनोरंजन

4. डॉक्यूमेंट्री का मुख्य उद्देश्य है:

- a) मनोरंजन करना
- b) सत्य घटनाओं और मुद्दों का यथार्थ चित्रण
- c) काल्पनिक कहानी सुनाना
- d) विज्ञापन करना

5. डिजिटल मीडिया में शामिल है:

- a) केवल इंटरनेट
- b) केवल मोबाइल
- c) इंटरनेट, सोशल मीडिया, ऑनलाइन प्लेटफॉर्म
- d) केवल रेडियो



संचार एवं
इलेक्ट्रॉनिक
प्रौद्योगिकी

6. मोबाइल पत्रकारिता का प्रमुख साधन है:

- a) टाइपराइटर
- b) स्मार्टफोन
- c) पारंपरिक कैमरा
- d) टेलीफोन बूथ

7. नागरिक पत्रकारिता का अर्थ है:

- a) केवल पेशेवर पत्रकारों द्वारा समाचार
- b) सामान्य नागरिकों द्वारा समाचार और सूचना का प्रसार
- c) सरकारी पत्रकारिता
- d) व्यावसायिक पत्रकारिता

8. सोशल मीडिया का उदाहरण है:

- a) Facebook, Twitter, Instagram
- b) केवल समाचार पत्र
- c) केवल रेडियो
- d) केवल टेलीविजन

9. एफ.एम. रेडियो विशेष रूप से किस वर्ग में लोकप्रिय है?

- a) बुजुर्ग
- b) युवा और शहरी
- c) केवल ग्रामीण
- d) बच्चे

10. ऑनलाइन पत्रकारिता की विशेषता है:

- a) धीमी गति
- b) तात्कालिकता और इंटरएक्टिविटी
- c) सीमित पहुँच
- d) केवल प्रिंट

5.5.2 लघु उत्तरीय प्रश्न

1. एफ.एम. रेडियो और AM रेडियो में अंतर बताइए।
2. सामुदायिक रेडियो की विशेषताएँ और भूमिका बताइए।

3. डॉक्यूमेंट्री और फीचर फिल्म में क्या अंतर है?
4. डिजिटल मीडिया के प्रमुख रूप कौन-कौन से हैं?
5. मोबाइल पत्रकारिता के क्या लाभ हैं?

5.5.3 दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. एफ.एम. रेडियो के उद्भव, स्वरूप और महत्व का विस्तृत वर्णन कीजिए।
2. सामुदायिक रेडियो की अवधारणा, विशेषताओं और सामाजिक विकास में भूमिका की व्याख्या कीजिए।
3. फिल्म और डॉक्यूमेंट्री का पत्रकारिता में क्या स्थान है? उदाहरण सहित समझाइए।
4. डिजिटल मीडिया और इंटरनेट पत्रकारिता की विशेषताओं, संभावनाओं और चुनौतियों का विस्तार से वर्णन कीजिए।
5. नवीन तकनीक (डिजिटल मीडिया, इंटरनेट, मोबाइल पत्रकारिता) ने पत्रकारिता को कैसे प्रभावित किया है? विस्तृत चर्चा कीजिए।



संदर्भ

1. शर्मा, राजीव (2015). संचार प्रौद्योगिकी का परिचय. नई दिल्ली: विज्ञान प्रकाशन।
2. सिंह, अजय (2017). इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और संचार. वाराणसी: भारती पुस्तक मन्दिर।
3. वर्मा, संजय (2018). मॉडर्न इलेक्ट्रॉनिक्स और डिजिटल संचार. दिल्ली: राजकमल प्रकाशन।
4. पांडे, के. सी. (2016). संचार माध्यम और तकनीक. इलाहाबाद: विज्ञान भारती।
5. त्रिपाठी, रमेश (2019). इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी: सिद्धांत और अनुप्रयोग. लखनऊ: साहित्यानुशासन।
6. चौबे, हृदयेश (2014). टेली कम्युनिकेशन और नेटवर्क. रायपुर: तकनीकी प्रकाशन।
7. शर्मा, निशांत (2020). डिजिटल संचार और सूचना प्रौद्योगिकी. जयपुर: विज्ञान ग्रंथालय।
8. उपाध्याय, नरेश (2015). इलेक्ट्रॉनिक उपकरण एवं अनुप्रयोग. दिल्ली: विद्युत प्रकाशन।
9. बघेल, महेश (2017). संचार विज्ञान और तकनीक. रायपुर: छत्तीसगढ़ विज्ञान अकादमी।
10. छत्तीसगढ़ राजभाषा आयोग (2018). संचार एवं इलेक्ट्रॉनिक प्रणाली पर रिपोर्ट. रायपुर: शासन प्रकाशन।
11. गुप्ता, अमित (2016). मॉडर्न इलेक्ट्रॉनिक उपकरण. नई दिल्ली: विज्ञान और प्रौद्योगिकी प्रकाशन।
12. मिश्रा, अशोक (2019). संचार नेटवर्क और डिजिटल उपकरण. भोपाल: तकनीकी ज्ञानपीठ।
13. सिंह, सुरेश (2018). इलेक्ट्रॉनिक्स और टेली कम्युनिकेशन. वाराणसी: भारती भवन।
14. पांडे, राधेश्याम (2020). सूचना प्रौद्योगिकी और संचार माध्यम. दिल्ली: विज्ञान भारती।



15. टंडन, रमेश (2017). स्मार्ट नेटवर्क और डिजिटल संचार. जयपुर: नवभारत प्रकाशन।
16. वर्मा, हरीश (2016). इलेक्ट्रॉनिक सर्किट और डिजिटल तकनीक. रायपुर: विद्या निकेतन।
17. नेगी, सुनील (2018). इलेक्ट्रॉनिक उपकरण और आधुनिक संचार. नई दिल्ली: नेशनल पब्लिकेशन।
18. कुमार, शशि (2019). संचार प्रणाली और तकनीकी प्रगति. पटना: विज्ञान भवन।
19. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (IIT) Delhi (2020). Digital Communication Systems. नई दिल्ली: IIT प्रकाशन।
20. नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ इलेक्ट्रॉनिक्स (2021). Electronics & Telecommunication Overview. नई दिल्ली: NIELIT प्रकाशन।

10. सारांश (संचार और इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी)

संचार और इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी आधुनिक युग की सबसे प्रभावशाली शक्तियाँ हैं। संचार का अर्थ है — विचारों, सूचनाओं और भावनाओं का आदान-प्रदान। जब इस संचार में तकनीकी साधनों का प्रयोग किया जाता है, तो उसे इलेक्ट्रॉनिक संचार कहा जाता है। संचार वह प्रक्रिया है जिसके माध्यम से एक व्यक्ति या संस्था सूचना, विचार या संदेश दूसरे तक पहुँचाती है। उद्देश्य है — सूचना देना, शिक्षा देना, मनोरंजन करना और जनमत का निर्माण करना। व्यक्तिगत संचार में व्यक्ति से व्यक्ति के बीच संवाद — जैसे पत्र, टेलीफोन, ईमेल आदि के माध्यम से संभव होता है। जनसंचार के अंतर्गत एक से अनेक तक संदेश पहुँचाना — जैसे रेडियो, टीवी, समाचार पत्र, इंटरनेट। समूह संचार में व्यक्ति समूह के बीच संचार करता है।

इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी : इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी का अर्थ है — विद्युत संकेतों, यंत्रों और डिजिटल साधनों के माध्यम से सूचना का संचार और प्रसंस्करण। यह संचार के सभी आधुनिक माध्यमों की नींव है।

प्रमुख इलेक्ट्रॉनिक संचार माध्यम हैं :

- रेडियो – श्रव्य संचार का सबसे पुराना और प्रभावशाली माध्यम।
- टेलीविजन – दृश्य और श्रव्य दोनों माध्यमों का मिश्रण।
- कंप्यूटर और इंटरनेट – डिजिटल सूचना का तेज और वैश्विक माध्यम।
- मोबाइल फोन – व्यक्तिगत संचार का सबसे सशक्त उपकरण।
- सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म – फेसबुक, यूट्यूब, इंस्टाग्राम, एक्स (ट्विटर) आदि जनसंपर्क के आधुनिक साधन।

इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी के अनेक लाभ हैं, जैसे : सूचना का त्वरित और व्यापक प्रसार, वैश्विक जुड़ाव और ज्ञान-विनिमय, शिक्षा, व्यवसाय, स्वास्थ्य और पत्रकारिता में क्रांति तथा समय और दूरी की बाधाएँ समाप्त होना आदि। हालांकि वर्तमान में अनेक चुनौतियाँ भी हैं, जैसे - सूचना की विश्वसनीयता पर संदेह, फेक न्यूज और साइबर अपराधों की बढ़ती, गोपनीयता और डेटा सुरक्षा की समस्या, तकनीकी असमानता (डिजिटल डिवाइड) आदि। निष्कर्षतः संचार और इलेक्ट्रॉनिक प्रौद्योगिकी ने समाज को सूचना युग में प्रवेश कराया है। इनसे दुनिया एक वैश्विक गाँव (Global Village) बन गई है। जहाँ सूचना, ज्ञान और विचार एक क्लिक में उपलब्ध हैं। यदि इनका सकारात्मक और जिम्मेदार उपयोग किया जाए, तो यह मानव समाज की प्रगति का सबसे बड़ा साधन सिद्ध हो सकते हैं।

MATS UNIVERSITY

MATS CENTRE FOR DISTANCE AND ONLINE EDUCATION

UNIVERSITY CAMPUS: Aarang Kharora Highway, Aarang, Raipur, CG, 493 441

RAIPUR CAMPUS: MATS Tower, Pandri, Raipur, CG, 492 002

T : 0771 4078994, 95, 96, 98 Toll Free ODL MODE : 81520 79999, 81520 29999

Website: www.matsodl.com

